38 वाँ 38th
राष्ट्रीय National
फ़िल्म समारोह Film Festival
1991

सम्पादक
देबू मजूमदार

EDITOR
DEBU MAZUMDAR

समन्वय
अजीत गुप्ता, रामपाल सिंह, अविनाश वाचस्पति

Co-ordination
AJIT GUPTA, RAMPAL SINGH, AVINASH VACHASPATI

davp

फ़िल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित।
मुद्रक न्यूटैकफोटोलिथोग्राफर्स नई दिल्ली-110095

Designed & Produced for Directorate of Film Festivals by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of I&B, Govt. of India. Printed at Nu Tech Photolithographers, New Delhi-110 095

विषय सूची

CONTENTS

पृष्ठ संख्या

Page No

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	7	**DADA SAHEB PHALKE AWARD**
निर्णायक मण्डल	10	The Juries
कथाचित्र पुरस्कार	13	**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र	14	Best Feature Film
द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र	16	Second Best Feature Film
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इन्दिरा गांधी पुरस्कार	18	Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार	20	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र	22	Best Film on Other Social Issues
सर्वोत्तम निर्देशन	24	Best Director
सर्वोत्तम अभिनेता	26	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	28	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	30	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	32	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	34	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	36	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	38	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	40	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	42	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	44	Best Audiography
सर्वोत्तम सम्पादन	46	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	48	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेशभूषा	50	Best Costume Design
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	52	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	54	Best lyrics
निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार	56	Special Jury Award
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	58	Best Assamese Film
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	60	Best Bengali Film
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	62	Best Hindi Film
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	64	Best Kannada Film
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	66	Best Malayalam Film
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	68	Best Tamil Film
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र	70	Best Telegu Film
भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से इतर भाषाओं के सर्वोत्तम कथाचित्र	72	Best Film in languages Other Than Those Specified in Schedule VIII

विशेष उल्लेख	74	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए और प्रविष्ठियां, जो नहीं प्राप्त हुई	76	Awards Not Given & Entries Not Received
गैर-कथाचित्र पुरस्कार	**77**	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र	78	Best Non-Feature Film
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म	80	Best Anthropological/Ethnogaphic Film
सर्वोत्तम जीवनी फिल्म	82	Best Biographical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म	84	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित)	86	Best Scientific Film (including Enviornment & Ecology Film)
सर्वोत्तम कृषि फिल्म	88	Best Agricultural Film
सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म	90	Best Environment/Conservation/Preservation Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	92	Best Film On Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म	94	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम खोजी/साहसिक (खेल सहित) फिल्म	96	Best Exploration/Adventure Film (To Include Sports)
सर्वोत्तम खोजी फिल्म	98	Best Investigative Film
निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार	100	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म	102	Best Short Fiction Film
सर्वोत्तम छायांकन	104	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	106	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	108	Best Editing
विशेष उल्लेख	110	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	112	Awards Not Given
सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार	**113**	**AWARDS FOR THE BEST WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	114	Best Book On Cinema
सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक	116	Best Film Critic
कथासार: कथाचित्र	**119**	**SYNOPSES: FEATURE FILMS**
अग्निपथ (हिन्दी)	121	Agneepath (Hindi)
अमारम (मलयालम)	122	Amaram (Malayalam)
अंजलि (तमिल)	123	Anjali (Tamil)
आत्मजा (बंगला)	124	Atmaja (Bengali)
दृष्टि (हिन्दी)	125	Drishti (Hindi)
एक डॉक्टर की मौत (हिन्दी)	126	Ek Doctor Ki Maut (Hindi)

घायल (हिन्दी)	127	Ghayal (Hindi)
हिज़ हाईनेस अब्दुल्ला (मलयालम)	128	His Highness Abdullah (Malayalam)
इशानऊ (मणिपुरी)	129	Ishanou (Manipuri)
अय्यर दी ग्रेट (मलयालम)	130	Iyer the Great (Malayalam)
जूज (असमिया)	131	Jooj (Assamese)
कर्तव्यम (तेलुगु)	132	Karthavyam (Telugu)
लेकिन (हिन्दी)	133	Lekin (Hindi)
मरूपक्कम (तमिल)	134	Marupakkam (Tamil)
माटी मनुशुलु (तेलुगु)	135	Matti Manushulu (Telugu)
मुथिना हारा (कन्नड़)	136	Muthina Haara (Kannada)
ओरू वीडु इरु वासल (तमिल)	137	Oru Veedu Iru Vaasal (Tamil)
पेरूमथच्चन (मलयालम)	139	Perumthachan (Malayalam)*
वास्तु हारा (मलयालम)	140	Vasthuhara (Malayalam)
कथासार: ग़ैर-कथाचित्र	141	**SYNOPSES: NON FEATURE FILMS**
आधी हकीकत आधा फसाना	143	Aadhi Haqueeqat Adha Fasana
आमुख	144	Aamukh
बाबा	145	Baba
बायोटैक्नोलाजी: सम पोसीबिल्टीज	146	Bio Technology: some Possibilities
कैक्टस एंड रोजिस	147	Cactus & Roses
डक्स आउट ऑफ वाटर	148	Ducks out of Water
फिगर्स ऑफ थाट	149	Figures of Thought
गोल्डन अर्थ	149	Golden Earth
ग्रेवन इमेज	150	Graven Image
द इंडीजीनियस गेम्स ऑफ मणिपुर	151	The Indigenous Games of Manipur
लोलाब	152	Lolaab
मोहिनीयाट्टम	153	Mohiniyattam
मोहर	154	Mohor
नतुन आशा	155	Natun Asha
प्रतिक्रिया	156	Pratikriya
सेफ ड्रिंकिंग वाटर फॉर आल	157	Safe Drinking Water For All
संबंध	158	Sambandh
टैकनीक ऑफ सीड प्रॉडक्शन इन व्हीट एंड पैडी	159	Technique of Seed Production in Wheat and Paddy
उनां मित्रां दी याद प्यारी	160	Una Mitran Di Yaad Pyaari
उस्ताद अमजद अली खां	161	Ustad Amjad Ali Khan
वास्तु माराबु	162	Vaastu Marabu
व्हेअर नो ज़र्नीज एंड	163	Where No Journeys End

दादा साहेब Dada Saheb
फाल्के Phalke
पुरस्कार Award

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 1990

अक्कीनेनी नागेश्वर राव

स्वर्ण कमल, 1,00,000/- रुपये का नकद पुरस्कार और एक शाल।

अक्कीनेनी नागेश्वर राव अपने अभिनय जीवन के स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। उन्होंने फिल्म अभिनय का श्रीगणेश 1941 में किशोरावस्था में प्रसिद्ध फिल्म निर्माता पी. पुलैया की फिल्म **धर्मपत्नी** से उस समय किया जब तेलुगु सिनेमा अपना स्वरूप ग्रहण कर रहा था। बताया जाता है कि कुछ वर्ष बाद उनकी अभिनय प्रतिभा को प्रकाश में लाने का श्रेय एक अन्य यशस्वी फिल्मकार घंटशाला बाला रमैया को मिला, जिन्होंने नागेश्वर राव को विजयवाड़ा रेलवे स्टेशन पर देखा और उन्हें अपनी फिल्म **श्री सीता राम जननम** में राम की भूमिका के लिए चुना। उनकी अंतिम फिल्म **सीतारमियागड़ी मानवरूलु** को 1990 का आंध्र प्रदेश सरकार का नन्दी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

'ए.एन.आर.' के नाम से विख्यात नागेश्वर राव का जन्म 1924 में आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में वेंकटराघवपुरम में हुआ। बाल्यावस्था से ही नाटकों में उनकी रुचि थी और स्कूल में **सत्य हरिशचन्द्र** नाटक में उन्होंने चन्द्रमती की स्त्री की भूमिका की। उसके बाद वे दुक्कीपति मधुसूदन राव के एक्सेलसियर थियेटर से जुड़ गए। मधुसूदन राव ने आगे चलकर 'ए.एन.आर.' से मिलकर अन्नपूर्णा पिक्चर्स की स्थापना की। तब से वे निरंतर सफलता की सीढ़ियां चढ़ते गए हैं। महापुरुषों के जीवन का अभिनय करना उनकी विशेषता बन गई। उन्होंने **महाकवि कालिदास, भक्त जयदेव, अमर शिल्पी जक्कन्ना, विप्रनारायणा, भक्त तुकाराम, चक्रधारी, तेनाली रामकृष्ण** आदि फिल्मों में अपने अभिनय के जौहर दिखाए। इसके अलावा **देवदास, बातसारी, मूका मानासुलु, प्रेम नगर, प्रेमाभिषेकम, मेघ संदेशम** जैसी प्रणय कथाओं के रोमांटिक हीरो तथा पौराणिक फिल्मों **माया बाजार, चेंचु लक्ष्मी, कृष्णार्जुन युद्धम** के नायक के रूप में भी दर्शकों पर अपनी अभिनय कला की छाप छोड़ी।

नायक के रूप में अभिनय के अपने 50 वर्षों के जीवन में उन्होंने अनेक सामाजिक फिल्मों में भी काम किया है। इनमें प्रमुख हैं:—**संसारमु, आराधना, ब्रटकु तेरुवु, डोंगा रामुडु, डा. चक्रवर्ती, अर्धांगी, मंगलावाबलम, इल्लरिकम, शांति निवासम, दसारा बुल्लाडु भार्या भारतलु** तथा सुविख्यात फिल्म **नवरात्रि**। वे अब तक 300 से अधिक फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं और तेलुगु सिनेमा को वर्तमान गौरवपूर्ण स्थान दिलाने में उनका अद्वितीय योगदान रहा है। उन्होंने तेलुगु फिल्मों के निर्माण के लिए बुनियादी ढांचा खड़ा करने में भी योगदान दिया है, जिससे तेलुगु फिल्में मद्रास की बजाय हैदराबाद में बनने लगी हैं। फिल्म वितरण कम्पनी अन्नपूर्णा पिक्चर्स के साथ-साथ उन्होंने मैसर्स चक्रवर्ती चित्रा का भी गठन किया, जिससे **सुड्डीगुंडालु, मारो प्रपंचम्** जैसी उद्देश्यपूर्ण फिल्मों का निर्माण किया। उन्होंने अन्नपूर्णा स्टूडियो की भी स्थापना की, जहाँ अनेक हिन्दी एवं तेलुगु फिल्में तैयार हुई हैं। उन्हें 1968 में पद्मश्री तथा 1988 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

DADA SAHEB PHALKE AWARD 1990

AKKINENI NAGESWARA RAO

Swarna Kamal, a cash prize of Rs. 1,00,000 and a Shawl

Akkineni Nageswara Rao, now in his golden jubilee year as a film actor, had a taste of Cinema as a youngster in veteran P. Pulliah's **Dharmapatni** just when Telugu Talkie was coming of age. That was at the Shalini studios at Sholapur in 1941. He was said to have been rediscovered later by another veteran, Ghantasala Balaramaiah, who when set his eyes on him at Vijayawada railway station offered him the role of young Sri Rama in his **Sri Sita Rama Jananam.** He had the first taste of box office success in **Balaraju** and then **Keelugurram** (1944), the latest being **Seetharamiahgari Manavaralu,** winner of the A.P. government's Nandi award as the second Best film of 1990.

Born in 1924 in Venkata Raghavapuram (Krishna district) and popularly known as ANR, his love for dramatics surfaced while at school (took the female role of Chandramathi in Satya Harishchandra) and in later years got going with Excelsior Theatre of Dukkipati Madhusudhana Rao, a later day top producer, who finally launched Annapurna Pictures with ANR. Since then he has not looked back his forte being biographical portrayals: **Mahakavi Kalidas, Bhakta Jayadeva, Amarasilpi Jakkanna, Vipranarayana, Bhakta Tukaram, Chakradhari, Tenali Ramakrishna.** He has been excelling in romantic and tragic roles too like **Devadas, Baatasaari** (both Sarat Chatterjee's) **Mooga Manasulu, Prema Nagar, Premabhishekam, Megha Sandesam** as well as in mythologicals: **Maya Bazar, Chenchu Lakshmi, Krishnarujune Yudham.**

In a career spanning over five decades as the leading man ANR left his impress on innumerable social films: **Samsaram, Aradhana, Bratuku Teruvu, Donga Ramudu, Dr. Chakravarti, Ardhangi, Mangalvabalam, Illarikam, Shanti Nivasam, Dasara Bulladu, Bharya Bharatalu** plus the famous **Navaratri.** By now ANR has acted in over 300 films and in the process made Telugu cinema what it is today. Besides his prolific career as a screen artiste, ANR has also contributed substantially in developing the infrastructure of Telugu film industry thereby making it possible for Telugu films being made in Hyderabad instead of Madras. Besides founding the leading film distribution company Annapurna Pictures he has also been a producer of M/s Chakravarti Chitra which produced purposeful pictures like **Sudigundalu, Maro Prapancham** etc. He also established Annapurna Lithographic Arts Corp. A widely travelled man and recipient of Padmashri (1968), Padmabhushan (1988) and a former director of National Film Development Corp., ANR's artistic interest is matched by his flair for industrial development and philanthropic spirit.

कथाचित्र निर्णायक मण्डल

Jury for Feature Films

अशोक कुमार, अध्यक्ष
Ashok Kumar (Chairman)

ऊषा खन्ना
Usha Khanna

पी.वी. गंगाधरन
P.V. Gangadharan

हनी ईरानी
Honey Irani

जनार्दन राय
Janardhan Roy

राज बिसारिया
Raj Bisaria

सुब्बारामी रेड्डी
Subbarami Reddy

श्रीप्रिया
Sripriya

कोमल स्वामीनाथन्
Komal Swaminathan

जे.पी. दास
J.P. Das

रेखा सहाय
Rekha Sahay

जी.वी. अय्यर
G.V. Iyer

टी.एस. नरसिम्हन
T.S. Narasimhan

भूपेन हज़ारिका
Bhupen Hazarika

कल्पना लाज़मी
Kalpana Lajmi

प्रेमलता बाजपेयी
Premlata Bajpai.

शाजी एन. करुण
Shahji N. Karun

ग़ैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल

Jury for Non-Feature Films

एस. कृष्णास्वामी, अध्यक्ष
S. Krishnaswamy (Chairman)

मदन बावरिया
Madan Bawaria

प्रमोद माथुर
Pramod Mathur

वी. निर्मला
V. Nirmala

स्वप्न घोष
Swapan Ghose

सर्वोत्तम सिनेमा लेखन निर्णायक मण्डल

Jury for the Best Writing on Cinema

अमिता मलिक, अध्यक्ष
Amita Malik (Chairperson)

विनोद भारद्वाज
Vinod Bhardwaj

पुनाथिल कुन्हाब्दुल्ला
Punathil Kunhabudulla

कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

मरुपक्कम (तमिल)

निर्माता **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि.** और **दूरदर्शन** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **के.एस. सेतुमाधवन** को स्वर्ण कमल और 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार तमिल फिल्म **मरुपक्कम** को आधुनिक मूल्यों और मौजूदा परम्परागत मूल्यों के बीच सामंजस्य लाने तथा विषय को सौन्दर्य-शास्त्रीय श्रेष्ठता के उच्चतम स्तर के साथ प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM

MARUPAKKAM (Tamil)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Producers:. **M/s NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.** and **DOORDARSHAN**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Director: **K.S. SETHU MADHAVAN**

Citation

The Award for the Best Feature Film of 1990 is given to the Tamil film **MARUPAKKAM** for striking a balance between the existing traditional values and the modern values that are infused subsequently, and for treating the subject with the highest standards ot aesthetic excellence.

के.एस. सेतु माधवन मलयालम सिनेमा की बड़ी हस्तियों में से एक हैं। वे अपनी फिल्मों में मानव मूल्यों की तलाश करते रहे हैं। इस वर्ग की उनकी दो विख्यात फिल्में हैं: **आदिमकाल** और **ओप्पोल**। **ओप्पोल** फिल्म को 1981 में द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। सेतु माधवन प्रगतिशील विचारों के हैं और अब तक वे तमिल, कन्नड़ और सिंहली भाषाओं में 60 से अधिक फिल्में बना चुके हैं। 1970 से 1972 तक लगातार तीन वर्ष उन्हें केरल राज्य का सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार मिला और उनकी कुछ अन्य प्रसिद्ध फिल्में हैं: **कारा काना काडल, पणी तिरथा वीडू** और **अचानम रप्पायम**।

K.S. SETHU MADHAVAN, one of the stalwarts of Malayalam Cinema, has been consistently exploring human values in his films and two of the best known films in the genre include **Adimakal** and **Oppol,** the latter adjudged as the Second Best Feature film in 1981 National Film Awards. A prolific film maker and a man of progressive views, Sethu has made over 60 films including films in Tamil, Kannada and Sinhalese. Winner of Kerala State government's Best Director's award consecutively for three years (1970-1972) his other well known films include **Kera Kana Kadal, Pani Theeratha Veedu, Achanum Rappayum.**

द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

एक डॉक्टर की मौत (हिन्दी)

निर्माता **राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि.** को रजत कमल और 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **तपन सिन्हा** को रजत कमल और 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **एक डॉक्टर की मौत** को एक सामाजिक विषय को अत्यन्त सहज किन्तु भावपूर्ण शैली में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE SECOND BEST FEATURE FILM

EK DOCTOR KI MAUT (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: **M/s NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Director: **TAPAN SINHA**

Citation

The Award for the Second Best Feature Film of 1990 is given to the Hindi film **EK DOCTOR KI MAUT** for making a very relevant social comment, presented in a tremendously communicative yet emotional manner.

तपन सिन्हा ने अपना फिल्मी जीवन 1946 में कलकत्ता के न्यू थियेटर्स में ध्वनि आलेखक के रूप में शुरू किया। 1950 में उन्हें पाइनवुड स्टुडियो में आडियो-इंजीनियर की नौकरी मिल गयी। इससे पहले वे लन्दन में एक फिल्म समारोह में भाग लेने के लिए गये। उन्होंने अब तक 38 फिल्में बनाई हैं, जिनमें से कुछ का संगीत निर्देशन भी उन्होंने स्वयं किया। उनकी प्रमुख फिल्मों में **काबुलीवाला, लोहकपाट, आरोही, हाटे बाज़ारे, खुदीतपसन, सफेद हाथी, बंचारामेर बागान, आदमी और औरत** तथा **आज का रोबिनहुड** शामिल हैं।

TAPAN SINHA began his career as a sound-recordist at New Theatres, Calcutta, in 1946. He secured a job with Pinewood Studios as an audio-engineer in 1950, following his visit to London to attend a film festival. He scored music for some of his latter films and has to his credit 38 films, some of which include **Kabuliwala, Lauhakapat, Aarohi, Atithi, Hatey Bazarey, Khuditapasan, Safed Hati, Bancharamer Bagan, Aadmi aur Aurat, Aaj Ka Robinhood.**

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

पेरुम्थच्चन (मलयालम)

निर्माता जी. **जयकुमार** को स्वर्ण कमल और 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अजयन** को स्वर्ण कमल और 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार फिल्म **पेरुम्थच्चन** को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करने और अत्यन्त कलात्मक ढंग से सभी परम्परागत विश्वासों को तोड़ने के लिए दिया गया है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

PERUMTHACHAN (Malayalam)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.25,000/- to the Producer: **G. JAIKUMAR**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Director: **AJAYAN**

Citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director for the year 1990 is given to the Malayalam film **PERUMTHACHAN** for depicting a historical backdrop with authenticity, shattering all traditional beliefs with superlative artistic texture.

जी. जयकुमार मलयालम फिल्मों के निर्माण एवं वितरण से जुड़े हैं। वे राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म **पंचाग्नि, स्वातितिरुनल, तालवत्तम्** एवं **तीर्थम्** के कार्यकारी निर्माता तथा केरल फिल्म चैम्बर के सक्रिय सदस्य हैं। **पेरूमथच्चन** निर्माता के रूप में उनकी प्रथम फिल्म है।

25 वर्षीय **अजयन** ने केरल विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन भारतन, के.जी. जार्ज के सहायक के रूप में आरम्भ किया। वे कई पुरस्कार प्राप्त फिल्मों से सम्बद्ध रहे। इनमें **कट्टाथेकीलीकुडे, ओरीडाथोरु फायलवन, रात्रिनिवेदन, मरमरम** आदि शामिल हैं। उन्होंने मद्रास के फिल्म संस्थान से निर्देशन और पटकथा लेखन में डिप्लोमा प्राप्त किया। **पेरूमुथच्चन** निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म है।

G. JAIKUMAR: a leading young producer and distributor of many Malayalam films and also one of the executive producers of award winning films **Panchagni, Swathi Thirunal, Thalavattom** and **Theartham** etc; active member of Kerala film Chamber; **Perumthachan** is his maiden venture as a producer.

AJAYAN: a graduate from Kerala university, started his career as assistant director to Bharathan, K.J. George and was associated with many award winning films like **Kattathekilikkude, Oridathoru Fayalvan, Rathinirvedan, Marmaram.** etc. A diploma holder of Film Institute, Madras (Adyar) in Direction and Script-writing; **Perum thachan** is his maiden venture as a director.

लोकप्रिय एवम् स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार

घायल (हिन्दी)

निर्माता **धर्मेन्द्र** को स्वर्ण कमल और 40,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राजकुमार सन्तोषी** को स्वर्ण कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवम् स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **घायल** को दिया गया है क्योंकि यह विषय की दृष्टि से अत्यन्त विश्वसनीय, भाव की दृष्टि से अति सुसंगठित, प्रस्तुति की दृष्टि से तर्कपूर्ण और तकनीकी दृष्टि से श्रेष्ठ फिल्म है।

AWARD FOR THE BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

GHAYAL (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to the Producer: **DHARMENDRA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director: **RAJ KUMAR SANTOSHI**

Citation

The Award for the Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment for 1990 is given to the Hindi film **GHAYAL** for being thematically highly credible, emotionally very well-woven, logically executed, and technically superb film.

धर्मेन्द्र पिछले 30 वर्षों से फिल्म अभिनय के क्षेत्र में जमे हुए हैं। वे 1958 में फिल्मफेयर-यूनाइटिड प्रोड्यूसर्स टेलेन्ट कन्टेस्ट में विजयी होने के बाद फिल्मों में आये। उन्होंने सबसे पहले 1960 में अर्जुन हिंगोरानी की फिल्म **दिल भी तेरा हम भी तेरे** और बाद में **शोला और शबनम** फिल्म में काम किया। अब तक वे 300 से अधिक फिल्मों में काम कर चुके हैं, जिनमें **शोले** तथा **फूल और पत्थर** फिल्में अत्यन्त लोकप्रिय रही हैं। ऋषिकेश मुखर्जी की **अनुपमा** और **सत्यकाम,** बिमलराय की **बन्दिनी** असित सेन की **ममता,** मोहन सहगल की **देवर,** प्रमोद चक्रवर्ती की **नया ज़माना** जैसी फिल्मों में उनके भावपूर्ण अभिनय की काफी सराहना हुई। **चुपके-चुपके** और **प्रतिज्ञा** में उन्होंने सफल हास्य भूमिकायें कीं। उनकी अन्य प्रसिद्ध फिल्में हैं **अनपढ़, मेरा गांव मेरा देश, काजल, राजा जानी, यादों की बारात, समाधि, धर्मवीर, पत्थर और पायल, कहानी किस्मत की, आई मिलन की बेला, जुगनू, आज़ाद, अली बाबा और चालीस चोर, राम बलराम, क्रोधी, कातिलों के कातिल, प्रोफेसर प्यारे लाल** आदि।

राजकुमार सन्तोषी प्रसिद्ध लेखक और फिल्म निर्माता पी.एल. संतोषी के पुत्र हैं। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन फिल्म **चक्र** में रवीन्द्र धर्मराज के विशेष सहायक निर्देशक के रूप में शुरू किया। बाद में उन्होंने **विजेयता, अर्धसत्य, पार्टी, आघात** फिल्मों और वृत्तचित्र **आपरेशन फ्लड** में गोविन्द निहलाणी के मुख्य सहायक के रूप में काम किया। **घायल** उनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म है। इस फिल्म की पटकथा उन्होंने स्वयं लिखी है। इस समय वे धर्मेन्द्र और विनय सिन्हा द्वारा बनाई जा रही दो फिल्मों का निर्देशन कर रहे हैं।

DHARMENDRA, has proved himself to be the most durable leading man ever since he won the Filmfare-United Producers Talent contest in 1958. He has been in movie business for over 30 years since he first appeared in Arjun Hingorani's **Dil Bhi Tera Hum Bhi Tere** in 1960 and then **Shola Aur Shabnam.** By now he has appeared in over 300 films the greatest blockbuster being **Sholay** with mass adultation coming in **Phool Aur Paththar** and class appreciation for roles in Hrishikesh Mukherjee's **Anupama** and **Satyakam**, Bimal Roy's **Bandini**, Asit Sen's **Mamta,** Mohan Sehgal's **Devar,** Pramod Chakraborty's **Naya Zamana** as well as for comic roles in **Chupke Chupke** and **Pratigyya.** Some of his films include **Anpadh, Mera Gaon Mera Desh, Kajal, Raja Jani, Yadon ki Baraat, Samadhi, Dharam Veer, Pathar Aur Payal, Kahani kismat Ki, Ayee Milan ke Bela, Jugnu, Azaad, Alibaba Aur 40 Chor, Ram Balram, Krodhi, Katilon ke Katil, Professor Pyarelal** etc.

RAJ KUMAR SANTOSHI, son of late writer- film maker P.L. Santoshi, started as a special assistant director to Rabindra Dharmaraj in **Chakra** and later as a chief assistant to Govind Nihalani for **Vijayata, Ardh Satya, Party, Aaghat** and documentary **Operation Flood** and also with Zafar Hai in various Documentaries. **Ghayal** is his maiden venture for which he has written the script besides directing it. His current assignments include a feature film for producer Dharmendra with Sunny Deol and a feature film for producer Vinay Sinha with Amir Khan and Salman Khan besides his own production with Madhuri Dixit.

अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार

ओरू वीडु इरु वासल (तमिल)

निर्माता **मैसर्स कविताल्या प्रॉडक्शंस प्रा. लिमिटेड** को रजत कमल और 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **के. बालचन्दर** को रजत कमल और 15000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार तमिल फिल्म **ओरू वीडु इरु वासल** को महिलाओं की समस्याओं को चित्रित करने और संवेदनपूर्ण ढंग से महिलाओं की मुक्ति का रास्ता दिखाने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON OTHER ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE ETC.

ORU VEEDU IRU VAASAL (Tamil)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer: M/s **KAVITHALAYAA PRODUCTIONS PVT. LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Director: **K. BALACHANDER**

Citation

The Award for the Best Film on Other Social Issues such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-Dowry, Drug Abuse etc. for 1990 is given to the Tamil film **ORU VEEDU IRU VAASAL** for focussing on women's problems and very sensitively showing the path by which women can be emancipated.

के. बालचन्दर आधुनिक तमिल सिनेमा के संस्थापकों में से एक है। उन्होंने अपनी फिल्मों में कलात्मक और व्यापारिक दोनों पक्षों के बीच संतुलन बनाये रखने का प्रयास किया है। मुख्यधारा सिनेमा के साथ जुड़े रह कर उन्होंने कई सफल फिल्मों का निर्देशन किया है। तेलुगु, कन्नड़ और हिन्दी जैसी भाषाओं में भी उन्होंने सफल फिल्में बनाई हैं, जिन्हें वे बोल नहीं सकते। उन्होंने अब तक 75 से अधिक फिल्मों का निर्देशन किया है और उनकी अनेक फिल्मों को राज्य तथा राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुये हैं। उनकी कुछ प्रमुख फिल्में हैं: **इरु कोडुगल, अपूर्व रागंगल, मारो चरित्र, तन्नीर तन्नीर, एक दूजे के लिए, अग्नि साक्षी, सिन्धु भैरवी, रुद्र वीणा** आदि। इन्हें पद्मश्री और तमिलनाडु सरकार के कलाममानी पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

K. BALACHANDER, one of the architects of modern Tamil cinema, his forte has been to strike a balance between art and commerce while working within the mainstream cinema format and his ability to communicate is well reflected even in languages which he cannot speak like Telugu, Kannada or Hindi. A prolific film maker he has made over 75 films a large number of which won state and national recognition some of which include **Apoorva Raagangal, Maro Charitra, Varumaiyin Niram Siqappu, Thanner Thanneer, Ek Duje Ke Liye, Agni Saatchi, Achamillai Achamillai, Sindhu Bhairavi, Rudra Veena, Pudhu Arthangal** etc. He is a recipient of Padmashri and Kalaimamani Award of Tamil Nadu government.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

तपन सिन्हा

निर्देशक **तपन सिन्हा** को स्वर्ण कमल और 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1990 का पुरस्कार **तपन सिन्हा** को हिन्दी फिल्म **एक डॉक्टर की मौत** के निर्देशन के लिए दिया गया है, जिसमें उन्होंने एक सम-सामयिक समस्या को साहस, कुशलता तथा श्रेष्ठता के साथ चित्रित किया है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

TAPAN SINHA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director: **TAPAN SINHA**

Citation

The Award for the Best Direction of 1990 is given to **TAPAN SINHA** for his work in the Hindi film **EK DOCTOR KI MAUT** for having presented a contemporary problem with courage, subtlety and finesse.

तपन सिन्हा ने अपना फिल्मी जीवन 1946 में कलकत्ता के न्यू थियेटर्स में ध्वनि आलेखक के रूप में शुरू किया। 1950 में उन्हें पाइनवुड स्टुडियो में आडियो-इंजीनियर की नौकरी मिल गयी। इससे पहले वे लन्दन में एक फिल्म समारोह में भाग लेने के लिए गये। उन्होंने अब तक 38 फिल्में बनाई हैं, जिनमें से कुछ का संगीत निर्देशन भी उन्होंने स्वयं किया। उनकी प्रमुख फिल्मों में **काबुलीवाला, लोहकपाट, आरोही, हाटे बाज़ारे, खुदीतपसन, सफेद हाथी, बंचारामेर बागान, आदमी और औरत** तथा **आज का रोबिनहुड** शामिल है।

TAPAN SINHA began his career as a sound-recordist at New Theatres, Calcutta, in 1946. He secured a job with Pinewood Studios as an audio-engineer in 1950, following his visit to London to attend a film festival. He scored music for some of his latter films and has to his credit 38 films, some of which include **Kabuliwala, Lauhakapat, Aarohi, Atithi, Hatey Bazarey, Khuditapasan, Safed Hati, Bancharamer Bagan, Aadmi aur Aurat, Aaj Ka Robinhood.**

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

अमिताभ बच्चन

अभिनेता **अमिताभ बच्चन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1990 का पुरस्कार **अमिताभ बच्चन** को हिन्दी फिल्म **अग्निपथ** में सभी स्तरों पर पटकथा की अपेक्षाओं से ऊपर उठ कर उच्च कोटि का अभिनय करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTOR

AMITABH BACHCHAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actor: **AMITABH BACHCHAN**

Citation

The Award for the Best Actor of 1990 is given to **AMITABH BACHCHAN** for his work in the Hindi film **AGNEEPATH** for a towering performance, rising above the script with variation and nuances at all levels.

अमिताभ बच्चन अभिनय के क्षेत्र में भारतीय सिनेमा के सर्वाधिक लोकप्रिय कलाकार माने जाते हैं। उनका जन्म 1942 में हुआ और उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने सबसे पहले स्वर्गीय के.ए. अब्बास की फिल्म **सात हिन्दुस्तानी** में अभिनय किया। तब से वे 80 से अधिक फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं। उनकी प्रमुख लोकप्रिय फिल्में हैं: **आनन्द, जंजीर, दीवार, शोले, मुकद्दर का सिकन्दर, नसीब, अभिमान, त्रिशूल, लावारिस, अदालत, अन्धा कानून, नमक हलाल, कभी कभी, शहंशाह, आज का अर्जुन** आदि। उन्हें 1977 में **अमर अकबर अन्थनी** और 1978 में **डॉन** के लिए फिल्मफेयर सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार मिला। 1984 में उन्हें पद्मश्री से विभूषित किया गया और उसी वर्ष वे इलाहाबाद से लोकसभा के सदस्य चुने गये थे।

AMITABH BACHCHAN, the towering star of Indian cinema, was born in 1942 and is a Science graduate from Delhi university. His introduction to Indian cinema was in late K.A. Abbas's film **Saat Hindustani** and since then he has acted over 80 films among which some of the major hits include **Anand, Zanjeer, Deewar, Sholay, Muquaddar Ka Sikandar, Naseeb, Abhiman, Trishul, Lawaris, Adalat, Andha Kanoon, Namak Halal, Kabhi Kabhi, Shahenshah, Aaj Ka Arjun, Hum.** He received the Filmfare Best Actor Award in 1977 for **Amar Akbar Anthony** and in 1978 for **Don**. He received Padamashri in 1984 and same year he was elected to Lok Sabha from Allahabad.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

विजया शान्ति

अभिनेत्री **विजया शान्ति** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1990 का पुरस्कार **विजया शान्ति** को तेलुगु फिल्म **कर्त्तव्यम्** में आक्रामक तेवर और नारी-सुलभ गुणों को संतुलन तथा संयम के साथ प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTRESS

VIJAYA SHANTHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actress: **VIJAYA SHANTHI**

Citation

The Award for the Best Actress of 1990 is given to **VIJAYA SHANTHI** for her work in the Telugu film **KARTHAVYAM** for depicting both aggression and femininity with balance and restraint.

सशक्त अभिनेत्री **विजया शान्ति** ने 25 वर्ष की उम्र में ही तेलुगु सिनेमा तथा अन्य भाषाओं की फिल्मों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। उन्हें अभिनय के लिए कई पुरस्कार मिल चुके हैं। जब वे केवल 21 वर्ष की थीं, तब उन्हें **प्रतिघटना** फिल्म के लिए पुरस्कार मिला। इसके अलावा **भारतनारी, मेटी भारतम्** और **बेपाटी पौरुलू** फिल्मों में अभिनय के लिए उन्हें पुरस्कार मिले। इन फिल्मों को सर्वोत्तम फिल्म के राज्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए। इन दिनों वे **कर्त्तव्यम्** के हिन्दी रूपान्तर **तेजस्विनी** में काम कर रही हैं। उन्होंने विभिन्न भाषाओं की फिल्मों में अभिनय किया है और वे लगभग सभी प्रमुख अभिनेताओं के साथ काम कर चुकी हैं।

VIJAYA SHANTHI, has carved out a niche for herself in Telugu cincema and also in films in other languages at the young age of 25. Awards have come to her in a big way starting with **Prathighatana** when she was barely 21. She was also awarded for her performance in **Bharathanaari** as well as acting in films **Meti Bharatham, Bepati Pourulu** which received state awards for best films. Currently, she is engaged in making **Thejaswini,** Hindi version of **Karthavyam.** A multilingual artiste, she has acted opposite almost all matinee idols.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता पुरस्कार

नेडुमुडि वेणु

सह-अभिनेता **नेडुमुडि वेणु** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेता का 1990 का पुरस्कार **नेडुमुडि वेणु** को मलयालम फिल्म **हिज हाइनिस अब्दुल्ला** में अभिनय के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने अत्यन्त भाव प्रवण और प्रभावशाली ढंग से अपने पात्र को चित्रित किया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTOR

NEDUMUDI VENU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supporting Actor: **NEDUMUDI VENU**

Citation

Tha Award for the Best Supporting Actor of 1990 is given to **NEDUMUDI VENU** for his work in the Malayalam film **HIS HIGHNESS ABDULLAH** for maintaining the character with consistency and sensitivity.

नेडुमुडि वेणु मलयालम फिल्मों के जाने माने अभिनेता हैं। उन्हें अभिनय के लिए राज्य स्तर के अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्होंने अभिनय का श्रीगणेश भारतन द्वारा निर्देशित मलयालम फिल्म **तकारा** से किया। वे लगभग 100 फिल्मों में विभिन्न प्रकार के पात्रों का अभिनय कर चुके हैं।

NEDUMUDI VENU, a graduate who took to acting has been with Malayalam cinema for long winning several state awards for his performances. Making his debut with the Malayalam film **Thakara** directed by Bharathan, he has portrayed a wide variety of characters in about 100 films in Malayalam.

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री पुरस्कार

के.पी.ए.सी. ललिता

सह-अभिनेत्री **के.पी.ए.सी. ललिता** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का 1990 का पुरस्कार **के.पी.ए.सी. ललिता** को मलयालम फिल्म **अमारम्** में एक जातीय चरित्र को प्रामाणिकता के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTRESS

K.P.A.C. LALITHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Supporting Actress : **K.P.A.C. LALITHA**

Citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1990 is given to **K.P.A.C. LALITHA** for her work in the Malayalam film **AMARAM** for portraying an ethnic character with authenticity.

ललिता मलयालम फिल्मों के जाने माने फिल्मकार भारतन् की पत्नी हैं। उन्होंने अभिनय की शुरूआत के.पी.ए.सी. नाटक मंडली द्वारा मंचित नाटकों से की। वे अनेक मलयालम फिल्मों में मुख्य सह-अभिनेत्री के रूप में काम कर चुकी हैं।

K.P.A.C. LALITHA, wife of the well known Malayalam film maker Bharathan, started her stage career in K.P.A.C. drama troup. She has been a leading supporting actress in a large number of Malayalam films.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

श्रुति, तरुण और शामिली

बाल कलाकारों **श्रुति, तरुण** और **शामिली** को रजत कमल और 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1990 का पुरस्कार **श्रुति, तरुण** और **शामिली** को तमिल फिल्म **अंजलि** में उनके शानदार अभिनय के लिए प्रदान किया गया है, जिसमें उन्होंने सभी बाल-सुलभ विशेषताओं के साथ-साथ अपने भीतर छिपे वयस्क व्यक्ति की भी झलक दिखाई है।

AWARD FOR THE BEST CHILD ARTISTE

BABY SHRUTI, MASTER TARUN and BABY SHAMILEE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- to the Child Artists: **BABY SHRUTI, MASTER TARUN** and **BABY SHAMILEE**

Citation

The Award for the Best Child Artiste of 1990 is given to **BABY SHRUTI, MASTER TARUN** and **BABY SHAMILEE** for their work in the Tamil film **ANJALI** for giving excellent performances in which the children come across in all naturalness and yet give a glimpse of the adult within.

श्रुति का जन्म 1983 में हुआ और वह विद्या मंदिर मायलापुर की छात्रा है। वह चित्रकारी और कैसियो बजाने की शौकीन है।

तरुण का जन्म भी 1983 में हुआ और वह मद्रास के सरवेंकटसुब्बाराव हाई स्कूल में तीसरी कक्षा में पढ़ता है। वह 7 तेलुगु फिल्मों और मलयालम तथा तमिल की एक-एक फिल्म में अभिनय कर चुका है। तरुण को कई पुरस्कार भी मिले हैं।

शामिली की उम्र केवल 4 वर्ष है और वह तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ की 10 फिल्मों में अभिनय कर चुकी है। उनकी 6 फिल्में इस समय निर्माणाधीन हैं।

BABY SHRUTI born in **1983** is a student of Vidya Mandir, **Mylapore,** and his hobbies are painting and playing the Casio.

MASTER TARUN born in **1983** is a IIIrd standard student of Sri Venkata Subba Rao Boys High School, Madras. **MASTER TARUN** has already worked in seven Telugu and one each in Tamil and Malayalam films and has been named for several awards (Vamsi, Bharatamuni and Cinema Trade Guide Award).

BABY SHAMILEE born in **1987** has already worked in 10 films in Tamil, Telugu, Malayalam and Kannada and 6 of her films are under production now.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

एम.जी. श्रीकुमार

पार्श्व गायक **एम.जी. श्रीकुमार** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1990 का पुरस्कार **एम.जी. श्रीकुमार** को मलयालम फिल्म **हिज़ हाइनेस अब्दुल्ला** में शास्त्रीय संगीत पर आधारित एक गीत को सटीक और श्रेष्ठ ढंग से गाने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST MALE PLAYBACK SINGER

M.G. SREEKUMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Male Playback Singer : **M.G. SREEKUMAR**

Citation

The Award for the Best Male Playback Singer of 1990 is given to **M.G. SREEKUMAR** for an excellent rendering of a classical-based tune encompassing all ranges accurately in the Malayalam film **HIS HIGHNESS ABDULLAH.**

एम.जी. श्रीकुमार वाणिज्य स्नातक हैं। उनका परिवार संगीतज्ञों का परिवार है। वे अब तक 160 से अधिक फिल्मों में लगभग 600 गाने गा चुके हैं। उन्हें फिल्म किरीडम के लिए केरल राज्य का सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार मिल चुका है। इन दिनों वे शास्त्रीय संगीत सीख रहे हैं।

M.G. SREEKUMAR, Commerce graduate, belongs to a family of musicians-father, mother, brother and sister, has sung about 600 songs in more than 160 films, winner of Kerala state award as the best male playback singer (film Kireedom), now receiving training in classical music.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

लता मंगेशकर

पार्श्व गायिका **लता मंगेशकर** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1990 का पुरस्कार **लता मंगेशकर** को हिन्दी फिल्म **लेकिन** में अद्वितीय और शुद्धतम गायन शैलियों में श्रेष्ठ अभिव्यक्ति के साथ गीत गाने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

LATA MANGESHKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Female Playback Singer of 1990 is given to **LATA MANGESHKAR** for singing with outstanding expression with the rarest and purest of styles in the Hindi film **LEKIN.**

लता मंगेशकर ने अभिनेत्री, निर्माता और संगीत निर्देशक के रूप में काम किया किन्तु उनका वास्तविक कर्म क्षेत्र संगीत ही रहा। 1950 और 1960 के दशकों में उन्होंने प्रमुख मराठी कवियों की रचनाओं को प्रस्तुत किया। 1970 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में लता ने महाराष्ट्र के सबसे लोकप्रिय मध्य कालीन संत-गायक संत तुका राम के भक्ति गीत रिकार्ड कराये। संस्कृत में भगवत गीता की रिकार्डिंग उनकी महानतम उपलब्धि मानी जाती है। उन्होंने मीराबाई के भजन और ग़ालिब की गजलें भी गाई हैं। लता मंगेशकर को दुनिया में सबसे अधिक संख्या में गीत गाने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने लगभग 15 भाषाओं में 30,000 से अधिक गीत गाये हैं। **मजबूर, पद्मिनी, अन्दाज, लहर, बाज़ार** और **बरसात** फ़िल्मों ने फ़िल्मी संगीत में लता के पांव हमेशा के लिए जमा दिए और वे लाखों संगीत प्रेमियों के दिलों पर राज करने लगीं तथा 1989 में उन्हें दादा साहेब फाल्के के राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

LATA MANGESHKAR has worked as an actress, producer and composer. However, it is in the field of music, both in and out of the cinema, that she has excelled. In the 50s and 60s, she adapted the works of leading Marathi poets and set them to music. In the early 70s, she recorded devotional songs by Sant Tukaram, the most popular medieval saint-singer of Maharashtra. Many consider her recording of the Bhagwad Gita in Sanskrit as her crowning achievement. She has also sung bhajans by Meerabai and Ghalib's ghazals. With her repertoire of more than 30,000 songs in about 15 languages, Lata holds the record for singing the largest number of songs in the world. Music director Ghulam Haider introduced her to Bambay Talkies. Majboor, Padmini, Andaz, Lahar, Bazaar and Barsaat ensured a future where she would reign supreme over the hearts of millions of music lovers. In 1989 she was awarded the Dada Saheb Phalke Award.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार
संतोष सिवन

छायाकार **संतोष सिवन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

फिल्म की प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला **मैसर्स विजय कलर लैब** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1990 का पुरस्कार **संतोष सिवन** को मलयालम फिल्म **पेरूमथच्चन** में उनके काम के लिये दिया गया है, जिसमें उन्होंने फिल्म के मुख्य भाव को श्रेष्ठता के साथ उजागर किया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY
SANTOSH SIVAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameraman: **SANTOSH SIVAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the laboratory processing the film **M/S VIJAY COLOUR LABORATORIES**

Citation

The Award for the Best Cinematography of 1990 is given to **SANTOSH SIVAN** for his work in the Malayalam film **PERUMTHACHAN** for heightening the mood of the film with the highest visual standards.

संतोष सिवन ने भारतीय फिल्म एवम् टेलीविज़न संस्थान पुणे से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने पिछले वर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त लघु फिल्म **स्टोरी ऑफ टिलुब्यू** का निर्माण, निर्देशन और छायांकन किया। उन्होंने एक दर्जन से अधिक लघु फिल्मों का छायांकन किया है। जिन कथाचित्रों के लिए उन्होंने छायांकन किया है, उनमें हिन्दी फिल्म **राख** और मलयालम फिल्में **निधियूडे कथा, ओरु मेमासा पुलरियिल, मिस्टर डेविड, कदाल तिरूथु, मिथ्या, इन्द्रजालम, व्यूहम्** आदि शामिल है।

SANTOSH SIVAN, a diploma holder in cinematography from Pune Film Institute, he produced, directed and photographed the 1989 national award winning short film **Story of Tiblu,** and also photographed over a dozen short films. His cinematography for Feature Films include **Raakh** (Hindi), **Nidhiyude Katha** (Malayalam), **Oru May Masa Pulariyil, David Mr. David, Mandatheum Kettathem, Kadal Theerathu, Kalal Pada, Varthamanakalam, Mithya, Indraialam, Vyuham.**

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

के.एस. सेतुमाधवन

पटकथा लेखक **के.एस. सेतुमाधवन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1990 का पुरस्कार **के.एस. सेतुमाधवन** को तमिल फिल्म **मरूपक्कम** में एक सहज कथा को सफलतापूर्वक प्रस्तुत करने और दर्शन, मनोविज्ञान, परम्परा तथा पारस्परिक सम्बंधों के विभिन्न स्तरों को कुशलता के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCREENPLAY

K.S. SETHU MADHAVAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Screenplay Writer: **K.S. SETHU MADHAVAN**

Citation

The Award for the Best Screenplay of 1990 is given to **K.S. SETHU MADHAVAN** for his work in the Tamil film **MARUPAKKAM** for depicting a simplistic story, capturing the various levels of philosophy, psychology, tradition and relationships perfectly.

के.एस. सेतु माधवन मलयालम सिनेमा की बड़ी हस्तियों में से एक है। वे अपनी फिल्मों में मानव मूल्यों की तलाश करते रहे है। इस वर्ग की उनकी दो विख्यात फिल्में है: **आदिमकाल** और **ओप्पोल**। **ओप्पोल** फिल्म को 1981 में द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। सेतु माधवन प्रगतिशील विचारों के है और अब तक वे तमिल, कन्नड़ और सिंहली भाषाओं में 60 से अधिक फिल्में बना चुके है। 1970 से 1972 तक लगातार तीन वर्ष उन्हें केरल राज्य का सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार मिला और उनकी कुछ अन्य प्रसिद्ध फिल्में है: **कारा काना काडल, पणी तिरथा वीडू** और **अचानम रप्पायम**।

K.S. SETHU MADHAVAN, one of the stalwarts of Malayalam Cinema, has been consistently exploring human values in his films and two of the best known films in genre include **Adimakal** and **Oppol,** the latter adjudged as the Second Best Feature film in 1981 National Film Awards. A prolific film maker and a man of progressive views, Sethu has made over 60 films including films in Tamil, Kannada and Sinhalese. Winner of Kerala State government's Best Director's award consecutively for three years (1970-1972) his other well known films include **Kera Kana Kadal, Pani Theeratha Veedu, Achanum Rappayum.**

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

एन. पांडुरंगन

ध्वनि आलेखक **एन. पांडुरंगन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1990 का पुरस्कार **एन. पांडुरंगन** को तमिल फिल्म **अंजलि** के लिए प्रदान किया गया है, जिसमें फिल्म के दृश्यात्मक प्रभाव को तीव्र करने के लिए ध्वनि का संयोजन अत्यंत सृजनात्मक ढंग से किया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

N. PANDURANGAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographer : **N. PANDURANGAN**

Citation

The Award for the Best Audiography of 1990 is given to **N. PANDURANGAN** for his work in the Tamil film **ANJALI** for aesthetically weaving the soundtrack in the most creative manner to enhance the visuals of the film.

48 वर्षीय **एन. पांडुरंगन** पिछले 28 वर्षों से रिकार्डिंग के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वे मद्रास के प्रसाद स्टूडियो में ध्वनि आलेखक के रूप में काम कर रहे हैं। 1982 से 1984 तक लगातार 3 वर्ष उन्हें कर्नाटक सरकार द्वारा ध्वनि आलेखक के रूप में पुरस्कृत किया गया। 1986 में उन्हें आंध्र प्रदेश सरकार का पुरस्कार दिया गया।

N. PANDURANGAN, 48, has been in the Cine Recording business for twenty-eight years working as the Sound Recordist of Prasad Studios, Madras. As a Sound Recordist he was awarded by the Karnataka State government consecutively for three years (1982-84) and is a recipient of Andhra Pradesh government's Nanthi Award for his work in the film **Srivennila** in 1986.

सर्वोत्तम सम्पादन पुरस्कार

एम.एस. मणि

सम्पादक **एम.एस. मणि** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फिल्म सम्पादन का 1990 का पुरस्कार **एम.एस. मणि** को मलयालम फिल्म **अय्यर दी ग्रेट** के लिए दिया गया है, जिसमें उनके चुस्त सम्पादन के कारण फिल्म के कलात्मक पक्ष में चार चाँद लग गये हैं।

AWARD FOR THE BEST EDITING

M.S. MONEY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor: **M.S. MONEY**

Citation

The Award for the Best Editing of 1990 is given to M.S. MONEY for his work in the Malayalam film IYER THE GREAT for slick well-placed editing which elevates the craft of the film.

एम.एस. मणि पिछले 40 वर्षों से फिल्मों का संपादन कार्य कर रहे हैं और अब तक मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, हिन्दी और सिंहली भाषाओं की लगभग 200 फिल्मों का संपादन कर चुके हैं। उन्हें मलयालम फिल्म **मरम** के लिए सर्वोत्तम क्षेत्रीय फिल्म का पुरस्कार मिल चुका है। उन्होंने मलयालम और तमिल फिल्मों तथा केरल राज्य के वृत्तचित्रों का निर्देशन भी किया है।

M.S. MONEY: Film Editor for over 40 years; edited over 200 feature films in Malayalam, Tamil, Telugu, Kannada, Hindi, Sinhalese; winner of regional best film award for Malayalam film *Maram*; directed Tamil and Malayalam films and Kerala government Documentaries.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

नितीश रॉय

कला निर्देशक **नितीश रॉय** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1990 का पुरस्कार **नितीश रॉय** को हिन्दी फिल्म **लेकिन** में युग विशेष के वातावरण को बनाये रखने और पूरी कुशलता के साथ चरित्रों को उभारने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ART DIRECTION:

NITISH ROY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Art Director : **NITISH ROY**

Citation

The Award for the Best Art Direction of 1990 is given to **NITISH ROY** for his work in the Hindi film **LEKIN** for maintaining the era, etching the characters against the canvas, with perfect colour, design and execution.

नितीश रॉय की गिनती फिल्म जगत के जाने-माने कला निर्देशकों में होती है। उन्होंने इस क्षेत्र में 1981 में पदार्पण किया। उसी वर्ष उन्होंने मृणाल सेन की फिल्म **खारिज** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। 1983-84 में उन्हें श्याम बेनेगल की फिल्म **मंडी** के कला निर्देशन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। नितीश रॉय कई अन्य फिल्मों से सम्बद्ध रहे हैं, जिनमें मृणाल सेन की **खण्डहर**, गोविन्द निहलाणी की **पार्टी, आघात** और **दृष्टि**, श्याम बेनेगल की **त्रिकाल**, रमेश शर्मा की **न्यू दिल्ली टाइम्स**, मीरा नायर की **सलाम बाम्बे** आदि शामिल हैं। उन्होंने दूरदर्शन धारावाहिकों के लिए भी काम किया है। इनमें **तमस, कबीर, वागले की दुनिया, मिर्ज़ा गालिब** आदि उल्लेखनीय हैं। नितीश रॉय फिल्म प्रभाग और पश्चिम बंगाल सरकार के लिए निर्माता-निर्देशक के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने बंगला कथाचित्र **एक पोशला वृष्टि** का निर्देशन भी किया है।

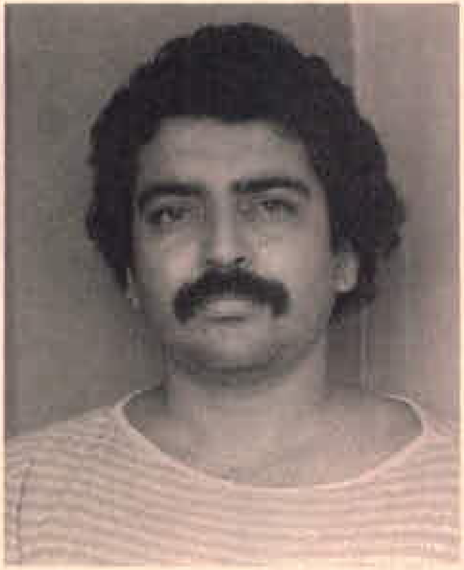

NITISH ROY, one of the most renowned Art Directors in films ever since he joined the profession in 1981 in which year he did the decor for Mrinal Sen's **Kharij** and won the national as well as BFJA award. In 1983-84, he won the national and BFJA Award for his decor in Shyam Benegal's **Mandi** and in 1985 bagged the BFJA Award once again for his work in Kalpana Lajmi's **Ek Pal.**

In between he did the decor for a large number of well known films such as **Khandar, Genesis, Party, Aghaat, Jezeere, Drishti, Trikal, Sushman, New Delhi Times, Parinda, Kasba, Ek Romani Ho Jai, Salam Bombay** and **Ghayal.** He did decor for TV serials like **Tamas, Kabeer, Wagle Ki Duniya, Mirza Ghalib** and worked for a large number of Ad Films.

A student of Government College of Art &Craft, Calcutta he is a producer director with Films Division and West Bengal government. He has also directed a Bengali feature film **Ek Poshla Brishti**

सर्वोत्तम वेशभूषा पुरस्कार

भानु अथैया

वेशभूषाकार **भानु अथैया** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषा का 1990 का पुरस्कार **भानु अथैया** को हिन्दी फिल्म **लेकिन** के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने वेशभूषा की ऐसी परिकल्पना की है जिससे फिल्म की दृश्यात्मक गुणवत्ता में वृद्धि हुई है और उन्होंने हल्के रंगों का इस्तेमाल करके राजस्थानी वेशभूषा की गहरे एवं चटक रंगों की परम्परा को तोड़ा है।

AWARD FOR THE BEST COSTUME DESIGNER

BHANU ATHAIYA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/-to the Costume Designer: BHANU ATHAIYA

Citation

The Award for the Best Costume Designer of 1990 is given to **BHANU ATHAIYA** for her work in the Hindi film **LEKIN** for the texture and tone of the costumes, which heighten the visual quality of the film, breaking away from the traditional image of bright Rajasthani colours by using subdued pastel shades.

भानु अथैया ने चित्रकला में प्रथम श्रेणी से डिप्लोमा प्राप्त किया है तथा जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स की अध्येता हैं। उन्होंने वेशभूषा तथा फैशन डिजाईनिंग में फ्रांस से छात्रवृत्ति भी ली है। भारतीय फिल्म उद्योग में 1955-1991 के समय में भारतीय तथा पाश्चात्य वेशभूषा का कार्य कर चुकी हैं। उन्हें ऐटनबरो की फिल्म **'गांधी'** के लिए वेशभूषाकार का आस्कर पुरस्कार मिला। उन्होंने विदेशी सहयोग से निर्मित **अजूबा, ऐ मैमोरी ऑफ द फ्यूचर, सोहनी महिवाल, अली बाबा और चालीस चोर, शालीमार, सिद्धार्थ** और **गाईड** जैसी फिल्मों में वेशभूषाकार के रूप में कार्य किया है। वेशभूषाकार के रूप में इनकी कुछ प्रमुख फिल्में **ख्याल गाथा, सल्तनत, निकाह, नमकीन, तीसरी कसम, रेशमा और शेरा, साहिब बीबी और गुलाम** तथा **गंगा जमुना** हैं।

BHANU ATHAIYA: Internationally acclaimed Costume Designer and the first ever Indian to be nominated for the prestigeous Oscar award, which she received for her work in Richard Attenborough's GANDHI; has so far designed Costumes for over 300 films (practically covering all period and regions in the country including western costumes) ever since she entered the Bombay Film Industry in 1955; her costume design for some of the Co-productions include **Ajooba, Sohni Mahiwal, A Memoir of the Future, Ali Baba & 40 Chor, Shalimar, Siddharth, Guide;** design for some important Hindi films include **Khayal Gatha, Nikah, Namkeen, Teesri Kasam, Reshma Aur Shera, Sahib Bibi Aur Ghulam, Ganga Jamuna;** diploma holder in Painting, Fellow, J J School of Art; studied Fashion Designing in Paris under French Scholarship; Fashion illustrator-designer, for magazines and boutiques.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

हृदयनाथ मंगेशकर

संगीत निर्देशक **हृदयनाथ मंगेशकर** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1990 का पुरस्कार **हृदयनाथ मंगेशकर** को हिन्दी फिल्म **लेकिन** में परम्परागत धुनों और वाद्ययंत्रों का पूर्ण सृजनात्मकता और कुशलता के साथ इस्तेमाल करके कर्णप्रिय संगीत उत्पन्न करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

HRIDAYANATH MANGESHKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director: **HRIDAYANATH MANGESHKAR**

Citation

The Award for the Best Music Direction of 1990 is given to **HRIDAYANATH MANGESHKAR** for using traditional tunes and instruments creatively, with lilting melody and hanuting perfection in the Hindi film **LEKIN.**

हृदयनाथ मंगेशकर लम्बे समय से संगीतकार के रूप में फिल्मी दुनिया में सक्रिय हैं। उन्होंने अनेक फिल्मों में संगीत निर्देशक के रूप में काम किया है। उनमें से कुछ प्रमुख फिल्में हैं: **मशाल, धनवान, सुबह, चक्र** और **महानन्दा**। उन्होंने संगीत निर्देशन के साथ-साथ मराठी भाषा में फिल्मों का निर्माण भी किया है। इन फिल्मों में **अन्तरीचढेवा, भव तेथे देव** और **सूनबाई** शामिल हैं।

HRIDAYANATH MANGESHKAR has been a Music Director of long standing. He has been the music director of a large number of films some of which include **Mashal, Dhanvan, Subah, Chakra, Mahananda.** Besides music he has also produced films in Marathi **Antarichadeva, Bhav Tethe Dev** and **Soonbai.**

सर्वोत्तम गीतकार पुरस्कार

गुलज़ार

गीतकार **गुलज़ार** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गीतकार का 1990 का पुरस्कार **गुलज़ार** को हिन्दी फिल्म **लेकिन** के गीतों में लयपूर्ण काव्य सृजन के माध्यम से अति सुन्दर बिम्बों की रचना के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST LYRICS

GULZAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10.000/- to the Lyricist : **GULZAR**

Citation

The Award for the Best Lyrics of 1990 is given to **GULZAR** for his work in the Hindi film **LEKIN** for evoking beautfiul imagery, created through lyrical poetry.

गुलज़ार मूल रूप से कवि हैं और 40 के दशक में प्रगतिशील लेखक आंदोलन से जुड़े रहे। फिल्मों में गीतकार, पटकथा लेखक और निर्देशक के रूप में सक्रिय रहे हैं। उन्होंने **आंधी, कोशिश, अचानक, किताब, मीरा, अंगूर** और **इजाज़त** जैसी फिल्मों का पटकथा लेखन और निर्देशन किया है। **मौसम** फिल्म के लिए उन्हें सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार और **कोशिश** के लिए सर्वोत्तम पटकथा लेखक का पुरस्कार मिला। 1988 में उन्हें **इजाज़त** फिल्म के लिए सर्वोत्तम गीतकार का पुरस्कार प्राप्त हुआ। गुलज़ार ने कविता, कहानी और उपन्यासों की रचना की है। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

GULZAR, Lyricist, script-writer and director by profession, has been basically a poet of modern sensitivity and was closely associated with the progressive writer's movement in the 40's. Since his introduction to cinema he has written and directed films like **Aandhi, Koshish, Achanak, Kitab, Meera, Angoor** and **Ijaazat** and won the Best Director's award for **Mausam,** the Best Sereenplay writer's award for **Koshish** and in 1988, the Best Lyricist award for **Ijaazat.**

Gulzar is the author of three books of poetry, short story and novelette; author of a dozen books for children his story named Ekta won the NCRT award in 1989. Born in Jhelum in Pakistan in 1936 he had his schooling in Delhi and later settled in Bombay.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

पंकज कपूर, सन्नी देओल और जया भारती

अभिनेता **पंकज कपूर, सन्नी देओल** तथा अभिनेत्री **जया भारती** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

निर्णायक मंडल का 1990 का विशेष पुरस्कार अभिनेता **पंकज कपूर** को हिन्दी फिल्म **एक डॉक्टर की मौत** में उनके अभिनय के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने व्यवस्था की उस जड़ और निराशामूलक प्रणाली के संदर्भ में एक चिंतनशील, महत्वाकांक्षी और सृजनशील व्यक्ति की पीड़ा को बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है जो नया रास्ता खोजने वाली प्रवृत्ति को सफल होने का कोई मौका नहीं देती।

1990 का निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार अभिनेता **सन्नी देओल** को भी हिन्दी फिल्म **घायल में** एक ऐसे युवक का सफल अभिनय करने के लिए दिया गया है जो मौजूदा पुलिस व्यवस्था के बुरे पहलुओं का शिकार हो जाता है।

अभिनेत्री **जया भारती** को भी 1990 का निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार तमिल फिल्म **मरूपक्कम** में भावना की दृष्टि से उपेक्षित एक महिला की पीड़ा को मार्मिक ढंग से चित्रित करने के लिए प्रदान किया गया है।

SPECIAL JURY AWARD

PANKAJ KAPOOR, SUNNY DEOL and JAYABHARATHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actors: **PANKAJ KAPOOR**, and **SUNNY DEOL** and the actress **JAYABHARATHI**

Citation

The Special Jury Award for 1990 is given to the Actor **PANKAJ KAPOOR** for his work in the Hindi film **EK DOCTOR KI MAUT** for having effectively projected the in-built trauma of an aspiring, thinking, creative mind, in the context of a demoralising, fossilized system of establishment that does not provide scope for fruition of a path-finding spirit.

The Special Jury Award for 1990 is also given to the Actor **SUNNY DEOL** for his work in the Hindi film **GHAYAL** for an effective portrayal of a youth, victimised by the inherent evil in aspects of the present police system.

The Special Jury Award for 1990 is also given to the Actress **JAYA BHARATHI** for her work in the Tamil film **MARUPAKKAM** for a touching portrayal of the agony of a woman who has been emotionally neglected, unwittingly.

पंकज कपूर ने टेलीविज़न कलाकार के रूप में अभिनय क्षेत्र में काम शुरू किया और बाद में वे फिल्म अभिनेता बन गये। इससे पहले वे कई नाटकों में भी अभिनय कर चुके हैं। **कर्मचन्द** और **कब तक पुकारूँ** उनके दो प्रमुख टेलीविज़न धारावाहिक हैं। पंकज कपूर ने **यह वो मंजिल तो नहीं, मैं जिन्दा हूँ, मढ़ी दा दीवा** आदि फिल्मों में शानदार अभिनय किया है।

सन्नी देओल फिल्म अभिनेता धर्मेन्द्र के पुत्र हैं। उनका अभिनय जीवन 1983 में **बेताब** फिल्म से आरम्भ हुआ। इसके बाद उन्होंने **अर्जुन** फिल्म में अभिनय किया, जिसके लिए उन्हें काफी सराहना मिली। उन्होंने **सोहनी महिवाल, यतीम, पाप की दुनिया, त्रिदेव** आदि कई सफल फिल्मों में काम किया है। उनकी नवीनतम फिल्म **घायल** के लिए उन्हें फिल्मफेयर के सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार के लिए भी चुना गया है।

जया भारती दक्षिण भारत की सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री हैं। अभिनय के क्षेत्र में उन्हें बहुमुखी प्रतिभा की धनी माना जाता है। उन्होंने केवल मलयालम की ही 275 फिल्मों में अभिनय का कीर्तिमान कायम किया है। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन मलयालम फिल्मों से ही आरम्भ किया लेकिन वह तमिल फिल्मों में भी बहुत लोकप्रिय हुईं। उन्हें अनेक पुरस्कार भी मिल चुके हैं। उन्हें लगातार 3 वर्ष तक केरल सरकार का सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार दिया गया।

PANKAJ KAPUR Television artiste and later a Cine artiste also, acted in a number of plays for National School of Drama Repertory. Acted in serials **Karamchand** and **Kab Tak Pukaroon** and films **Yeh Woh Manzil To Nahin, Main Zinda Hoon, Marhi Da Diva**

SUNNY DEOL following in the footsteps of his cine-actor father Dharmendra, made **Betaab, Arjun,** starred in a number of hit films **Sohni Mahiwal, Yateem, Vardi, Paap Ki Duniya, Tridev** etc. His last runaway hit was **Ghayal**.

JAYABHARATHI, a veteran actress she holds the astounding record of having acted in more than 275 films in Malayalam alone. Starting her career as a dancer and actress in Malayalam and Tamil she bagged the Kerala government's Best Actress award consecutively for three years.

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र पुरस्कार

जूज

निर्माता **बिपुल बरूआ** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **हेमन दास** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार **जूज** को सामाजिक विषमताओं के ठोस यथार्थ को पूरी आस्था के साथ चित्रित करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

JOOJ

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **BIPUL BARUAH**

Rajat Kamal and a cash Prize of Rs. 10,000/- to the Director : **HEMEN DAS**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Assamese of 1990 is given to JOOJ for attempting to portray, with conviction, the earthy realism in the field of social differences.

बिपुल बरूआ एक व्यापारी होने के साथ-साथ कलाओं, विशेषकर नाटक व सिनेमा में भी रुचि रखते हैं। उन्होंने असमिया के अनेक नाटकों का निर्देशन किया है और उनमें अभिनय भी किया है। उन्होंने अपने संगीत निर्देशन में असमिया भाषा के गीतों के कैसेट भी तैयार कराये हैं। **जूज** निर्माता के रूप में उनकी पहली फिल्म है।

हेमन दास सरकारी कर्मचारी हैं और रंगमंच की प्रमुख हस्ती है। रंगमंच के सभी पहलुओं पर उनकी पकड़ है। उन्होंने नाट्य शिल्प नाम की पुस्तक भी लिखी है। उन्होंने राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर अनेक नाटकों का निर्देशन किया है और उनमें अभिनय किया है। वे दूरदर्शन के लिए भी काम कर चुके हैं। उन्होंने दो नाटक भी लिखे हैं। वे **आश्रय, कनकलता** और **पानी** फिल्मों में निर्देशक दुलाल राय के सहायक के रूप में काम कर चुके हैं। निर्देशक के रूप में **जूज** उनकी पहली फिल्म है।

BIPUL BARUAH, a businessman by profession, is proficient in arts too, especially theatre and cinema. He has taken part and produced and directed many stage plays as well as composing songs for Assamese cassettes. Besides **Jooj** which is his first venture he has also produced **Abuj Bedona.**

HEMEN DAS, a government employee, has been one of Assam's prominent stage personality, and proficient in all the aspects of theatre, play-writing, acting and direction and also the author of a book on theatre, Natya Silpa. He has been acting and directing plays on state and national level and for Doordarshan also. He also wrote two plays Shrimanta Sankardev and For A Peace War. He had been an assistant to director Dulal Roy for his film **Ashraya** and in other films **Kanaklata** and **Paani. Jooj** is his maiden directorial venture.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार

आत्मजा

निर्माता **राजकुमार जैन** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **नब्येन्दु चटर्जी** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार **आत्मजा** को एक माँ की मानसिक दशा का कुशलता पूर्वक चित्रण करने के लिए दिया गया है, जो धन-दौलत की व्यर्थता और मानवीय मूल्यों की चिरंतनता के द्वन्द्व में उलझी है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN BENGALI

ATMAJA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **RAJ KUMAR JAIN**

Rajat Kamal and a cash prize of the Rs. 10,000/- to the Director : **NABYENDU CHATTERJEE**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Bengali of 1990 is given to **ATMAJA** for its masterly depiction of a mother's quest, torn between the hollowness of wealth and the transcendence of human values.

राजकुमार जैन एक युवा व्यापारी और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वे अनामिका थियेटर ग्रुप के माध्यम से हिन्दी रंगमंच आन्दोलन से भी जुड़े रहे हैं। निर्माता के रूप में **आत्मजा** उनकी पहली फिल्म है।

नब्येन्दु चटर्जी ने सबसे पहले हिन्दी फिल्म **नया रास्ता** का निर्देशन किया। इसके बाद उन्होंने बंगला में **अद्वितीय, चिट्ठी, आज काल परशुर गल्पो** आदि फिल्मों का निर्देशन किया। उन्होंने सामाजिक विषयों पर फिल्मों के निर्देशन में शैली और विषय दोनों दृष्टियों से नये प्रयोग किये हैं, जिनकी व्यापक सराहना हुई है। उनकी फिल्म **परशुरामेर कुठार** को 1989 का द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार और सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार मिला। **आत्मजा** उनकी 9वीं फिल्म है।

RAJ KUMAR JAIN, a young businessman and a prominent social worker he has also been associated with Hindi theatre movement via Anamika theatre group. He has also been a producer of Bengali TV serial, and a secretary of Sri Digamber Jain Trust (Howrah). **Atmaja** is his first independent venture as a producer.

NABYENDU CHATTERJEE made his directorial debut with **Naya Rasta** in Hindi followed by **Adwittiya** (1968), **Chithi** (1973), **Ramur Pratham Bhag** (1974) and **Aaj Kal Parshur Galpo**-all in Bengali. He has experimented with both form and content in his films which received critical acclaim for his commitment to socially relevant themes. His latter films **Chopper** (1986) and **Sarisreep** (1988) were shown in various film restivals in India and abroad. His last film **Parashuramer Kuthar** (Bengali) bagged the second Best feature film award of 1989 and also the Best Actress Award. **Atmaja** is his ninth film.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

दृष्टि

निर्माता **गोविन्द निहलाणी** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **गोविन्द निहलाणी** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार **दृष्टि** को मातृत्व की पीड़ा को कुशलतापूर्वक चित्रित करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN HINDI

DRISHTI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **GOVIND NIHALANI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **GOVIND NIHALANI**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Hindi of 1990 is given to DRISHTI for depicting marital pain very effectively.

गोविन्द निहलाणी ने अपना फिल्मी जीवन कथाचित्र **शान्तता कोर्ट चालू आहे** से शुरू किया। इस फिल्म का निर्माण और निर्देशन सत्यदेव दुबे ने किया। श्याम बेनेगल की अनेक फिल्मों और वृत्तचित्रों के छायाकार के रूप में उन्होंने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की। 1979 में निहलाणी को **जुनून** फिल्म के लिए सर्वोत्तम रंगीन छायांकन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म **आक्रोश** को भारत के 1981 के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में स्वर्ण मयूर प्राप्त हुआ। उसी वर्ष उन्होंने रिचर्ड ऐटनबरो की फिल्म **गांधी** की दूसरी यूनिट का नेतृत्व किया। इसके बाद उनकी कुछ और प्रमुख फिल्में **विजयता, अर्धसत्य, पार्टी, आघात** आदि आईं। उन्होंने दूरदर्शन के लिए 5 घंटे के प्रसिद्ध धारावाहिक **तमस** का भी निर्देशन किया।

GOVIND NIHALANI, started his career with the feature film **Shantata court chalu Ahe**, co-produced and directed by Satyadev Dubey. Followed a highly rewarding association with Shyam Benegal for whom he photographed several documentaries, and ten feature films including **Junoon** for which he received the National award for Best colour Cinematography in 1979. **Aakrosh** is Nihalani's first feature film as a director-cinematographer, winner of the Golden Peacock at VIII international film festival 1981. The same year he headed the second unit of Richard Attenborough's **Gandhi. Vijayata, Ardha Satya, Party, Aghaat** followed. Nihalani directed **Tamas,** a 5-hour serial for Doordarshan. His **Jazere** and **Drishti** both featured in Panorama 1990 and 1991.

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र पुरस्कार

मुथिना हारा

निर्माता **एस.वी. राजेन्द्र सिंह बाबू** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **एस.वी. राजेन्द्र सिंह बाबू** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार **मुथिना हारा** को देशभक्ति का चित्रण अत्यन्त कुशलता के साथ करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN KANNADA

MUTHINA HAARA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **S.V. RAJENDRA SINGH** (Babu)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **S.V. RAJENDRA SINGH** (Babu)

Citation

The Award for the Best Feature Film in Kannada of 1990 is given to **MUTHINA HAARA** for effectively portraying patriotism.

'बाबू' के नाम से विख्यात **एस.वी. राजेन्द्र सिंह** कन्नड़ फिल्मों के प्रमुख निर्माता स्वर्गीय डी. शंकर सिंह के पुत्र हैं। उनकी माता प्रतिमा देवी भी अपने समय की प्रसिद्ध अभिनेत्री थीं। राजेन्द्र सिंह ने बचपन में कई फिल्मों में अभिनय किया और पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने पिता की कम्पनी महात्मा पिक्चर्स में काम करने लगे। निर्देशक के रूप में उनका पहला प्रयास बाल फिल्म **बागराहोल** (1977) थी। इसके बाद उन्होंने **अन्त** और **सिंहदा मरी सैन्य** (1981) फिल्में बनाईं और इन सब को कर्नाटक राज्य पुरस्कार मिले। उन्होंने कई अन्य कन्नड़ फिल्में और तेलुगु फिल्में भी बनाईं। उनकी हिन्दी फिल्में हैं **मेरी आवाज सुनो, मेरा फैसला, शरारा** और **आग का दरिया**। 1985 में उनकी फिल्म **बंदना** को सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म का पुरस्कार मिला।

S.V.RAJENDRA SINGH, popularly known as Babu, followed in the footsteps of his late father D. Shankar Singh, a pioneer of Kannada cinema and discoverer of many talents, and his mother Prathima Devi too was a veteran artiste of yester year. After graduation, Babu joined his father's company M/s Mahatam pictures and before that acted as a child artiste in a large number of films. He worked in the second unit of a Hollywood company during the shooting of Mighty Himalayan Man and made his directorial debut in 1977 with **Bagarahole,** a children's film and later **Antha** (1981) and **Simhada Mari Sainya** (1981) and all of them were awarded by Karnataka state government. He also made several other Kannada films, two in Telugu **Tena Manasalu, Prama Yuddam** and also in Hindi **Meri Awaaz Suno, Mera Faisla, Sharara, Agg Ka Dariya.** His **Bandana** won the Best Kannada Film award in 1985.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र पुरस्कार

वस्तुहारा

निर्माता **रविन्द्रनाथ** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **जी. अरविन्दन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार (मरणोपरान्त)।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार **वस्तुहारा** को प्रदान किया गया है, जिसमें समाज द्वारा दलित लोगों पर किये जाने वाले अत्याचारों का यथार्थ चित्रण उपलब्ध है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

VASTHUHARA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **RAVINDRANATH**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **G. ARAVINDAN (Posthumous)**

Citation

The award for the Best Feature Film in Malayalam of 1990 is given to **VASTHUHARA** for being a human document, depicting the cruelties meted out by society to the dispossessed.

रवीन्द्रनाथ पिछले दो दशकों से फिल्म निर्माण के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने मलयालम की दो कला फिल्मों **यारो ओराता** और **अलीशन्ते अन्वेषणम्** में अभिनय भी किया है।

मलयालम सिनेमा के महारथी **जी. अरविन्दन** का हाल ही में निधन हुआ। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन 1973 में शुरू किया और अनेक ऐसी यादगार फिल्में बनाईं जिनके कारण भारतीय सिनेमा में उनका नाम अमर हो गया है। वे चित्रकार-कार्टूनकार के रूप में भी प्रसिद्ध रहे हैं और एक मलयालम साप्ताहिक पत्रिका में उनके धारावाहिक कार्टून अत्यन्त लोकप्रिय हुए। विभिन्न नाटक मंडलियों के साथ काम करते हुए उन्होंने अनेक नाटकों का निर्माण किया। उनके निर्देशन में बनी आठ फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार और लोगों की प्रशंसा प्राप्त हुई। उनकी फिल्में हैं **उत्तरायणम्, कंचनसीता, थम्पू, इस्थापन, कुमट्टी, पोकुवेईल, चिदम्बरम्** और **ओरिडथ**।

RAVINDRANATH; Working in film production for the last two decades. Acted in lead roles in two off beat Malayalam films, **Yaro Oral** and **Aliciente Aneshwanam.**

G. ARAVINDAN, who died recently, had started his film career in 1973 and left behind a body of work for which he will be remembered for long. Though he continued to work with Kerala Rubber Board his talents and interests remained unfettered and has been a distinguished painter and cartoonist and created his popular cartoon serial, "The small man and the Big world" for a Malayalam weekly; he worked with different theatre groups and produced classical and folk plays. All the eight films directed by him **Uttarayanam, Kanchana Sita, Thampu Esthappan, Kummatty, Pokkuveyil, Chidambaram** and **Oridath** won national awards and critical acclaim.

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार

अंजलि

निर्माता **मैसर्स सुजाता प्रॉडक्शंस प्रा. लि.** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मणि रत्नम्** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार **अंजलि** को प्रदान किया गया है, जिसमें मानसिक रूप से अविकसित लोगों की भावनात्मक निकटता का बखान करने के लिए संगीत और ध्वनि का कुशल इस्तेमाल करते हुए फिल्म शैली का विलक्षण प्रयोग किया गया है और उच्चतम् सौन्दर्यपरक श्रेष्ठता को प्राप्त किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TAMIL

ANJALI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **M/s SUJATHA PRODUCTION PVT. LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **MANI RATNAM**

Citation

The award for the Best Feature Film in Tamil of 1990 is given to **ANJALI** for its unusual usage of film form, utilising music, choreography and sound with depth, achieving the highest aesthetic excellence to narrate the emotional nearness of the mentally retarded.

मणि रत्नम् वाणिज्य स्नातक है और उन्होंने एम.बी.ए. की डिग्री प्राप्त की है। निर्देशक के रूप में उनकी प्रथम फिल्म थी **पल्लवी अनुपल्लवी** (कन्नड़)। इसके बाद उन्होंने मलयालम फिल्म **उनरु** और दो तमिल फिल्मों **पगाल निलावु** और **इदया कोइल** का निर्देशन किया। इनकी तमिल फिल्मों **मौन रागम्** और **नायकन** को राष्ट्रीय पुरस्कार मिले और **अग्नि नक्षत्रम** बहुत लोकप्रिय हुई। उनकी तेलुगु फिल्म **गीतांजलि** को भी राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

MANI RATNAM, a commerce graduate and a MBA, eschewed both commerce and adminstration to get fully involved in film making. **Pallavi, Anupallavi** (Kannada) is his first directorial venture. Followed **Unuru** (Malayalam), **Pagal Nilavu, Idaya Koil** (Tamil). His Tamil films **Mouna Ragam** and **Nayagan** have bagged national awards while **Agni Natchatram** became a box office hit. His Telugu film **Gitanjali** also bagged a national award.

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र पुरस्कार

माटी मनुशुलु

निर्माता **के. मुखर्जी** और **वेद कुमार** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **बी. नरसिंग राव** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार **माटी मनुशुलु** फिल्म को जीवन के कष्टों और समस्याओं से पैदा हुई पीड़ा का एकदम यथार्थ चित्रण करने के लिए प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TELUGU

MATTI MANUSHULU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer : **K. MUKHERJEE** and **VEDA KUMAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **B. NARSING RAO**

Citation

The award for the Best Feature Film in Tamil of 1990 is given to **MATTI MANUSHULU** for portraying the stark reality of pain which has been underlined with the warm hues of life.

के. मुखर्जी आन्ध्र विश्वविद्यालय के स्नातक है और उन्होंने कई तेलुगु फिल्मों का निर्माण किया है, इनमें **जेबु डोंगा, जुडा गड्डू, ईद्दारु इदारे, निप्पुलांति निजाम** आदि शामिल हैं। उन्होंने हिन्दी फिल्म **नया कदम** का भी निर्माण किया।

वेद कुमार ने मैसूर विद्यालय से इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। वे बाल शिक्षा और बाल पत्रिकाओं के प्रकाशन के काम में सक्रिय रहे है। उन्होंने दो वृत्तचित्रों **दि सिटी** और **मा ऊरु** तथा तेलुगु कथाचित्र **दासी** के कार्यकारी निर्माता के रूप में कार्य किया है।

बी. नरसिंग राव ने ललित कलाओं में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। वे चित्रकला के साथ-साथ रंगमंच, संगीत, साहित्य, छायांकन और फिल्म निर्माण में भी सक्रिय रहे हैं। 1979 में उन्होंने **मा भूमि** फिल्म का सह-निर्माण और संगीत निर्देशन करने के साथ-साथ उसके गीत भी लिखे। 1983 में उनकी फिल्म **रंगुला कला** को सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र पुरस्कार मिला। 1988 में उनकी फिल्म **दासी** को 5 राष्ट्रीय पुरस्कार मिले और साथ ही 1989 के मास्को फिल्म समारोह में उसे प्रमाण पत्र मिला। यह फिल्म म्युनिख और कार्लोवी वेरी फिल्म समारोहों में भी दिखलाई गई। उनके वृत्तचित्र **मा ऊरु** को भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

K. MUKHERJEE, a graduate from Andhra university, has produced a number of films in Telugu **Jebu Donga, Juda Gaddu, Iddaru Iddare, Nippulanti Nijam.** He has also produced a film in Hindi **Naya Kadam.**

VEDA KUMAR, a Engineering graduate from Mysore university has been associated with child education and publications of Children's magazines. He has been the executive producer of two documentaries **The city** and **Maa Ooru** and feature film **Dasi** in Telugu.

B. NARSING RAO went to School in Alwal, a suburb of Hyderabad-Secunderabad. After his training in fine arts college he involved himself not only with painting but also with theatre, music, literature, photography and finally film making. He co-produced and composed music and lyrics for **Maa Bhoomi** (1979). He directed, produced and composed music for **Rangula Kala** which won the best Telugu feature film award in 1983. In 1988, his film **Dasi** won five national awards apart from a Diploma of Merit in Moscow film festival 1989, and was also shown in the Munich and Karlovy Vary festivals. His documentary **Maa Ooru** has also won a national award.

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से इतर भाषाओं में सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

इशानऊ (मणिपुरी)

निर्माता **अरिबम श्याम शर्मा** को रजत कमल और 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अरिबम श्याम शर्मा** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से इतर भाषाओं में सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार मणिपुरी फिल्म **इशानऊ** को मिबी प्रथा के उन दुखद परिणामों का कुशलतापूर्वक चित्रण करने के लिए प्रदान किया गया है, जिनसे एक परिवार बिखर जाता है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN LANGUAGES OTHER THAN THOSE SPECIFIED IN SCHEDULE VIII

ISHANOU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **ARIBAM SYAM SHARMA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **ARIBAM SYAM SHARMA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Languages Other Than Those Specified in Schedule VIII of the Constitution of India is given to the Manipuri film **ISHANOU** for effectively portraying the tragedy behind the institution of Meibi which unfortunately shatters a family.

अरिबम श्याम शर्मा ने विश्वभारती विश्वविद्यालय से भारतीय दर्शन और शास्त्रीय संगीत में मास्टर डिग्री प्राप्त की। मणिपुरी नाटकों में उन्होंने निर्देशक, अभिनेता और गायक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। 1974 में उन्होंने अपनी पहली फिल्म **लामजा परशुराम** का निर्माण किया। 1981 में उन्होंने **इमागी निंगथेम** फिल्म बनाई जिसे राष्ट्रीय फिल्म समारोह में रजत कमल प्राप्त हुआ और वह कलकत्ता फिल्मोत्सव में दिखाई गई। कई अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भी इस फिल्म का प्रदर्शन हुआ। उन्होंने 8 वृत्तचित्र भी बनाये, जिनमें से **संगाई** और **दि डियर आन दि लेक** को अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। **दि डियर आन दि लेक** को पिछले वर्ष सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला।

ARIBAM SYAM SHARMA mastered Indian philosophy and classical music in Viswabharati university. His involvement in Manipuri theatre saw him emerging as an actor, director and a vocalist. He made his first film **Lamja Prashuram** in 1974. In 1981, he made **Imagi Ningthem** which featured in Panorama in Calcuttta Filmotsav and also bagged a Rajat Kamal in National Film Festival. The film was also awarded the Grand Prix at the festival of Three Continents at Nantes in 1982 and shown in New York, London, Locarno, Montreal and other festivals. Two of his eight documentaries have won international awards - **Sangai,** a ballet film and **The Deer on the Lake,** the latter won the national award for Best Environment/ Preservation Film in 1990

विशेष उल्लेख

अनौबम किरणमाला

कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने मणिपुरी फिल्म **इशानऊ** में **अनौबम किरणमाला** के अभिनय का विशेष उल्लेख किया है जिसमें उन्होंने फिल्मों में पहली बार अभिनय करते हुए मानवीय द्वन्द्व के विभिन्न स्तरों को अभिव्यक्त किया है।

SPECIAL MENTION

ANOUBAM KIRANMALA

The Feature Film Jury makes a Special Mention of **ANOUBAM KIRANMALA** for her work in the Manipuri film **ISHANOU** for a debut performance depicting various levels of conflict effectively.

अनौबम किरणमाला देवी, मणिपुर के थिएटर मिरर की मुख्य अभिनेत्री हैं। वे सर्वोत्तम अभिनेत्री का राज्य पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। वे लाईहरोबा नृत्य और लोक-गीतों में काफी निपुण हैं। इशानऊ उनकी पहली फिल्म है।

ANOUBAM KIRANMALA DEVI, leading actress of Theatre Mirror of Manipur, winner of state award for best actress, proficient in Laihar-aoba dance and folk songs, makes her debut in **Ishanou.**

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

1. राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार
2. परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार
3. पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार
4. सर्वोत्तम बाल कथाचित्र पुरस्कार
5. सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र पुरस्कार
6. सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र पुरस्कार
7. सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र पुरस्कार
8. सर्वोत्तम सिंधी कथाचित्र पुरस्कार
9. सर्वोत्तम उर्दू कथाचित्र पुरस्कार

निम्नलिखित भाषाओं में प्रविष्टियाँ प्राप्त नहीं हुईं

1. गुजराती
2. कश्मीरी
3. संस्कृत

AWARDS NOT GIVEN

The Feature Film Jury did not give the following awards:

1. Nargis Dutt Award For the Best Feature Film on National Integration
2. Best Film On Family Welfare
3. Best Film on Enviornment/Conservation/Preservation
4. Best Children's Film
5. Best Marathi Feature Film
6. Best Oriya Feature Film
7. Best Punjabi Feature Film
8. Best Sindhi Feature Film
9. Best Urdu Feature Film

ENTRIES NOT RECEIVED IN THE FOLLOWING LANGUAGES:

1. Gujarati
2. Kashmiri
3. Sanskrit

ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र पुरस्कार

ग्रेवन इमेज

निर्माता **सुमितेन्द्र नाथ टैगोर** और **श्यामाश्री टैगोर** को स्वर्ण कमल और 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अभिजीत चट्टोपाध्याय** को स्वर्ण कमल और 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र का 1990 का पुरस्कार **ग्रेवन इमेज** को एक मूर्तिकार के जीवन का सुन्दर चित्रण करने, उसकी कला की विशेषताओं को उजागर करने तथा एक व्यक्ति और एक कलाकार की जीवनी को उसके समय के साथ संयोजित करने और इस उद्देश्य को फिल्म कला के उच्चतम् मूल्यों का निर्वाह करते हुए प्राप्त करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

GRAVEN IMAGE

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Producers: **SUMITENDRA NATH TAGORE** and **SHYAMASREE TAGORE**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Director: **ABHIJIT CHATTOPADHYAY**

Citation

The Award for the Best Non-Feature Film of 1990 is given to **GRAVEN IMAGE** for combining the intimate portrayal of a sculptor in terms of biographical detail, bringing in the nuances of his art, summing up to an excellent portrait of a person, an artist, a period, and achieving this with high cinematic values.

सुमितेन्द्र नाथ टैगोर ने शान्ति निकेतन से शिक्षा पाई है। वे अवनीन्द्रनाथ टैगोर के पौत्र और अलोकेन्द्रनाथ टैगोर के पुत्र हैं। वे कलाओं से सम्बन्धित रचनायें लिखते हैं और पेशे से व्यापारी हैं।

श्यामाश्री टैगोर रवीन्द्रनाथ टैगोर के परिवार की पुत्र वधू हैं। वे स्वर्गीय अभिनेता मोहन घोषाल की बेटी हैं। वह सांस्कृतिक कार्यक्रमों और पर्यटन कार्यक्रमों की संयोजिका हैं।

अभिजीत चट्टोपाध्याय फिल्म और दूरदर्शन के विभिन्न पक्षों में योगदान करते रहे हैं। उन्होंने पुरस्कृत वृत्तचित्र **छापाखानार बंगला हरफ** का निर्माण किया है। उन्होंने टैगोर के उपन्यास **गोरा** पर आधारित टेलीविजन धारावाहिक की पटकथा लिखी और **प्रथम प्रतिश्रुति** धारावाहिक का कला-निर्देशन किया।

SUMITENDRA NATH TAGORE, a graduate and a student of Santiniketan, is the grandson of Abanindranath Tagore and son of Alokendranath Tagore; a writer of the arts and a businessman by profession.

SHYAMASREE TAGORE, a great grand daughter-in-law of Rabindranath Tagore, she is the daughter of the late actor Mohan Ghosal and the family owned the famous Radha Film studio. Widely travelled, she is an impressario of notable cultural events and Tourism programmes.

ABHIJIT CHATTOPADHYAY, a man of varied interests and maker of the award winning documentary **Chhapakhanar Bangla Haraf;** Scriptwriter of Calcutta TV serial Tagore's **Gora** and Art Director of Doordarshan serial **Pratham Pratishruti.**

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म पुरस्कार

लोलाब

निर्माता **हिलमैन फिल्म प्रा.लि.** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **मोहि-उद्दीन मिर्जा** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म का 1990 का पुरस्कार **लोलाब** को दिया गया है जिसमें दूरदराज के एक इलाके के जन-जीवन का चित्रण प्रामाणिकता, सहानुभूति और सहजता के साथ-साथ आस्थापूर्ण ढंग से किया गया है और संबंधित लोगों को इस फिल्म के निर्माण में कठोर परिश्रम करना पड़ा है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ ETHNOGRAPHIC FILM

LOLAAB

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producers: **HILLMAN FILM PVT. LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **MOHI-UD-DIN MIRZA**

Citation

The Award for the Best Anthropoligical/Ethnographic Film of 1990 is given to **LOLAAB** for the dedication and conviction with which life in a remote area of the land has been portrayed, with intimacy, sympathy, authenticity and without being condescending, and for the apparent hard work that has gone into the production.

मोहि-उद्दीन मिर्ज़ा ने मद्रास के फिल्म टेक्नालोजी संस्थान से निर्देशन और पटकथा में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने **ओवल क्राफ्ट, कामधेनु रिडीम्ड** फिल्मों के लिए राष्ट्रीय और बर्लिन फिल्म समारोह में अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये। उनकी फिल्म **सबाबुल** को आई.डी.पी.ए. पुरस्कार मिला। वे 40 से अधिक गैर-कथाचित्रों का निर्देशन कर चुके हैं। इनमें दूरदर्शन फिल्म **ए फेस इन दी क्राऊड** भी शामिल है। वे वृत्तचित्र निर्माता संघ की वृत्तचित्र उप-समिति के अध्यक्ष भी रहे हैं।

MOHI-UD-DIN-MIRZA, Diploma holder in Direction and Screenplay-writing from Institute of Film Technology Madras; recipient of national awards for **Oval Crop, Kamadhenu Redeemed** and international award at Berlin; recipient of IDPA award for **Subabul;** directed over forty non-fiction films including Doordarshan's **A Face in the Crowd;** currently working on **The Shape of Water:** served as Chairman of Documentary Sub-Committee for Documentary Producer's Association.

सर्वोत्तम जीवनी फिल्म पुरस्कार

बाबा

निर्माता मैसर्स **मीडियार्ट फिल्म्स प्रा.लि.** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राजीव मेहरोत्रा** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम जीवनी फिल्म का 1990 का पुरस्कार **बाबा** फिल्म को दिया गया है जिसमें हमारे समय के एक असाधारण पुरुष जो कि मानवीय चेतना से ओत-प्रोत हैं, के जीवन का भावनापूर्ण चित्रण करने तथा उन सामाजिक उद्देश्यों को सामने लाने का प्रयास करने के लिए दिया गया है जिनके लिये बाबा आमटे ने अपना जीवन समर्पित कर दिया और सच्ची लगन तथा अथक भाव से जिनकी प्राप्ति के लिए वे संघर्ष कर रहे हैं।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

BABA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producers: **MEDIART FILMS PVT. LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RAJIV MEHROTRA**

Citation

The Award for the Best Biographical Film of 1990 is given to **BABA** for the relaxed and sensitive portrayal of an extraordinary man of our times, bubbling with humanity, portraying the social causes for which Baba Amte has dedicated his life, with a sense of deep involvement, never descending to eulogising.

राजीव मेहरोत्रा ने कोलम्बिया विश्वविद्यालय से निर्देशन की स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। उनकी शिक्षा-दीक्षा आक्सफोर्ड और दिल्ली विश्वविद्यालय में हुई। वे निर्देशक, छायाकार, सम्पादक, पटकथा लेखक आदि विभिन्न रूपों में काम करते हैं। हाल ही में उन्होंने अमेरिका के एक टी.वी. नेटवर्क के लिए दलाईलामा के बारे में **ओशियन ऑफ विशडम** का निर्माण किया। उन्होंने दूरदर्शन के लिए **स्टोरी ऑफ दिल्ली, सेक्यूलरिज़्म** आदि फिल्में भी बनाई हैं। उन्होंने दूरदर्शन के कन्वर्सेशन्स कार्यक्रम के अन्तर्गत अनेक प्रमुख लोगों से भेंटवार्तायें कीं। दूरदर्शन पर समाचार वाचक, निर्माता, प्रस्तुतकर्ता, संवाददाता आदि रूपों में काम करने के अलावा राजीव मेहरोत्रा रंगमंच निर्देशक और लेखक भी हैं।

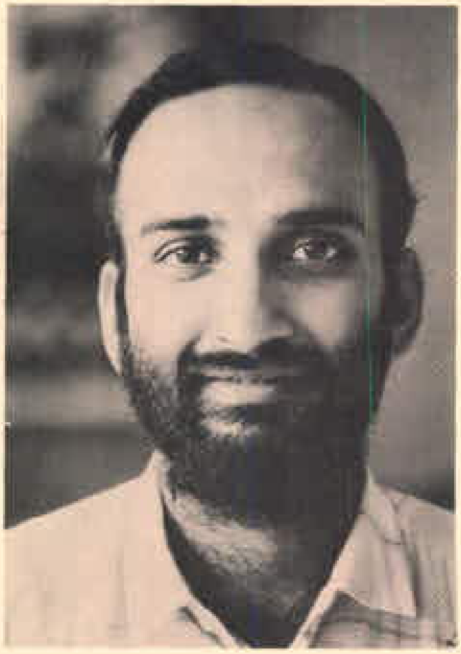

RAJIV MEHROTRA, a post-graduate in Film Direction from Columbia university and an undergraduate of Oxford and Delhi university; has been working on both sides of the camera as a Director, cinematographer, narrator, editor and script writer. His current and recent assignments include **Ocean of wisdom, A Portrait of Dalai Lama** (for PBS network in USA), **The Story of Delhi, Conversations** (with Aga Khan, Ravi Shankar, Stephen Spender, Dalai Lama, JRD Tata), **Secularism,** all for Doordarshan plus **A Matter of Motherhood** (for UNICEF). His other works include **China Unveiled, Restoring Shiva's Locks, The Barren Harvest, Stealthy Scourage? Roots & Wings, Adventure of a Quest, Escape To Nowhere.** Correspondent, Newscaster, producer, presenter, stringer to Television and also a writer and theatre director.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म पुरस्कार

फिगर्स ऑफ थाट और वास्तु माराबु

निर्माता **अरूण खोपकर** (फिगर्स ऑफ थाट) और **मिन बिम्बंगल** (वास्तु माराबु) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अरूण खोपकर** (फिगर्स ऑफ थाट) और **बाला कैलाशम्** (वास्तु माराबु) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का 1990 का पुरस्कार **फिगर्स ऑफ थाट** को तीन चित्रकारों की कला का अत्यन्त सुन्दर और सहज चित्रण करने के लिए प्रदान किया गया है।

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का 1990 का पुरस्कार **वास्तु माराबु** को भी प्रदान किया गया है जिसमें परम्परागत शिल्पी के दर्शन का चित्रण करते हुए भारतीय मूर्तिकारों की सामूहिक चेतना की खोज की गई है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

FIGURES OF THOUGHT and VAASTU MARABU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producers: **ARUN KHOPKAR** (for **FIGURES OF THOUGHT**) and **MIN BIMBANGAL** (for **VAASTU MARABU**)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Directors: **ARUN KHOPKAR** (for **FIGURES OF THOUGHT**) and **BALA KAILASAM** (for **VAASTU MARABU**)

Citation

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1990 is given to **FIGURES OF THOUGHT** for the exceptionally beautiful portrayal of the work of three painters, with verve, and unpretentious, but excellent visuals.

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1990 is also given to **VAASTU MARABU** for portraying the philosophy of the traditional "shilpi", transcending the physical form of the sculpture, exploring the collective unconscious of Indian sculptors.

अरूण खोपकर विज्ञान के स्नातक है और उन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से छायांकन का डिप्लोमा प्राप्त किया है। रूसी, जर्मनी, और इतालवी भाषाओं के जानकार खोपकर ने 26 लघु फिल्मों का निर्देशन किया है और उनकी पटकथा लिखी है। दूरदर्शन के लिए भी उन्होंने फिल्में बनाई है। उन्होंने पुरस्कृत पुस्तक **गुरुदत्त-तीन अंकी शोकान्तिका** लिखी है और मणि कौल की फिल्म **आषाढ़ का एक दिन** में अभिनय भी किया।

बाला कैलाशम् इलैक्ट्रानिक इंजीनियरी के स्नातक है। उन्होंने अमेरिका में आयोवा विश्वविद्यालय से फिल्म तथा टेलीविजन निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म **चोलामंडल** थी जो कलाकारों की सहकारी संस्था के बारे में थी। बाद में उन्होंने **माइग्रेशन टू दि गल्फ, केरला, दी रिटर्न फेस** और **दि लिविंग ट्रेडीशन: ए शिल्पी स्पीक्स** फिल्में बनाई।

ARUN KHOPKAR, a science graduate, diploma holder in cinematography (FTII), and in Russian, German and Italian languages; scripted and directed 26 short films (education & Social Welfare), TV producer, visiting professor, FTII, Film Archive, Film Direction school (Moscow), British Council, USIS Visitorship, Homi Bhabha Fellowship; author of the award winning book **Guru Dutt-Teen Anki Shokantika** and lead player in Mani Kaul's **Ashadh Ka Ek Din.**

BALA KAILASAM, a Electronic Engineering graduate, trained in Film and TV production (university of Iowa, USA); first film on an artists' commune **Cholamandal,** later films-**Migration to the Gulf, Kerala—The Return Phase** and **The Living Tradition: A Shilpi speaks.**

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म पुरस्कार (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित)

बायोटैक्नोलॉजी: सम पोसीबिल्टीज

निर्माता **गुलबहार सिंह** (फिल्म प्रभाग के लिए) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **निशीथ बनर्जी** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित) का 1990 का पुरस्कार **बायोटैक्नोलॉजी: सम पोसीबिल्टीज** को दिया गया है जिसमें उन भावी आयामों का परिचय दिया गया है जो नये युग में वैज्ञानिक दृष्टि से व्यावहारिक होने की संभावनाएं अपने में संजोए हुए हैं।

AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM (INCLUDING ENVIRONMENT AND ECOLOGY FILM)

BIOTECHNOLOGY: SOME POSSIBILITIES

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **GUL BAHAR SINGH** (For Films Division)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **NISHITH BANERJEE**

Citation

The Award for the Best Scientific Film (including Environment and Ecology Film) of 1990 is given to **BIOTECHNOLOGY: SOME POSSIBILITIES** for treading through new horizons of the futuristic, yet scientifically realisable possibilities at the threshold of a new era, with technical finesse.

गुलबहार सिंह विज्ञान के स्नातक हैं। उन्होंने **स्ट्रीट अर्चिन्स, इकोनोमी ऑफ हाई स्पीड डीजल ऑयल, थर्ड हैण्ड, अनुकरण, उजाला, बायोटेक्नोलॉजी, वो छः साल, सवा सेर गेहूँ** आदि फिल्में बनाई हैं। कलकत्ता टेलीविजन के लिए उन्होंने **सम्पर्क** धारावाहिक भी तैयार किया है।

निशीथ बनर्जी फिल्म प्रभाग के भूतपूर्व उप-मुख्य निर्माता हैं। उन्होंने 50 से अधिक वृत्तचित्रों का निर्माण किया है। वे अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। वे कलकत्ता दूरदर्शन के लिए शरत चन्द्र चटर्जी की कहानी पर तेरह भागों का सीरियल बना रहे हैं।

GUL BAHAR SINGH, a science graduate, worked as an under study in direction; made **Street Urchins, Economy of High Speed Disel Oil, Third Hand, Anukaran, Ujala, Biotechnology, Woh Chhay Saal, Sawa Sher Gehun, Samparka** (Serial for Calcutta TV), and currently **Bayen** based on a story by Mahasweta Devi.

NISHITH BANERJEE, Graduate, former Dy. Chief producer, Films Division; maker of over 50 documentaries, winner of national and international awards (Berlin, Milan, Venice, San Sebastian), current assignments include **Late M.N. Roy** and a 13-episode TV serial on Sarat Chatterjee's story for Calcutta Doordarshan.

सर्वोत्तम कृषि फिल्म पुरस्कार (पशु पालन, दुग्ध उत्पादन आदि जैसी कृषि से संबंधित विषयों सहित)

गोल्डन अर्थ

निर्माता **बी.ए.आई.एफ. डेवलपमेंट रिसर्च फाऊंडेशन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **विश्राम रेवंकर** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कृषि फिल्म (पशु पालन, दुग्ध उत्पादन आदि जैसे कृषि से संबंधित विषयों सहित) 1990 का पुरस्कार **गोल्डन अर्थ** को प्रदान किया गया है, जिसमें सिनेमा माध्यम की गंभीरता को बनाये रखते हुए मुद्रा और जल संरक्षण की जानकारी बहुत सहज किन्तु प्रभावशाली ढंग से दी गई है।

AWARD FOR THE BEST AGRICULTURAL FILM (TO INCLUDE SUBJECTS RELATED TO AND ALLIED TO AGRICULTURE LIKE ANIMAL HUSBANDARY, DAIRYING ETC.)

GOLDEN EARTH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **VISHRAM REVANKAR**

Citation

The Award for the Best Agricultural Film (to include subjects related to and allied to agriculture like animal husbandary, dairying etc.) of 1990 is given to **GOLDEN EARTH** for very effective communication of the techniques of soil and water conservation, in a simple manner, without being simplistic with the medium.

विश्राम रेवंकर वृत्तचित्रों और वीडियो फिल्मों के निर्माता हैं। 1985 में उन्हें समाज कल्याण की सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने **स्वीकार** फिल्म का निर्देशन और पटकथा लेखन किया, जिसे ब्रिटिश मेडीकल फाउंडेशन का स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। वे पुणे के भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान में सहायक प्रोफेसर के रूप में भी काम कर चुके हैं।

VISHRAM REVANKAR, Documentary/video film maker, winner of national awards for Best Social Welfare and Best Scientific film (1985 & 1990), Scripted and directed **Sweekar,** winner of British Medical Foundation's Gold Medal; formerly Astt. professor, Educational TV film, Film Institute, Pune.

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म पुरस्कार

प्रतिक्रिया

निर्माता **राहत यूसुफी** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राहत यूसुफी** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म का 1990 का पुरस्कार **प्रतिक्रिया** को दिया गया है जिसमें पर्यावरण की समस्या का निचले स्तर पर समाधान करने का स्पष्ट संदेश निहित है और इसके प्रति वचनबद्धता का परिचय देते हुए यह दर्शाया गया है कि किस तरह आम लोगों को इस काम में सहभागी बना कर बढ़िया परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT/ CONSERVATION/ PRESERVATION FILM

PRATIKRIYA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **RAHAT YUSUFI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RAHAT YUSUFI**

Citation

The Award for the Best Environment/Conservation/Preservation Film of 1990 is given to **PRATIKRIYA** for dealing with the problem of the environment at the grassroots level, combining the talent to handle ordinary people and get excellent performances out of them, with a clarity of message and commitment to the cause.

राहत यूसुफी विज्ञान के स्नातक हैं और उन्होंने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान पुणे से निर्देशन तथा पटकथा लेखन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। वे 16 एम.एम. की फिल्में बनाते हैं। उनके वृत्तचित्र समाजशास्त्रीय और मानवशास्त्रीय विषय पर आधारित होते हैं और उनमें कथा का प्रवाह भी रहता है।

RAHAT YUSUFI, a science graduate and diploma holder, FTII Pune in direction and screenplay-writing; makes films in 16 mm and his documentaries are transformed into pieces of fiction based on sociological and anthropological insights.

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार

सेफ ड्रिंकिंग वाटर फॉर आल

निर्माता **आर. कृष्ण मोहन** (फिल्म प्रभाग के लिए) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **महेश पी. सिन्हा** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का 1990 का पुरस्कार **सेफ ड्रिंकिंग वाटर फॉर आल** को दिया गया है जिसमें पीने के पानी की बुनियादी समस्या का चित्रण किया गया है और प्रचार की हद तक न जाते हुए, इस मसले को हल करने के लिए किए जा रहे उपायों की जानकारी दी गई है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

SAFE DRINKING WATER FOR ALL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **R. KRISHNA MOHAN** (For Films Division)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **MAHESH P. SINHA**

Citation

The Award for the Best Film on Social Issues of 1990 is given to **SAFE DRINKING WATER FOR ALL** for effectively portraying the fundamental problem of drinking water and the steps being taken to solve the problem, without descending to propaganda.

आर. कृष्ण मोहन ने लोक प्रशासन में स्नातकोत्तर डिग्री और पत्रकारिता में डिप्लोमा प्राप्त किया है। वे फिल्म प्रभाग में पटकथा लेखक रहे। उन्होंने 1982 में निर्देशन के क्षेत्र में पदार्पण किया और 40 से अधिक फिल्में बनाई हैं। इस समय वे फिल्म प्रभाग में संयुक्त मुख्य निर्माता के पद पर काम कर रहे हैं। उनकी फिल्मों में **त्यागब्रह्म, क्राइसिस इन श्रीलंका, गिव पीस ए चान्स, टीयर्स एन्ड स्माइल्स, हम कौन हैं, ए रिपोर्ट ऑन कश्मीर, राम जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद** आदि शामिल हैं। पत्र-पत्रिकाओं में उनकी फिल्म समीक्षायें और लेख भी प्रकाशित होते रहते हैं।

महेश पी. सिन्हा ने फिल्म प्रभाग में कैमरा मैन के रूप में काम शुरू किया। 1973 में वे न्यूजरील अधिकारी बने और उन्होंने **भूकम्प, पोप की यात्रा, राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों का सम्मेलन** और **गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन** जैसी घटनाओं का फिल्मांकन किया। वे राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की विदेश यात्राओं के दौरान उनके साथ जाते रहे हैं। वे सर्वोत्तम न्यूजरील कैमरामैन और सर्वोत्तम समाचार चलचित्र पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। उनकी फिल्मों में **फर्स्ट टैस्ट ट्यूब बेबी, इंडियाज नैवल माइट, चाचा नेहरू** शामिल हैं। वे अंटार्कटिका के लिए चौथे भारतीय वैज्ञानिक दल के सदस्य थे।

R. KRISHNA MOHAN, Masters degree in Public Administration and diploma in Journalism; script-writer, Films Division, took to Direction in 1982 and has made over 40 films; reviewer and contributor to journals and newspapers; at present, Joint Chief Producer, Films Division (Newsreel). His films include **Thygabrahmam, Crisises in Sri Lanka, Give Peace A Chance, Tears and Smiles, Hum Kaon Hai?, A Report on Kashmir, Ramjanamabhoomi-Babri Masjid.**

MAHESH PRATAP SINHA, joined Films Division as cameraman, Newsreel officer in 1973; filmed Earthquake, The Pope's Visit, CHOGM and NAM summits, accompanied Presidents and Prime Ministers abroad, winner of Best Newsreel Cameraman award and Best News Magazine Award. His films include **First Test Tube Baby, India's Naval Might, Chacha Nehru** and member, 4th Indian Scientific Expedition to Antarctica.

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म पुरस्कार

डक्स आऊट ऑफ वाटर और नतुन आशा

निर्माता **डी. गौतमन** (फिल्म प्रभाग के लिए) (डक्स आऊट ऑफ वाटर) और **ब्यूटी सभापंडित** (नतुन आशा) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राज गोपाल राव** (डक्स आऊट ऑफ वाटर) और **अरूप बोरठाकुर** (नतुन आशा) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म का 1990 का पुरस्कार **डक्स आऊट ऑफ वाटर** को सुन्दर बिम्बों की सहायता से एक सामान्य विषय को सौन्दर्य शास्त्रीय श्रेष्ठता के स्तर तक ले जाने के लिए प्रदान किया गया है।

ये पुरस्कार **नतुन आशा** फिल्म को भी दिया गया है जो शैली और विषय वस्तु की दृष्टि से एक श्रेष्ठ शिक्षाप्रद फिल्म है।

AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/ MOTIVATIONAL/INSTRUCTIONAL FILM

DUCKS OUT OF WATER and NATUN ASHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producers: **D. GAUTAMAN** (for **DUCKS OUT OF WATER**) and **BEAUTY SABHA-PANDIT** (for **NATUN ASHA**)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Directors: **RAJ GOPAL RAO** (for **DUCKS OUT OF WATER**) and **ARUP BORTH-AKUR** (for **NATUN ASHA**)

Citation

The Award for the Best Educational/ Motivational/ Instructional Film of 1990 is given to **DUCKS OUT OF WATER** for the beautiful imagery, elevating a routine theme to levels of aesthetic excellence.

The Award for the Best Educational/ Motivational/ Instructional Film of 1990 is also given to **NATUN ASHA** for being an instructional film in which form and content compete for excellence.

डी. गौतमन ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे से डिप्लोमा प्राप्त किया है। वे मलयालम फिल्मों के प्रसिद्ध निर्देशक स्वर्गीय रामू कैरियत के मुख्य सहायक रहे। वे बाद में फिल्म प्रभाग में शामिल हो गए और इस समय उप-मुख्य निर्माता के रूप में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने 60 से अधिक फिल्में बनाई हैं।

ब्यूटी सभापंडित 1984 से वृत्तचित्रों का निर्माण कर रही हैं। उनकी फिल्मों में **डी.एच. वोव, नतुन प्रभात, जीवन संग्राम** (सभी असमिया) आदि शामिल हैं। उन्होंने टेली-फिल्म **गृहहंता** और टी.वी. धारावाहिकों **देवता** तथा **लहर** में अभिनय किया है।

राज गोपाल राव इंजीनियरी में स्नातक हैं और उन्होंने छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। फिल्म प्रभाग में सहायक कैमरा मैन, समाचार-चित्र अधिकारी और उप-निदेशक जैसे पदों पर काम करने के बाद अब वे फिल्म प्रभाग दिल्ली में निदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने 30 से अधिक वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं।

अरूप बोरठाकुर ने ब्यूटी सभापंडित के वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है। उन्होंने 30 से अधिक नाटकों का निर्देशन किया है और 5 नाटक लिखे हैं। वे असमिया में 3 कथाचित्रों के सहायक निर्देशक रहे और **दूर शीमाना** तथा **नाबो** कथाचित्रों का निर्देशन किया है। वे कहानीकार भी हैं।

D. GAUTAMAN, diploma holder (First class First) FTII, chief assistant to late Ramu Kariat of Malayalam cinema; joined Films Division, now Dy. Chief Producer, Films Division, Bangalaore and made over 60 Documentaries.

BEAUTY SABHAPANDIT, documentary producer since 1984; made **DH, Wow, Natun Prabhat, Jiban Sangram** (Assamese) and acted in telefilm **Grahahanta** and TV serials **Deuta** and **Lahar.**

RAJ GOPAL RAO, graduate, diploma holder, Civil Engineering & Cinematography; joined Films Division as asstt. cameraman, newsreel officer, deputy director and now Director, Films Division, Delhi; directed over 30 documentaries, winner of national and international awards.

ARUP BARTHAKUR, director of documentaries produced by Beauty Sabhapandit; asstt. director to three feature films in Assamese, story-writer-director of **Door Sheemana** and **Nabow** feature films; directed over 30 dramas and wrote five plays.

सर्वोत्तम खोजी/साहसिक फिल्म पुरस्कार (खेल सहित)

दि इंडीजीनियस गेम्स ऑफ मणिपुर

निर्माता **अरिबम श्याम शर्मा** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **अरिबम श्याम शर्मा** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम खोजी/साहसिक फिल्म (खेल सहित) का 1990 का पुरस्कार **दि इंडीजीनियस गेम्स ऑफ मणिपुर** को दिया गया है जिसमें खेल कूद के आनन्द की झलक दिखाते हुए मणिपुर के परम्परागत खेलों और विश्व के खेलों के बीच ऐतिहासिक संबंधों की तलाश की गई है।

AWARD FOR THE BEST EXPLORATION/ ADVENTURE FILM (TO INCLUDE SPORTS)

THE INDIGENOUS GAMES OF MANIPUR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **ARIBAM SYAM SHARMA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **ARIBAM SYAM SHARMA**

Citation

The Award for the Best Exploration/ Adventure Film (to include Sports) is given to **THE INDIGENOUS GAMES OF MANIPUR** for sharing the primordial joys of spontaneous sports, tracing some historic links between the traditional sports of Manipur and the world at large.

अरिबम श्याम शर्मा ने विश्वभारती विश्वविद्यालय से भारतीय दर्शन और शास्त्रीय संगीत में मास्टर डिग्री प्राप्त की। मणिपुरी नाटकों में उन्होंने निर्देशक, अभिनेता और गायक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। 1974 में उन्होंने अपनी पहली फिल्म **लामजा परशुराम** का निर्माण किया। 1981 में उन्होंने **इमागी निंगथेम** फिल्म बनाई जिसे राष्ट्रीय फिल्म समारोह में रजत कमल प्राप्त हुआ और वह कलकत्ता फिल्मोत्सव में दिखाई गई। कई अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भी इस फिल्म का प्रदर्शन हुआ। उन्होंने 8 वृत्तचित्र भी बनाये, जिनमें से **संगाई** और **दि डियर आन दि लेक** को अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। **दि डियर आन दि लेक** को पिछले वर्ष सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला।

ARIBAM SYAM SHARMA mastered Indian philosophy and classical music in Viswabharati university. His involvement in Manipuri theatre saw him emerging as an actor, director and a vocalist. He made his first film **Lamja Prashuram** in 1974. In 1981, he made **Imagi Ningthem** which featured in Panorama in Calcuttta Filmotsav and also bagged a Rajat Kamal in National Film Festival. The film was also awarded the Grand Prix at the festival of Three Continents at Nantes in 1982 and shown in New York, London, Locarno, Montreal and other festivals. Two of his eight documentaries have won international awards - **Sangai,** a ballet film and **The Deer on the Lake,** the latter won the national award for Best Environment/ Preservation Film in 1990

सर्वोत्तम खोजी फिल्म

उनां मित्रां दी याद प्यारी (मित्रों की याद में)

निर्माता **आनन्द पटवर्धन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **आनन्द पटवर्धन** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम खोजी फिल्म का 1990 का पुरस्कार **उनां मित्रां दी याद प्यारी** को दिया गया है जिसमें समकालीन विस्फोटक परिस्थितियों में सच्चाई की राह पर चलने का चित्रण निष्पक्षता साहस और सहजता के साथ किया गया है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

UNA MITRAN DI YAAD PYAARI (IN MEMORY OF FRIENDS)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **ANAND PATWARDHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **ANAND PATWARDHAN**

Citation

The Award for the Best Investigative Film of 1990 is given to **UNA MITRAN DI YAAD PYAARI (IN MEMORY OF FRIENDS)** for the ardent pursuit of truth in an explosive contemporary atmosphere, with objectivity, courage and lucidity.

आनन्द पटवर्धन जाने-माने वृत्तचित्र निर्माता-निर्देशक हैं। उनकी फिल्मों में **प्रिजनर्स ऑफ कांशियस, ए टाइम टू राइज, बाम्बे अवर सिटी** उल्लेखनीय हैं। उनकी फिल्मों को अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं।

ANAND PATWARDHAN, producer-director of **Prisoners of Conscience,** (Tyne Award, Newcastle), **A Time To Rise** (Silver Dove, Leipzig, Tyne Award, Newcastle), **Bombay Our City** winner of national award, Special Jury Award (France) and Filmfare award.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

उस्ताद अमजद अली खान

निर्देशक **गुलज़ार** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

निर्णायक मंडल का 1990 का विशेष पुरस्कार **गुलज़ार** को **उस्ताद अमजद अली खान** के निर्देशन के लिए दिया गया है, जिसमें एक व्यक्ति और उसके संगीत के सारतत्व को उदभासित किया गया है और यह दर्शाया गया है कि किसी कलाकार के गुण अपने आप में विशेष होते हुए भी वह सतत परम्परा के अंग के रूप में लोगों से भिन्न नहीं होता।

SPECIAL JURY AWARD

USTAD AMJAD ALI KHAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **GULZAR**

Citation

The Special Jury Award of 1990 is given to **GULZAR** as the Director of the film **USTAD AMJAD ALI KHAN** for bringing out the essence of a man and his music, emphasising the qualities of an artiste being distinct, but not distant from the people, as part of an unbroken tradition.

गुलज़ार मूल रूप से कवि हैं और 40 के दशक में प्रगतिशील लेखक आंदोलन से जुड़े रहे। फिल्मों में गीतकार, पटकथा लेखक और निर्देशक के रूप में सक्रिय रहे हैं। उन्होंने **आंधी, कोशिश, अचानक, किताब, मीरा, अंगूर** और **इज़ाज़त** जैसी फिल्मों का पटकथा लेखन और निर्देशन किया है। **मौसम** फिल्म के लिए उन्हें सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार और **कोशिश** के लिए सर्वोत्तम पटकथा लेखक का पुरस्कार मिला। 1988 में उन्हें **इज़ाज़त** फिल्म के लिए सर्वोत्तम गीतकार का पुरस्कार प्राप्त हुआ। गुलज़ार ने कविता, कहानी और उपन्यासों की रचना की है। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

GULZAR, Lyricist, script-writer and director by profession, has been basically a poet of modern sensitivity and was closely associated with the progressive writer's movement in the 40's. Since his introduction to cinema he has written and directed films like **Aandhi, Koshish, Achanak, Kitab, Meera, Angoor** and **Ijaazat** and won the Best Director's award for **Mausam,** the Best Sereenplay writer's award for **Koshish** and in 1988, the Best Lyricist award for **Ijaazat.**
Gulzar is the author of three books of poetry, short story and novelette; author of a dozen books for children his story named Ekta won the NCRT award in 1989. Born in Jhelum in Pakistan in 1936 he had his schooling in Delhi and later settled in Bombay.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म (70 मिनट की अवधि तक की फिल्में)

आमुख

निर्माता **भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान** के निदेशक को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक **राजकुमार** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म का 1990 का पुरस्कार **आमुख** को दिया गया है जिसमें एक महिला के व्यक्तिगत अधिकारों का सशक्त चित्रण एक ऐसी घटना के भावनात्मक प्रभाव के माध्यम से किया गया है जिसमें वह एक सामाजिक वर्जना के विरोध में उठ खड़ी होती है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM (FILMS NOT EXCEEDING 70 MINUTES DURATION)

AAMUKH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producers: **THE DIRECTOR, FILM & TV INSTITUTE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RAJ KUMAR**

Citation

The Award for the Best Short Fiction Film of 1990 is given to **AAMUKH** for being a forceful statement of the personal rights of a woman through the emotional impact of one incident in which she rises against a social taboo.

राज कुमार ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे से निर्देशन का डिप्लोमा प्राप्त किया है। **आमुख** उनकी डिप्लोमा फिल्म है। इससे पहले वे हरियाणा राज्य की रंगमंच गतिविधियों में सक्रिय रहे हैं।

RAJ KUMAR, an arts graduate actively associated with dramatic activities before joining FTII; completed the course in Film Direction and AAMUKH is his diploma film.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

संतोष सिवन (मोहिनीयाट्टम के लिए) और **विक्टर बनर्जी** (व्हेअर नो जर्नीज एण्ड के लिए)

छायाकार **संतोष सिवन** (मोहिनीयाट्टम) और **विक्टर बनर्जी** (व्हेयर नो जर्नीज एण्ड) को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

फिल्म की प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशालाएं: **प्रसाद फिल्म प्रयोगशाला** को (व्हेअर नो जर्नीज एण्ड (और **चित्रांजली फिल्म प्रयोगशाला** को (मोहिनीयाट्टम) के लिए रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम छायांकन का 1990 का पुरस्कार **संतोष सिवन** को **मोहिनीयाट्टम** फिल्म में नृत्यांकन और उसकी कला को कैमरे के माध्यम से लयपूर्ण सौन्दर्य के साथ मनोहारी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए प्रदान किया गया है।

गैर-कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम छायांकन का 1990 का पुरस्कार **विक्टर बनर्जी** को भी **व्हेअर नो जर्नीज एण्ड** के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने भारत की अमर प्राकृतिक सुन्दरता को नाटकीय ढंग से अत्यन्त आकर्षक शैली में उद्घाटित किया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

SANTOSH SIVAN for **MOHINIYATTAM** and **VICTOR BANERJEE** for **WHERE NO JOURNEYS END.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameramen: **SANTOSH SIVAN** for **MOHINIYATTAM** and **VICTOR BANERJEE** for **WHERE NO JOURNEYS END.**

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to the laboratories PRASAD FILM LABORATORIES for **WHERE NO JOURNEYS END** and **CHITRANJALI LABORATORIES** for **MOHINIYATTAM.**

Citation

The award for the Best Cinematography for a Non-Feature Film of 1990 is given to **SANTOSH SIVAN** for his work in the film **MOHINIYATTAM** for the evocative, lyrical beauty with which the camera has painted the dancer and her milieu.

The award for the Best Cinematography for a Non-Feature Film of 1990 is also given to **VICTOR BANERJEE** for his work in the film **WHERE NO JOURNEYS END** for the dramatic manner in which the Indian landscape unfolds, seducing the viewer with the timeless beauty of India.

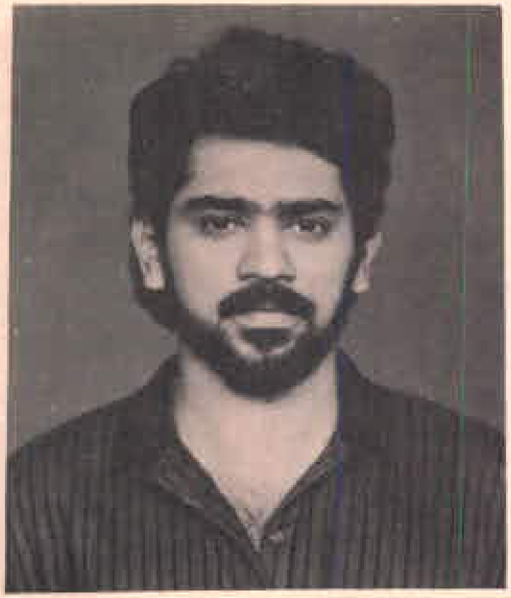

संतोष सिवन ने भारतीय फिल्म एवम् टेलीविज़न संस्थान पुणे से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने पिछले वर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त लघु फिल्म **स्टोरी ऑफ टिलूबू** का निर्माण, निर्देशन और छायांकन किया। उन्होंने एक दर्जन से अधिक लघु फिल्मों का छायांकन किया है। जिन कथाचित्रों के लिए उन्होंने छायांकन किया है, उनमें हिन्दी फिल्म **राख** और मलयालम फिल्में **निधियूडे कथा, ओरु मेमासा पुलरियिल, मिस्टर डेविड, कदाल तिरूथु, मिथ्या, इन्द्रजालम, व्यूहम्** आदि शामिल हैं।

विक्टर बनर्जी ने अपना फिल्मी जीवन 1977 में शुरू किया। उन्होंने सबसे पहले **शतरंज के खिलाड़ी** में अभिनय किया। उन्हें **घरे बायरे** फिल्म में अभिनय के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। अंग्रेजी फिल्म **ए पैसेज टू इंडिया** में अभिनय के लिए उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म **एन आगस्ट रिक्वीम** को बर्लिन फिल्म समारोह में भेजा गया। उन्होंने बंगला विज्ञापन फिल्म **आगून** का निर्देशन और उसमें अभिनय भी किया। निर्देशक के रूप में व्हेअर नो जर्नीज़ एंड उनकी तीसरी फिल्म है।

SANTOSH SIVAN, a diploma holder in cinematography from Pune Film Institute, he produced, directed and photographed the 1989 national award winning short film **Story of Tiblu,** and also photographed over a dozen short films. His cinematography for Feature Films include **Raakh** (Hindi), **Nidhiyude Katha** (Malayalam), **Oru May Masa Pulariyil, David Mr. David, Mandatheum Kettathem, Kadal Theerathu, Kalal Pada, Varthamanakalam, Mithya, Indraialam, Vyuham.**

VICTOR BANERJEE, beginning his film career in 1977, Victor was first seen as an actor in **Shatranj ke Khilari,** and then went on to receive a National Award for his performance in **Ghaire Baire.** He has acted in **A Passage to India** (David Lean), and received International acclaim.

His first directorial venture **An August Requiem** was Indian official entry in Berlin Film Festival. He directed and acted in a Bengali commercial **Aagoon** and also acted in **Debota,** the latter a super hit of 1990. **Where no Journeys End** is his third directorial venture.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

सुजीत सरकार

ध्वनि आलेखक **सुजीत सरकार** को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

गैर-कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1990 का पुरस्कार **सुजीत सरकार** को **मोहर** फिल्म में उनके काम के लिए दिया गया है, जिसमें उन्होंने महान गायिका कणिका बन्दोपाध्याय की गायन कला के माध्यम से रवीन्द्र संगीत की परम्परा का परिचय कराते हुए गुरुदेव की उपस्थिति को साकार कर दिखाया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

SUJIT SARKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the audiographer **SUJIT SARKAR**

Citation

The Award for the Best Audiography for Non-Feature Film of 1990 is given to **SUJIT SARKAR** for his work in the film **MOHOR** for preserving the aura of Gurudev's presence by transporting the audience through the years in the flowering of Rabindra Sangeet, embellishing the performance of the great singer Kanika Bandopadhyay.

सुजीत सरकार ने 1953 में न्यू थियेटर्स फिल्म कम्पनी में सहायक ध्वनि आलेखक के रूप में काम शुरू किया और उन्हें नितिन बोस, हेमचन्द्र और देवकी बोस जैसे अग्रणी फिल्मकारों के साथ काम करने का अवसर मिला। 1957 में वे मुख्य ध्वनि आलेखक बन गये और उन्होंने हेमचन्द्र की **नतुन फसल**, तपन सिन्हा की **झिन्दर बन्दी**, अजय कार की **सत्यजीत**, सत्यजीत राय की **अभिजान, गोपी गायेन बाघा बायेन, अरण्येर दिनरात्रि, गणशत्रु** और **आगन्तुक** फिल्मों में काम किया। उन्होंने मृणाल सेन, गौतम घोष और संदीप राय की फिल्मों में भी ध्वनि आलेखक के रूप में कार्य किया है।

SUJIT SARKAR, started as an Assistant Recordist in New Theatres studio in 1953 under stalwarts like Nitin Bose, Hem Chandra and Debaki Bose; became chief Recordist in 1957 and worked for Hem Chandra's **Natun Fasal,** Tapan Sinha's **Jhinder Bandi**, Ajoy Kar's **Saptapadi**, Satyajit Ray's **Abhijan, Gopi Gayen Bagha Bayen, Aranyer Din Ratri, Ganashatru** and his latest **Agantuk;** also worked as Recordist in Mrinal Sen, Gautam Ghosh and Sandip Ray's films.

सर्वोत्तम संपादन

राजशेखरन्

फिल्म संपादक **राजशेखरन्** को रजत कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र के लिए सर्वोत्तम संपादन का 1990 का पुरस्कार **राजशेखरन्** को **मोहिनीयाट्टम** में सृजनात्मक कौशल के साथ समय और स्थान के आयामों की पूर्ण क्षमता का इस्तेमाल करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

RAJASEKHARAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor: **RAJASEKHARAN**

Citation

The Award for the Best Editing for a Non-Feature Film of 1990 is given to **RAJASEKHARAN** for his work in the film **MOHINIYATTAM** for making use of the full potential of the dimensions of space and time with creative excellence.

बी. राजशेखरन् केरल फिल्म विकास निगम लि. में सम्पादक हैं। उन्होंने कथाचित्रों **ओरू मेमासा पुलरियिल**, के.जी. जार्ज की फिल्म **एथरायुडे अन्त्यम, अलीलक्कुरूविकुल, अट्टीनक्करे, निडियूडे कथा, चेरिया लोकव्यूम वलिया** और गैर-कथाचित्रों **मन्निंटे मक्कल, बीचिज ऑफ केरला, सेम्मनकुडि श्रीनिवास अय्यर, फैमिली प्लानिंग, स्टोरी ऑफ टिब्लयू** का सम्पादन किया है।

B. RAJASEKHARAN, Editor, Kerala Film Development Corp., edited feature films, **Oru Maymase Pulariyil, Yathrayude Anthyam, Alilakkuruvikal, Attinakkare, Nidhiyude Katha, Cheriya Lokavaum Valiya,** and non-feature films **Manninte Makkal, Beaches of Kerala, Semmankudi Sreenivasa Iyer, Family Planning, Story of Tiblu.**

विशेष उल्लेख

गैर-कथाचित्र निर्णायक मंडल ने निम्नलिखित का विशेष उल्लेख किया है:-

राजगोपाल राव को **टैक्नीक ऑफ सीड प्रॉडक्शन इन व्हीट एण्ड पैडी** के निर्देशक के रूप में कृषि सम्बन्धी जानकारी के प्रभावशाली प्रसार के लिए।

सिद्धार्थ काक को फिल्म **कैक्टस एण्ड रोज़िस** के निर्देशक के रूप में एक अग्रणी औद्योगिक प्रतिष्ठान के सुन्दर चित्रण के लिए।

दिलीप घोष को फिल्म **आधी हकीकत आधा फसाना** के निर्देशक के रूप में सीधे लोगों के मन से फिल्म जगत का ग्लैमर दूर करने के लिए।

नरेश सक्सेना को फिल्म **सम्बन्ध** के निर्देशक के रूप में एक परिवार और वृक्ष के बीच भावात्मक हेतु तैयार करने के लिए।

SPECIAL MENTION

The Non-Feature Film Jury makes a Special Mention of the following:

(a) **RAJ GOPAL RAO** as Director of the film **TECHNIQUE OF SEED PRODUCTION IN WHEAT AND PADDY** for effective dissemination of agricultural information.

(b) **SIDDHARTH KAK** as Director of the Film **CACTUS AND ROSES** for his sophisticated presentation of a pioneering industrial establishment.

(c) **DILIP GHOSE** as Director of the film **AADHI HAQUEEQAT AADHA FASANA** for deglamourising the world of cinema in the minds of innocent toddler talent.

(d) **NARESH SAXENA** as Director of the film **SAMBANDH** for the excellent nucleus of an idea, building an emotional bridge between a family and a tree.

राज गोपाल राव इंजीनियरी में स्नातक है और उन्होंने छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। फिल्म प्रभाग में सहायक कैमरामैन, समाचार-चित्र अधिकारी और उप-निदेशक जैसे पदों पर काम करने के बाद अब वे फिल्म प्रभाग दिल्ली में निदेशक के रूप में कार्य कर रहे है। उन्होंने 30 से अधिक वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये है।

सिद्धार्थ काक ने इतिहास में स्नातकोतर डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने कई उल्लेखनीय वृत्तचित्र बनाये हैं, जिनमें **भांड्स ऑफ कश्मीर, टेल्स ऑफ फिशरवोमेन, मॉर्टल मैन इम्मार्टल मेलोडिज़, भांड जशन, एवरेस्ट 1984, एवरेस्ट सीरिज, बाबा जी का बायोस्कोप, मानव यात्रा, राज कपूर** आदि शामिल है, उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले है। वे देश विदेश की अनेक फिल्म संस्थाओं के सदस्य है।

दिलीप घोष भारतीय फिल्म तथा टेलीविज़न संस्थान के स्नातक है। उन्होंने अनेक टेलीविजन विज्ञापन-फिल्में और प्रेरक वृत्तचित्र बनाये है। इनमें **निकीताशा मोनालीसा** फिल्म भी शामिल है जिसे पुरस्कार मिला। संस्थान में प्रशिक्षण के दौरान बनाई गई उनकी फिल्म **इन पैराडाईज मैन इज बॉर्न डैड** को ओबरहासन फिल्म समारोह में विशेष उल्लेख प्रमाणपत्र मिला। **आधी हकीकत आधा फसाना** कथाचित्र जितनी अवधि की फिल्म के निर्देशक के रूप में उनका पहला प्रयास है।

नरेश सक्सैना सिविल इंजीनियरी में स्नातक है। वे कवि, नाटककार, सम्पादक और वृत्तचित्र निर्माता भी है। इस समय वे उत्तर प्रदेश के एक निगम में कार्यकारी इंजीनियर के रूप में कार्य कर रहे है।

RAJ GOPAL RAO, graduate, diploma holder, Civil Engineering & Cinematography; joined Films Division as asstt. cameraman, newsreel officer, dy. director and now Director, Films Division, Delhi; directed over 30 documentaries, winner of national and international awards.

SIDDHARTH KAK, Master's degree in History, maker of Documentaries **Bhands of Kashmir, Tales of the Fisherwomen, Mortal Men Immortal Melodies, Bhand Jashna, Everest '84, Everest series** (7 films telecast) **Bawaji Ka Bayiscope, Manav Yatra, Raj Kapoor,** winner of national and international awards, member, national and international film bodies.

DILIP GHOSH, graduate, FTII, maker of several TV commercials and promotional documentaries including award winning **Niky Tasha-Mona Lisa;** graduation film **In Paradise Man in Born Dead** won special mention certificate at **Oberhausen. Aadhi Haqueeqat Aadha Fasana** marks his debut as director of feature length film.

NARESH SAXENA, Civil Engineering graduate, poet, editor, playwright, documentary film maker; at present Executive Engineer, UP Nigam.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए (ग़ैर-कथाचित्र)

1. निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम गैर-कथाचित्र
2. सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फिल्म
3. सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म
4. सर्वोत्तम कार्टून फिल्म
5. परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म

AWARDS NOT GIVEN (NON-FEATURE)

1. Best First Non-Feature Film of a Director
2. Best Promotional Film
3. Best Historical Reconstruction/Compilation Film
4. Best Cartoon Film
5. Best Film on Family Welfare

सिनेमा लेखन पुरस्कार

Awards for Writing on Cinema

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक पुरस्कार
हिन्दी सिनेमा का इतिहास (हिन्दी)

लेखक **मनमोहन चड्ढा** को स्वर्ण कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।
प्रकाशक **सचिन प्रकाशन** को स्वर्ण कमल और 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक का 1990 का पुरस्कार **हिन्दी सिनेमा का इतिहास** को दिया गया है जिसमें भारतीय सिनेमा और विश्व सिनेमा के संदर्भ में हिन्दी सिनेमा के विकास पर प्रकाश डाला गया है और इसमें शोध को पर्याप्त महत्व प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA, 1990

HINDI CINEMA KA ITIHAS (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Author: **MANMOHAN CHADDHA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Publisher: **SACHIN PRAKASHAN**

Citation

The Award for the Best Book on Cinema of 1990 is given to **HINDI CINEMA KA ITIHAS** for placing the development of Hindi Cinema in the context of the totality of Indian Cinema and World Cinema, while giving due importance to research.

मनमोहन चड्ढा ने अर्थशास्त्र में एम.ए. करने के बाद भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से पटकथा लेखन में डिप्लोमा प्राप्त किया। वे 8 वर्ष तक संस्थान में लघु फिल्मों के निर्माण, निर्देशन तथा लेखन से जुड़े रहे। दूरदर्शन के लोकप्रिय धारावाहिक **हम लोग** में उन्होंने सहायक निर्देशक तथा एक अन्य धारावाहिक **अजूबे** में मुख्य सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। 1989 में उन्हें सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

MANMOHAN CHADDHA: a post-graduate in Economics; diploma holder in Screenplay-writing from FTII where he wrote and produced short films; asstt. director, Humlog TV serial and chief asstt. director, Ajoobe; won the best film critic award of 1989.

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक पुरस्कार
शोमा. ए. चटर्जी

फिल्म समीक्षक **शोमा. ए. चटर्जी** को रजत कमल और 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक का 1990 का पुरस्कार **शोमा. ए. चटर्जी** को दिया गया है। उन्होंने फिल्म समीक्षा के पुराने ढर्रे से हट कर समीक्षा की नई शैली अपनाई है। उन्होंने अपनी रचनाओं में विभिन्न विषयों पर लेखनी चलाई है। भेंट वार्ता हो या समीक्षा या किसी असाधारण विषय का विश्लेषण, उनमें गहराई के साथ-साथ श्रेष्ठता के दर्शन होते हैं।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC
SHOMA A. CHATERJEE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/-

Citation

The Award for the Best Film Critic of 1990 is given to SHOMA A. CHATTERJEE, who has managed admirably to get away from routine and the beaten track. She has covered an astonishing range of subjects in the articles submitted. Whether it is an interview, a critique or analysis of an unusual subject, she has combined depth with elegance.

शोमा ए. चटर्जी वरिष्ठ फिल्म समीक्षक हैं और अंग्रेजी तथा बंगला की 25 से अधिक पत्र-पत्रिकाओं के लिए समीक्षायें लिखती हैं। उन्होंने महिलाओं की समस्याओं पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। वे बम्बई के दो कालेजों में पत्रकारिता और अर्थशास्त्र पढ़ाती हैं। वे महिला निर्देशकों के मैनहाइम राऊंड टेबल की एशियाई शाखा की संयोजिका हैं। उन्होंने मैक्शीगन में महिला स्वास्थ्य और विकास के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। वे अनेक फिल्म समारोहों और गोष्ठियों में अपने आलेख पढ़ चुकी हैं। उनका एक कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हुआ है।

SHOMA A. CHATTERJI: prolific film critic contributing to about 26 newspapers and journals in English and Bengali; convenor, Asian segment, International film week (1989, 1990) at Mannheim on Women Directors of Three worlds; attended on invitation the International conference on Women, Health & Development at East Lensing in Michigan; author of a book on Women's issues and a Collection of Short stories; teaching Journalism and Economics in two different colleges in Bombay; two of her books on women's issues are under publication.

कथासार: Synopes:
कथाचित्र Feature Films

अग्निपथ

हिन्दी/रंगीन/170 मिनट

निर्माण: यश जौहर **निर्देशन:** मुकल एस. आनन्द **पटकथा:** संतोष के. सरोज **मुख्य अभिनेता:** अमिताभ बच्चन **सह-अभिनेता:** मिथुन चक्रवर्ती **सह-अभिनेत्री:** रोहिणी हट्टंगड़ी **बाल कलाकार:** मंजूनाथ नागराज **छायांकन:** प्रवीण भट्ट **सम्पादन:** वामन भोंसले, गुरु दत्त शिरले **कला निर्देशन:** सुधेन्दु राय

मास्टर दीनानाथ एक गांव में रहते हैं। वे अपने पुत्र विजय को सीख देते हैं कि वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अथक प्रयास करेगा और अग्निपथ अपनायेगा। लेकिन वहाँ रहने वाला बदमाश कांचाचीना गांव में मनमानी करना चाहता है और मास्टर दीनानाथ को अपनी राह का रोड़ा समझकर उनका काम तमाम कर डालता है। मास्टर दीनानाथ का परिवार गांव छोड़कर शहर चला जाता है। विजय शपथ लेता है कि वह एक दिन अपनी मां को गांव वापस अवश्य लायेगा। इसके बाद विजय कठोर राह अर्थात् अग्निपथ पर चलने लगा। वह एक मासूम बालक से खतरनाक बदमाश बन जाता है। अपने एक साथी कृष्णन अय्यर को, शहर से बाहर पढ़ रही अपनी बहन और मां की रक्षा का काम सौंप कर अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए निकल जाता है। कांचाचीना उसे मारीशस बुलाता है। विजय वहां उसकी हत्या करने का प्रयास करता है लेकिन सफल नहीं हो पाता। इस पर वह बाद में अपना काम पूरा करने के विचार से कांचा के साथ मिलकर काम करने का समझौता कर लेता है। विजय जब वापस आता है तो उसे पता चलता है कि उसकी बहन कृष्णन अय्यर से प्यार करती है। इसके बाद के घटना-क्रम में विजय की मां उसे परिवार के नाम पर कलंक बताती है। निराश होकर विजय अग्निपथ पर अग्रसर हो जाता है और अन्त में अपनी मां की गोद में आकर मरता है।

AGNEEPATH

Hindi/colour/170 mts.

Producer: Yash Johar **Director:** Mukul S. Anand **Screenplay Writer:** Santosh K. Saroj **Leading Actor:** Amitabh Bachchan **Supporting Actor:** Mithun Chakraborty **Supporting Actress:** Rohini Hattangady **Cinematographer:** Pravin Bhatt **Editor:** Waman Bhonsle, Guru Dutt Shirale **Art Director:** Sudhendu Ray

Take the path of fire... and you shall not falter...not tire... and achieve your goal...is what Master Dinanath taught his son Vijay. But then gangster Kancha Cheena wanted the village for his devious activities...the Master would be a hinderance...he was done away with. Uprooted, humiliated...the Master's family migrated to the city across the sea. Vijay swore that one day he will give the village back to his mother. Vijay did take the path of fire. From a shoe shine boy he became a dreaded gangster called Bhai. Saved twice by a coconut vendor, Krishnan Iyer, Vijay puts him up to protect his sister who was studying outside the city. His mother did not see eye to eye with Vijay on his guest who is to be number one of the underworld. Vijay did what he was invited to do by Kancha Cheena to Mauritius. He survived a plot to kill him. When he came back he found his sister in love with Krishnan Iyer..in the ensuing drama his mother calls him a blot on the family. A shattered Vijay is left to the path of fire...finally dying on the lap of his mother.

अमारम

मलयालम/रंगीन/151 मिनट

निर्माणः बाबू तिरुवल्ला **निर्देशनः** भारतन **पटकथाः** ए.के. लोहितदास **मुख्य अभिनेताः** मम्मुटी **मुख्य अभिनेत्रीः** मतु **सह-अभिनेताः** मुरली **सह-अभिनेत्रीः** के.पी.ए.एस. ललिता **छायांकनः** मधु अम्बट **ध्वनि आलेखनः** वी.एस. मूर्ति **सम्पादनः** बी. लेनिन **कला निर्देशनः** साबू **वेशभूषाः** दुराई **संगीत निर्देशनः** रवीन्द्रन **गीतकारः** कैथापरम दामोदरन नम्बूदरी **पार्श्व गायकः** येसुदास **पार्श्व गायिकाः** के.एस. चित्रा

अचुत्ती एक मछुआरा है जो अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद अपनी बेटी को लेकर समुद्री किनारे के दूसरे हिस्से में चला जाता है। वहाँ पर कोचुरामन, उसकी पत्नी भार्गवी, बहन चन्देरी और बेटा रघु अचुत्ती की मदद करते हैं। वह अपनी बेटी राधा को डॉक्टर बनाना चाहता है। राधा दसवीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करती है और उसे मैडल मिलता है। वह कालेज में दाखिल हो जाती है और अचुत्ती उसे पढ़ाने के लिए खूब मेहनत करता है। इस बीच राधा की दोस्ती रघु से हो जाती है। एक दिन अचुत्ती उन दोनों को पास-पास बैठे देखकर भड़क उठता है और रघु को पीटता है। पहले अचुत्ती और चन्देरी के बीच शादी होने वाली थी, लेकिन इस घटना के बाद दोनों परिवार अलग-अलग हो जाते हैं। एक दिन अचुत्ती को पता चलता है कि राधा लापता है। जब उसे कोई बताता है कि वह कोचुरामन के घर की ओर गई है तो वह वहाँ पहुंच कर धमकी देता है अगर राधा को कुछ हो गया तो वह रघु को जिंदा नहीं छोड़ेगा। किन्तु अगले दिन वह देखता है कि राधा और रघु वर-वधू के रूप में कोचुरामन के घर जा रहे हैं। दुखी होकर अचुत्ती अपने घर की सारी चीजें तहस-नहस कर डालता है। तभी चंदेरी की शादी भी भार्गवी के किसी रिश्तेदार से हो जाती है। एक दिन जब रघु मछली पकड़ने के बाद घर नहीं लौटता तो सबको शक होता है कि अचुत्ती ने उसे मार डाला है। गुस्से में आकर अचुत्ती समुद्र की ओर जाता है, जहां रघु अपनी नाव में बेहोश पड़ा है। जब वह उसे उठाकर घर लाता है तो सभी सोचते हैं कि वह मर चुका है। लेकिन जब रघु अपनी आँखें खोलता है तो कोचुरामन और राधा, अचुत्ती से माफी मांगते हैं।

AMARAM

Malayalam/colour/151 mts.

Producer: Babu Thiruvella **Director:** Bharathan **Screenplay Writer:** A.K. Lohithadas **Leading Actor:** Mammootty **Leading Actress:** Mathu **Supporting Actor:** Murali, **Supporting Actress:** K.P.A.C. Lalitha **Audiographer:** V.S. Moorthy **Editor:** B. Lenin **Art Director:** Sabu **Lyricist:** Kaithaparam Damodaran Namboodiri **Music Director:** Raveendran **Male Playback Singer:** K.J. Yesudas **Female Playback Singer:** K.S. Chithra **Costume Designer:** Dwarai

After the death of his wife, Achutty, a fisherman, comes with his daughter Radha to another part of the seashore. There Kochuraman, his wife, Bhargavi, sister Chandri and son Raghavan help Achutty whose ambition is to make Radha a doctor. She tops the SSLC exam. and gets a medal from the school. She joins college and Achutty works hard for her. Meanwhile, Radha is attracted to Raghu and one day when Achutty saw them sitting intimately he gets angry and beats Raghu. Moreover, Achutty and Chanderi were about to marry. But the families separate now. One evening, Achutty finds Radha missing and when told she had been to Kochuraman's house he goes there and threatens that if anything happens to Radha, Raghu will not live. But next day, he finds Radha and Raghu going to Kochuram's house as wedded. Pained, Achutty destroys everything in the house. Soon, Chanderi also gets married to one of Bhargavi's relatives. One day, Raghu did not return after fishing and everyone suspects that Achutty had killed him. Enraged, Achutty goes to the sea and finds Raghu lying unconscious in his boat. When brought home everybody think he is dead but when he opens his eye Kochuraman and Radha apologise. Achutty goes out to the sea.

अंजलि

तमिल/रंगीन/150 मिनट

निर्माण: सुजाता प्रॉडक्शन प्रा.लि. **निर्देशन/कहानी/पटकथा:** मणि रत्नम **मुख्य अभिनेता:** रघुवरन **मुख्य अभिनेत्री:** रेवती **सह-अभिनेता:** प्रभु **बाल कलाकार:** श्रुति, तरुण, शामिली **छायांकन** मधु अम्बट **ध्वनि आलेखन:** एन. पांडुरंगन **सम्पादन:** लेनिन, वी.टी. विजयन **कला निर्देशन:** थोट्टा थरानी **वेशभूषा:** वी. साईबाबू **संगीत निर्देशन:** इलयाराजा **गीतकार:** वाली

चित्रा मानसिक रूप से अविकसित बच्चे को जन्म देती है। उसका पति शेखर उससे झूठ बोलता है कि उसने मरे हुए बच्चे को जन्म दिया है। मानसिक रूप से अविकसित बच्चे को ऐसे बच्चों की देखभाल करने वाली एक संस्था "आशीर्वाद" को सौंप दिया जाता है। शेखर, चित्रा को घर लाता है, जहाँ उनके दो और बच्चे अर्जुन और अनु हैं। करीब दो वर्ष बाद शेखर, चित्रा को सच्ची बात बता देता है और चित्रा अपनी बेटी को वापस लाने की ज़िद करती है। वे अंजलि को घर लाते हैं, किन्तु उनके दोनों बच्चे अंजलि से दूर ही रहते है। अंजलि की हरकतों से घर में और पड़ोस में उलझनें पैदा हो जाती हैं। शेखर और चित्रा अपने बच्चों को समझाते हैं कि अंजलि स्वर्ग से आई हुई अलग तरह की बच्ची है, जिस पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। बच्चे धीरे-धीरे इस विशेष बालिका को अपनाने लगते हैं। लेकिन तभी एक बीमारी का शिकार होकर अंजलि गुज़र जाती है, किन्तु इससे पहले वह ऐसे लक्षण दिखाती है कि वह अपनी माँ को पहचानने लगी है।

ANJALI

Tamil/colour/150 minutes

Producer: Sujatha Productions Pvt. Ltd **Director/Screenplay—Writer:** Mani Ratnam **Leading Actor:** Raghuvaran **Leading Actress:** Ravathi **Supporting Actor:** Prabhu **Cinematographer:** Madhu Ambat **Audiographer:** N. Pandurangan **Editor:** Lenin & V T Vijayan **Art Director:** Thotta Tharani **Lyricist:** Vaali **Music Director:** Illaiyaraja **Costume Designer:** V. Saibabu

A complicated operation...the birth of a mentally retarded child...and on doctor's advise Sekhar lies to his wife Chitra that she gave birth to a still born child. The mentally retarded child is assigned to Ashirwad, a home for them. Sekhar brings Chitra home where their two other children Arjun and Anu are growing. After a couple of years, Sekhar blurts out the truth and Chitra insists that he should bring her home. Anjali is brought. Arjun and Anu are baffled the way she behaves. They keep aloof from her though Anjali tries to befriend them. Her presence brings its own problems to the household and neighbourhood. Children refuse to accept her. Sekhar and Chitra tell their children that Anjali is a very special child from heaven, needing utmost care and love. The children gradually condescend to accept this special child as also others. But then a fatal sickness is about to take away Anjali but not before she shows signs of recognising her mother Chitra, and demonstrates it by calling out her name.

आत्मजा

बंगला/रंगीन/83 मिनट

निर्माण: राज कुमार जैन **निर्देशन/पटकथा:** नब्येन्दु चटर्जी **मुख्य अभिनेता:** अर्जुन चक्रवर्ती **मुख्य अभिनेत्री:** गौरी घोष **सह-अभिनेता:** पार्थ सारथी **सह-अभिनेत्री:** रत्ना सरकार मंडल **बाल कलाकार:** महाश्वेता बनर्जी **छायांकन:** गौर करमाकर **ध्वनि आलेखन:** अनूप मुखोपाध्याय **सम्पादन:** निकुंज भट्टाचार्य **कला निर्देशन:** प्रसाद मित्रा **वेशभूषा:** दिवाकर मंडल **संगीत निर्देशन:** खोकोन चौधरी

सुजाता एक स्कूल अध्यापिका है। सिलिगुड़ी से रेलगाड़ी द्वारा कलकत्ता जाते हुए वह अपनी यात्रा के दौरान अपने अतीत को याद करती है। अजय और विजय उसके दो बेटे हैं। अजय एक राजनीतिक कार्यकर्ता है और विजय बेकार है। घर का खर्च सुजाता की ही मामूली आय से चलता है। एक दिन विजय घर से भाग जाता है, उसके पति की मृत्यु हो जाती है और अजय की राजनीतिक हत्या कर दी जाती है। विजय कई वर्ष बाद उसे कलकत्ता में अपने शानदार फ़्लैट में बुलाता है। विजय और उसकी पत्नी जौली सुजाता के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करते हैं और उनमें अच्छा सम्बन्ध कायम हो जाता है। किन्तु जल्दी ही वह उस घर के शान-शौकत के बनावटी माहौल से तंग आ जाती है। इस बीच उसकी मुलाकात विद्युत से होती है जो उसके बेटे अजय से मिलता-जुलता है। उसके परिवार के साथ उसका मेल-जोल बढ़ जाता है। तभी उसे रत्ना का पत्र मिलता है, जिसके साथ अजय की शादी होने वाली थी। रत्ना की अब शादी हो चुकी है किन्तु वह अपने पति के रूखे व्यवहार से दुखी है। एक दिन विद्युत को कुछ गुंडे मारते-पीटते हैं। सुजाता उसकी देखभाल करने लगती है। रात को उसे सपना आता है जिसमें वह गर्भवती है और एक पालना दिखाई देता है और जिसमें अजय और विद्युत मौजूद हैं। जैसे ही वह पालने को झुलाती है उसमें नई चेतना जाग उठती है। इसके बाद वह अजय और जौली का घर छोड़ देती है।

ATMAJA

Bengali/colour/83 mts.

Producer: Raj Kumar Jain **Director/ Screenplay—Writer:** Nabyendu Chatterjee **Leading Actor:** Arjun Chakravorty **Leading Actress:** Gouri Ghosh **Supporting Actor:** Partha Sarathi Deb **Supporting Actress:** Ratna Sarkar Mandal **Cinematographer:** Gour Karmakar **Audiographer:** Anup Mukhopadhya **Editor:** Nikunja Bhattacharya **Art Director:** Prasad Mitra **Costume Designer:** Divakar Mandal

Sujata, a school teacher, relieves her past in a railway compartment on her way to Calcutta from Siliguri. Sujata has two sons, Ajay, a political-activist and Bijay, a sort of good for nothing. The family survives on her meagre earnings. One day, Bijay flees his home; her husband dies and Ajay is politically annihilated. Years later, Bijay calls her to Calcutta in his posh flat. Bijay and his wife Jolly are very nice to her and a rapport develops. But soon she gets tired of his cocktail circuits and the resultant hollowness. Meanwhile, she meets Bidyut in whom she finds Ajay's image and become close to his family. As she gets fed up with Bijay's life style she receives a letter from Ratna who was to have married Ajay. Ratna, now married but unhappy with her somewhat coarse husband. One day Bidyut, who is a trade unionist, is beaten up by hired hoodlums. Sujata rushes to nurse him and gets emotionally worked up. That night she has a dream-lying pregnant and then there appears a cradle carrying Ajay and Bidyut. As she swings it she becomes the midwife of the revolution. Sujata wakes up and bids farewell to Ajay and Jolly.

दृष्टि

हिन्दी/रंगीन/177 मिनट

निर्माण/निर्देशन/छायांकन: गोविन्द निहलाणी **पटकथा:** शशि देशपाण्डे **मुख्य अभिनेता:** शेखर कपूर **मुख्य अभिनेत्री:** डिम्पल कपाड़िया **सह-अभिनेता:** विजय कश्यप **सह-अभिनेत्री:** मीता वशिष्ठ **बाल कलाकार:** तबस्सुम **ध्वनि आलेखन:** अजय मुंजाल, हितेन्द्र घोष **सम्पादन:** दीपक सहगल **कला निर्देशन:** नितीश रॉय **वेशभूषा:** आरती कालिया **संगीत निर्देशन:** किशोरी अमोनकर **गीतकार:** वसन्तदेव **पार्श्व गायक:** रघुनन्दन पनशीकर **पार्श्व गायिका:** किशोरी अमोनकर

संध्या और निखिल शिक्षित पति-पत्नी हैं और बम्बई में रहते हैं। दोनों अच्छी नौकरी पर हैं। उनकी शादी की आठवीं सालगिरह के समारोह में संध्या के मित्रों के साथ राहुल नाम का एक गायक भी आता है। संध्या अचानक उस युवक की ओर आकर्षित हो जाती है और दोनों का सम्बन्ध आगे बढ़ने लगता है। लेकिन निखिल के प्रति संध्या के प्यार में कोई कमी नहीं आती। अपनी एक सहेली प्रभा की सलाह पर संध्या राहुल से मिलना-जुलना बन्द कर देती है। तभी संध्या को पता चलता है कि वह गर्भवती है। निखिल दूसरा बच्चा अभी नहीं चाहता इसलिए वह संध्या से गर्भपात कराने को कहता है। संध्या पहले तो मना करती है लेकिन बाद में तैयार हो जाती है। इससे उन दोनों के सम्बन्धों में परिवर्तन आ जाता है। निखिल संध्या को बताता है कि वह वृन्दा से प्यार करता है और उससे तलाक लेने का इच्छुक है। संध्या इसके लिए राजी हो जाती है और वह अकेली रहने लगती है। तभी वृन्दा के साथ निखिल का सम्बन्ध टूट जाता है। वे दोनों समुद्र के किनारे मिलते हैं। संध्या राहुल के साथ अपने सम्बन्धों के बारे में बताती है। जब निखिल उससे पूछता है कि जो गर्भपात कराया गया था वह बच्चा क्या राहुल का था? संध्या ईमानदारी से जवाब देती है कि "नहीं, वह बच्चा तुम्हारा था।"

DRISHTI

Hindi/colour/177 minutes

Producer/Director: Govind Nihalani **Screenplay-Writer:** Shashi Deshpande **Leading Actor:** Shekhar Kapoor **Leading Actress:** Dimple Kapadia **Supporting Actor:** Vijay Kashyap **Supporting Actress:** Mita Vasisht **Cinematographer:** Govind Nihalani **Audiographer:** Ajay Munjal and Hitendra Ghosh **Editor:** Deepak Segal **Art Director:** Nitish Roy **Lyricist:** Vasant Dev **Music Director:** Kishori Amonkar **Male Playback Singer:** Raghunandan Panshikar **Female Playback Singer** Kishori Amonkar **Costume Designer:** Arti Kalia

Sandhya and Nikhil, a well-to-do couple work for a publishing house and a multinational firm respectively. Rahul, a vocalist, comes to their 8th wedding anniversary party. Passionate as she is, Sandhya is attracted to him and develops a relationship which, however, she terminates on advise of her confidante Prabha. Sandhya discovers she is pregnant. Though at first they evade an abortion, Sandhya ultimately goes through the trauma and her relationship with Nikhil suffers. Nikhil reveals he has an affair with Vrinda and asks for a divorce and she reluctantly agrees. Nikhil's affair with Vrinda collapses and he comes back. When she tells him of her affair he asks whether the aborted child was Rahul's. "No, it was yours", she says.

एक डॉक्टर की मौत

हिन्दी/रंगीन/122 मिनट

निर्माण: राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि. **निर्देशन/पटकथा/संगीत निर्देशन:** तपन सिन्हा **मुख्य अभिनेता:** पंकज कपूर **मुख्य अभिनेत्री:** शबाना आजमी **सह-अभिनेता:** इरफान खान **सह-अभिनेत्री:** दीपा साही **छायांकन:** सोमेन्दु राय **संपादन:** सुबोध राय **कला निर्देशन:** अशोक बोस **वेशभूषा:** अरुन्धती देवी

यह फिल्म तीन हिस्सों में है। पहले भाग में एक डाक्टर की प्रारंभिक इच्छाओं के साथ-साथ यह दिखाया गया है कि वह अपनी पत्नी से नैतिक बल प्राप्त करता है। वह प्रतिभाशाली व्यक्ति है लेकिन ज़रा-ज़रा सी बात पर उबल पड़ता है। उसने कृत्रिम जन्म के क्षेत्र में एक सनसनीखेज खोज की है। असल में इस खोज में उसकी पत्नी का भी उसके बराबर ही हाथ है, क्योंकि उसने अपनी इच्छाओं और सुख की परवाह न करते हुए अपना सर्वस्व डॉक्टर और उसके काम के लिए न्यौछावर कर दिया।

फिल्म के दूसरे भाग में कुछ घटनाएं दिखाई गई हैं।

इसका अन्तिम भाग कुछ दुखद पहलुओं के बावजूद आशाजनक है। उन्हें अपनी खोज के लिए सम्मान मिलता है। उन्हें नैतिक विजय की तुलना में भौतिक पराजय महत्वहीन लगती है। यह फिल्म नैतिकता के बारे में मौजूदा दृष्टिकोण पर प्रकाश डालती है और ईमानदारी तथा मेहनत के चिरंतन मूल्यों की स्थापना करती है।

EK DOCTOR KI MAUT

Hindi/colour/122 mts.

Producer: National Film Development Corporation Ltd. **Director/ Screenplay—Writer:** Tapan Sinha **Leading Actor:** Pankaj Kapur **Leading Actress:** Shabana Azmi **Supporting Actor:** Irfan Khan **Supporting Actress:** Deepa Sahi **Cinematographer:** Somendu Roy **Editor:** Subodh Ray **Art Director:** Asoke Bose **Music Director:** Tapan Sinha **Costume Designer:** Late Arundhati Devi

The film is in three parts. The initial part shows the doctor's early ambitions and the moral strength he draws from his wife. He is the wayward genius, erratic and given to sudden outbursts. He has made a startling discovery in the sphere of artificially induced births. In fact, it is his wife who is as much as himself is responsible for the new discovery. For she has sacrificed everything for him and his work, never caring for the comforts and joys of a conventional home life.

Comes the interlude delineating the unhapy consequences. The final part is optimistic, inspite of a tragedy. Recognition and honour come from unexpected quarters. The defeat in physical terms is insignificant compared to the moral triumph. Ek Doctor Ki Maut is a statement on contemporary morality and upholds the eternal values of honesty and enterprise.

घायल

हिन्दी/रंगीन/153 मिनट

निर्माण: धर्मेन्द्र **निर्देशन/पटकथा:** राजकुमार संतोषी **मुख्य अभिनेता:** सन्नी देओल **मुख्य अभिनेत्री:** मीनाक्षी शेषाद्रि **सह-अभिनेता:** ओम पुरी **सह-अभिनेत्री:** मौसमी चटर्जी **छायांकन:** राजेश कोठारी **ध्वनि आलेखन:** राकेश राजन **संपादन:** वी.एन. मयेकर **कला निर्देशन:** नितीश रॉय **संगीत निर्देशन:** भप्पी लाहिड़ी **गीतकार:** अनजान/इन्दीवर **पार्श्व गायक:** अमित कुमार, शब्बीर कुमार, कुमार शानु **पार्श्व गायिका:** लता मंगेशकर, एस. जानकी

घायल की कहानी एक युवक अजय मेहरा के आस-पास घूमती है जो उदीयमान बाक्सर है। अपने बड़े भाई अशोक और प्यारी भाभी से हौसला पाकर अजय बाक्सिंग के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। अजय एक लड़की से प्यार करता है जो पत्रकार है। जब वह प्रशिक्षण के लिए एक शिविर में जाता है तो वहाँ उसे अपने भाई के रहस्यपूर्ण ढंग से लापता होने की खबर मिलती है। बम्बई लौटकर वह अशोक की खोज में लग जाता है। अपनी इस कोशिश के दौरान उसे पता चलता है कि राजनैतिक और सामाजिक प्रतिष्ठा वाले कई लोगों का उसके भाई की मौत में हाथ है और शायद वे उसके हत्यारे हैं। उनका पर्दाफाश करने की कोशिश में अजय उनके शिकंजे में फंस जाता है। उस पर ही अपने भाई की हत्या का इल्ज़ाम लग जाता है। बेबस और हैरान अजय को उस दुष्टतापूर्ण चाल का पता चल जाता है जिसने उसके भाई का जीवन समाप्त किया और अब उसे बर्बाद करने पर तुला हुआ है। इस अन्याय और अत्याचार से उत्तेजित होकर एक सीधा-सादा आदमी प्रतिशोध के ज्वालामुखी में बदल जाता है।

GHAYAL

Hindi/colour/153 mts.

Producer: Dharmendra **Director/Screenplay—Writer:** Raj Kumar Santoshi **Leading Actor:** Sunny Deol **Leading Actress:** Meenakshi Sheshadri **Supporting Actor:** Om Puri **Supporting Actress: Moushmi Chatterjee Cinematographer:** Rajesh Kothari **Audiographer:** Rakesh Rajan **Editor:** V.N. Mayekar **Art Director:** Nitish Roy **Lyricist:** Anjaan/Indivar **Male Playback Singers:** Amit Kumar, Shabbir Kumar, Kumar Shanu **Female Playback Singer** Janaki **Costume Designer:** Fitwell.

Ajay Mehra, a budding boxer is all set to be a champ. Encouraged by his businessman brother Ashok, his wife and his lady-love, a journalist the four seem to be leading an idyllic life. While on a training camp, Ajay learns of his brother's mysterious disappearence. He returns to Bombay and begins his search. He discovers that many political and Social figures are involved; as he gets going he even finds himself framed for the crime. He realises that the evil web which destroyed his brother is now upon him and that turns him into a volcano of vengence.

हिज हाईनेस अब्दुल्ला

मलयालम/रंगीन/156 मिनट

निर्माण: मोहनलाल **निर्देशन:** सिबी मलायिल **पटकथा:** लोहितदास **मुख्य अभिनेता:** मोहन लाल **मुख्य अभिनेत्री:** गौतमी **सह-अभिनेता:** नेडुमुडि वेणु **छायांकन:** आनन्दकुट्टन **ध्वनि आलेखन:** सम्पत **सम्पादन:** भूमिनाथन **कला निर्देशन:** सुरेश **वेशभूषा:** एम.एम. कुमार **संगीत निर्देशन:** रवीन्द्रन **गीतकार:** कैथापरम **पार्श्व गायक:** येसुदास **पार्श्व गायिका:** चित्रा

एक रियासत के राजा उदय वर्मा परोपकारी और कला प्रेमी हैं। उनका पूरा परिवार उन्हें धन और आनन्द का अन्तहीन स्रोत समझता है। एक दिन उदय वर्मा बीमार पड़ जाते है और सब लोग धन पाने की आशा में उन्हे घेर लेते है। उदय वर्मा की पत्नी पागल है, क्योंकि उनके इकलौते बेटे की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। वे दोनों एक अनाथ लड़की राधा का पालन-पोषण कर रहे हैं। वर्मा ठीक हो जाता है। सभी रिश्तेदार यह जानकर निराश हो जाते हैं कि सम्पत्ति का बंटवारा उनकी मृत्यु के बाद ही होगा। उनका बम्बई में रहने वाला एक भतीजा रवि, उनकी हत्या के लिए एक गुंडे को किराये पर लेने का सुझाव देता है। इसी सिलसिले में अब्दुल्ला नाम का एक व्यक्ति वहाँ पहुंचता है। वह असल में कोई हत्यारा नहीं बल्कि एक कव्वाल है, जो एक ब्राह्मण अनाथन् के नाम से वहां आता है और अपने संगीत से उदय वर्मा का दिल जीत लेता है। उदय वर्मा उसमें अपने खोए हुए बेटे का रूप देखते हैं। राधा को भी संगीत और नृत्य का शौक है उसे अब्दुल्ला से प्यार हो जाता है। वर्मा के और निकट आने के कारण अब्दुल्ला राधा का संरक्षक भी बन जाता है। इस स्थिति में दुखी होकर रिश्तेदार एक नये हत्यारे को बुलवाते हैं और अब्दुल्ला को रास्ते से हटाने की योजना तैयार करते हैं। लेकिन जब वर्मा को उसकी असलियत का पता चलता तो वह मरने का फैसला कर लेता है। अब्दुल्ला वर्मा को बचाने की कोशिश करता है और घमासान संघर्ष होता है। अब्दुल्ला दया की याचना करता है और इस तरह वह वर्मा का खोया हुआ बेटा उन्नी और राधा का पति अनाथन् बन जाता है।

HIS HIGHNESS ABDULLAH

Malayalam/colour/156 mts.

Producer: Mohanlal **Director:** Sibi Malayil **Screenplay—writer:** Lohithadas **Leading Actor:** Mohanlal **Leading Actress:** Goutami **Supporting Actor:** Nedumudi Venu **Cinematographer:** Anandakuttan **Audiographer:** Sampath **Editor:** Bhoominathan **Art Director:** Suresh **Lyricist:** Kaithaparam **Music Director:** Ravindran **Male Playback Singer:** Yesudas **Female Playback Singer:** Chitra **Costume Designer:** M.M. Kumar.

Udaya Verma, the head of a princely state, philanthropist and lover of arts, belived in Shakespeare's words, "If music is the food of life then play on". His entire family took him as an unending source of money and comforts. One day Verma fell sick and everyone gathered in anticipation of the resultant monetary gain. Verma's wife became mentally deranged when her only son died in an accident. They were bringing up an orphan girl Radha who brought them much needed solace. Verma recovers to the disappointment of others who came to know that as per Verma's will partition would be effected only after his death. Ravi, a Bombay-based nephew, suggests the need for a hired killer and thus enters Abdullah, a qawwali singer, disguised as Anathan from the famous brahmin family. Abdullah was no killer and he wins the heart of the Highness with his music. He becomes the lost son of the house. Radha, fond of music and dance, falls for him and as he gets closer to Verma he becomes his Protector too. Furious, vested interests bring in a new killer and plans to put it on Abdullah. But Verma decides to die when comes to know of his real identity. Abdulla tucks away Verma and a fierce encounter takes place. Abdulla pleads for mercy and it is granted. He becomes Unni, the long lost son and Anathan, the prince of Radha's heart.

इशानऊ

मणिपुरी/रंगीन/94 मिनट

निर्माण/निर्देशन/संगीत: अरिबम श्याम शर्मा **पटकथा**: एम.के. विनोदिनी देवी **मुख्य अभिनेता**: कंगाबम तोम्बा **मुख्य अभिनेत्री**: अनौबम किरणमाला **सह-अभिनेता**: सोराईसम धीरेन **सह-अभिनेत्री**: मानबी देवी **बाल कलाकार**: बेबी मोल्ले **छायांकन**: गिरीश पढियार **ध्वनि आलेखन**: दुर्गा दास मित्रा **सम्पादन**: उज्वल नन्दी **कला निर्देशन/वेशभूषा**: एम.के. विनोदिनी देवी

मणिपुर घाटी में किसी स्थान पर एक परिवार सुखी जीवन बिता रहा है। इसमें पति-पत्नी और उनका बच्चा है। पत्नी थम्पा प्रेत छाया की शिकार हो जाती है जिसे स्थानीय लोग मैबी कहते हैं। उसे बार-बार दौरे पड़ते हैं और कभी-कभी वह समाधि की मुद्रा में बैठ जाती है। अन्त में वह मैबी गुरु की तलाश में घर से भाग जाती है। इससे पूरा परिवार बिखर जाता है। कई तरह की अनहोनी और रहस्यमयी घटनायें होने लगती हैं। लोग अपने रोजमर्रा के कामों में भी मैबी लोगों से तंत्र-मंत्र, नृत्य, पूजा आदि कराने लगते हैं। परम्परागत मणिपुरी जनजीवन की शानदार झांकी इस फिल्म में देखने को मिलती है। रहस्यपूर्ण जीवन के इस जाल में थम्पा खो जाती है और उसके माध्यम से एक माँ की पीड़ा को दर्शाया गया है जो अपने बेटे का लालन-पालन करना चाहती है किन्तु उसका बेटा उसके लिए अजनबी है। फिल्म के अन्त में ऐसा दृश्य दिखाया गया है जिससे धार्मिक समारोह की गरिमा और महिमा लगभग समाप्त हो जाती है।

ISHANOU

Manipuri/colour/94 minutes

Producer—Director: Aribam Syam Sharma **Screenplay—Writer:** M.K. Binodini Devi **Leading Actor:** Kangabam Tomba **Leading Actress:** Anoubam Kiran Mala **Supporting Actor:** Sorai Sam Dhiran **Supporting Actress:** Manbi Devi **Cinematographer:** Girish Padhiar **Audiographer:** Durga Das Mitra **Editor:** Ujjal Nandi **Art Director/Costume Designer:** M.K. Binodini Devi

In the Manipur valley lives a happy family,—husband, wife and their child under the protective authority of the market-woman head of the family. Thampa, the young wife is possessed by the mysterious Maibi phenomenon. She has violent fits and trances and finally runs away in quest of her Maibi guru. The family breaks away. Magic and mystery descend upon the mundane, world of buying, selling and rituals. Behind the traditional Manipuri life Thampa almost loses herself to the mysterious, there lurks the pain of a mother who can no longer nurture her child growing into a stranger.

अय्यर दी ग्रेट

मलयालम/रंगीन/120 मिनट

निर्माण: रथीश **निर्देशन:** भद्रण मट्टेल **पटकथा:** मलयत्तूर रामकृष्णन् **मुख्य अभिनेता:** मम्मूटी **मुख्य अभिनेत्री:** गीता **सह-अभिनेता:** देवन **सह-अभिनेत्री:** सुकुमारी **छायांकन:** आनन्द कुट्टन **ध्वनि आलेखन:** एम.आर. स्वामीनाथन् **सम्पादन:** एम.एस. मणि **कला निर्देशन:** राजीव अंचल **वेशभूषा:** एज़ूमलई **संगीत निर्देशन:** एम.एस. विश्वनाथन **गीतकार:** पूर्वाचल खदेर **पार्श्व गायिका:** जानकी

सूर्य नारायण अय्यर एक मध्यम वर्गीय व्यक्ति है जो अपनी माँ और पत्नी के साथ सुखी जीवन बिता रहा है। वह एक बीमा कम्पनी में अधिकारी है और उसकी पत्नी बढ़िया ढंग से घर चला रही है। उन्हें एक ही कमी है कि उनके यहां सन्तान नहीं हुई। किन्तु उन्होंने मैत्री नाम का तोता पाल रखा है जिसे प्यार करके वह अपना मन बहलाते हैं। एक बार मैत्री को शरारत सूझी और वह उड़ गई। सूर्य नारायण उसका पीछा करते हुए पेड़ पर चढ़ता है और उसे चक्कर आने लगते हैं। तब से उसे उल्टी-सीधी चीजें दिखाई देने लगती हैं और बुरे-बुरे ख्याल आते हैं। एक और मुसीबत यह आ जाती है कि उस पर बिजली गिरती है। वह ठीक तो हो जाता है लेकिन उसका दिमागी संतुलन बिगड़ जाता है। ऊपर से वह सामान्य लगता है लेकिन उसके दिल और दिमाग में तरह-तरह की क्रियायें और प्रतिक्रियायें चलती रहती हैं। उसे विचित्र संदेश सुनाई देते हैं और अजीब-अजीब दृश्य दिखाई देते हैं। वह भविष्य की घटनाओं को भी देखने लगता है और सही भविष्यवाणियाँ करके आस-पास के लोगों को कई विपत्तियों से बचा लेता है। लोग उसे पैगम्बर मान कर सम्मान देते हैं, लेकिन बहुत से लोग उसके विरोध में उठ खड़े होते हैं। वह अपने सभी प्रिय व्यक्तियों और वस्तुओं से वंचित हो जाता है। निहित स्वार्थ हावी हो जाते हैं और जैसा कि पैगम्बरों के साथ होता रहा है, वह भी शहीद हो जाता है।

IYER THE GREAT

Malayalam/colour/120 mts

Producer: Ratheesh **Director:** Bhadran Mattel **Screenplay—Writer:** Malayattoor Ramakrishnan **Leading Actor:** Mammooty **Leading Actress:** Geetha **Supporting Actor:** Devan, Sukumar **Cinematographer:** Ananda Kuttan **Audiographer:** Swaminathan **Editor:** M.S. Money **Art Director:** Rajeev Anchal **Lyricist:** Poovachal Khader **Music Director:** M.S. Viswanathan **Female Playback Singer:** Janki **Costume Designer:** Ezhumalai.

The film tells the story of an abnormal phenomenon-Iyer, the man who saw tomorrow-rose from ordinary to oracle-possessing extra—sensory perception. Surya Narayan Iyer was leading a typical middle class existence having a contented life with his mother and loving wife managing the household. He was working as an executive in an Insurance firm. Their only regret was the absence of a child but had one solace-the naughty- impish parrot Maitry on whom both showered their affection. One day Maitry got naughty and flew away. Surya follows her up a tree and gets an attack of vertigo. From then on he starts seeing things in disharmony including ominous illusions. To add to this he is struck by lightning. He recovers but there is abnormality. His BP reads 243/58. But outwardly he is quite normal. The dark interiors of his mind undergo chain reactions and a churning. He starts receiving messages, visuals, times, colours and patterns. He starts seeing through the future-making precise predictions, saving major disasters and saving people around him. He is lauded as a prohet and gets his due from opposition. He loses everything he loves most. Vested interests surface and like all prophets before him he too had to attain martyrdom.

जूज

असमिया/रंगीन/108 मिनट

निर्माण: बिपुल बरुआ **निर्देशन/पटकथा:** हेमन दास **मुख्य अभिनेता:** पुलिन नाथ **मुख्य अभिनेत्री** सीता रानी हजारिका **छायांकन:** मधु मोहन काली **ध्वनि आलेखन:** परतिबोन सिने सर्विस **संगीत निर्देशन:** खगेर महन्ता, रामेन चौधरी **कला निर्देशन:** फटिक बरुआ

गणपति एक धनी किसान है जो सामन्ती प्रथा का प्रतीक है। त्यौहारों के अवसर पर होने वाले भैंस-युद्धों में उसकी भैंस हमेशा विजयी होती है, क्योंकि वह बहुत तगड़ी और प्रशिक्षित है। लेकिन एक बार गणपति की भैंस छोटी जाति के एक गरीब व्यक्ति भोगई की भैंस से हार जाती है। गणपति इस हार का बदला लेने का निश्चय करता है किन्तु उसकी इकलौती बेटी मोइना को अपने पिता का यह रवैया पसन्द नहीं है और भोगई के प्रति उसके मन में स्नेह का भाव है। हालात ऐसे बनते हैं कि भोगई को अपने बीमार पिता का इलाज कराने के लिए अपनी भैंस को हाफिज़ के हाथों बेचना पड़ता है। हाफिज़ उस भैंस को गणपति को बेच देता है, जो भैंस को प्रशिक्षण देना शुरू कर देता है। मोइना को यह सब अच्छा नहीं लगता। उधर भोगई के पिता की मृत्यु हो जाती है। माघ बिहु का त्यौहार आ जाता है और गणपति को आशा है कि वह इस बार जीत कर अपनी प्रतिष्ठा फिर बना लेगा। भोगई के पास अपनी कोई भैंस नहीं है लेकिन वह भैंसों की लड़ाई देखने जाता है। मुकाबले में गणपति की भैंस इस बार भी हार जाती है और उसे अपमान झेलना पड़ता है। लेकिन भोगई अपनी भैंस को हारता नहीं देख पाता और वह अपने जानवर को वापस लड़ाई के मैदान में भेज देता है। इस बार भैंस डट कर मुकाबला करती है और जीत जाती है। गणपति इसे अपनी विजय मानता है किन्तु मोइना को असलियत का पता है।

JOOJ

Assamese/colour/108 mts.

Producer: Bipul Baruah **Director/ Screenplay—Writer:** Hemen Das **Leading Actor:** Pulin Nath **Leading Actress:** Sitarani Hazarika **Supporting Actors:** Hari Deka, Dr. Hemen Barman **Supporting Actresses:** Santichaya Roy, Minakumari Barman **Cinematographer:** Madhu Mahonkali **Audiographer:** Parthibon Cine **Art Director:** Phatik Barua

Ganapati, a wealthy agriculturist, symbolises feudalism. His buffalo, well-fed and well-trained, had always been the natural winner in ceremonial duels. Ganapati's buffalo, however, meets its match and the defeat proves all the more humiliating as the winner belongs to Bhogai, a poor-low caste man. Ganapati vows to avenge the defeat. His only daughter, Moina is, however, sore at his hostile attitude and even has affection for Bhogai. But things worsen and Bhogai has to sell his buffalo to Hafiz for treatment of his ailing father. Hafiz, in turn, sells it to Ganapati who start training the animal. Moina does not like the attitude. Back in town, Bhogai's father passes away. Comes the Magh Bihu festival. Ganapati is sure about regaining his lost glory. Bhogai does not have an animal but goes to see the ceremonial fight. But as luck would have it the animal is overpowered and Ganapati is humiliated again. But Bhogai won't have it and directs it to arena again. The buffalo this time gives a real fight. Ganapati considers the truimph as his own but Moina.....

कर्त्तव्यम्

तेलुगु/रंगीन/130 मिनट

निर्माण: ए.एम. रत्नम **निर्देशन/पटकथा**: ए. मोहन गांधी **मुख्य अभिनेता**: विनोद कुमार **मुख्य अभिनेत्री**: विजया शान्ति **सह-अभिनेता**: पुंडरीकक्षय्या **सह-अभिनेत्री**: निर्मलम्मा **छायांकन**: डी. प्रसाद बाबू **ध्वनि आलेखन**: कोल्ली रामकृष्ण **सम्पादन**: गौतम राजू **कला निर्देशन**: सोमनाथ **वेशभूषा**: चक्रधर राव **संगीत निर्देशन**: राजकोटि **गीतकार**: वेतुरी सुन्दर राममूर्ति **पार्श्व गायक**: एस.पी. बालासुब्रह्मण्यम

एक कर्तव्यनिष्ठ महिला पुलिस अधिकारी की नियुक्ति एक ऐसे कस्बे में होती है जहाँ एक भ्रष्ट व्यापारी मुद्दु कृष्णय्या की मनमानी चल रही है। उसे गृहमंत्री का संरक्षण प्राप्त है जो इस व्यापारी से मदद लेकर मंत्री बना है। कस्बे में अपनी नियुक्ति के पहले दिन ही पुलिस अधिकारी का उस भ्रष्ट व्यापारी के साथ सामना होता है और वह उसके बेटे को एक लड़की के बलात्कार के आरोप में गिरफ़्तार कर लेती है। यह लड़की एक स्कूल टीचर की बेटी है, जिससे वह खुद भी पढ़ी हुई है। लेकिन अदालत में अपराध साबित नहीं होता क्योंकि मुद्दु गवाहों को अपने पक्ष में कर लेता है। इस तरह अपराधी छूट जाता है। बदले की आग में जलता हुआ वह पुलिस अधिकारी को हटाने पर उतारू हो जाता है। उसे इतनी बुरी तरह से पीटा जाता है कि पुलिस विभाग इस आधार पर उसे मुअत्तिल कर देता है कि वह अपनी ड्यूटी पूरी करने में सक्षम नहीं है। वह उच्च अधिकारियों से अनुरोध करती है कि उसे अपनी क्षमता सिद्ध करने का एक अवसर दिया जाए, जिसे मान लिया जाता है। वह इलाज कराने के बाद फिर से काम संभाल लेती है। इस बार वह दुगुने संकल्प के साथ मुद्दु के बेटे को गिरफ़्तार करने जाती है लेकिन यह जानकार दंग रह जाती है कि वह युवा नेता के रूप में चुनाव लड़ रहा है। जब मुद्दु चुनाव प्रक्रिया में गड़बड़ करने की कोशिश करता है तो वह उसे मार डालती है।

KARTHAVYAM

Telugu/colour/130 mts.

Producer: A.M. Rathnam **Director/ Screenplay—Writer:** A. Mohan Gandhi **Leading Actor:** Vinod Kumar **Leading Actress:** Vijaya Shanthi **Supporting Actor:** Pundari Kakshayya **Supporting Actress:** Nirmallmma **Cinematographer:** D. Prasad Babu **Audiographer:** Kolli Ramakrishna **Editor:** Gowtham Raju **Art Director:** Somanath **Lyricist:** Veturi Sundara Ramamurthy **Music Director:** Raj Koti **Male Playback singer:** S.P. Balasubrahmanyam **Costume Designer:** Chakradhara

A duty-bound Female Police Officer comes to a town parasited by a corrupt businessman Muddukrishnaiah. He is sheltered and protected by the Home Minister who owes his chair to his muscle power. She comes to loggerheads with him from the very first day when she arrests his son for raping the daughter of a school teacher, once her own teacher too. She proceeds to court but fails to prove it as Muddu has the evidence twisted and the culprit gets away. Burning with vengence Muddu now masterminds an agitation in a bid to get rid of her. She is beaten up so badly that she is suspended on the ground of not being physically fit to carry on her duties. She appeals to the higher authorities to be given a chance to prove herself to which they agree. After a vigorous course of phsiotherapy she rejoins the force now cleared by the tribunal. This time she is doubly determined and proceeds to arrest Muddu's son but is shocked to learn that he is contesting election as a youth leader. Finally, she kills Muddu who attempts to disturb the electoral process and has his son married to the school teacher's daughter.

लेकिन

हिन्दी/रंगीन/171 मिनट

निर्माण/संगीत निर्देशन: हृदयनाथ मंगेशकर **निर्देशन/पटकथा/गीतकार:** गुलज़ार **मुख्य अभिनेता:** विनोद खन्ना **मुख्य अभिनेत्री:** डिम्पल कपाड़िया **सह-अभिनेता:** अमजद खान **सह-अभिनेत्री:** हेमा मालिनी **बाल कलाकार:** शबाना खान **छायांकन:** मन मोहन सिंह **ध्वनि आलेखन:** नरेन्द्र सिंह **सम्पादन:** सुभाष सहगल **कला निर्देशन:** नितीश रॉय **वेशभूषा:** भानु अथैया **पार्श्व गायक:** सुरेश वाडकर **पार्श्व गायिका:** लता मंगेशकर

राष्ट्रीय संग्रहालय के युवा अधिकारी समीर को एक छोटी जागीरदारी जसोद में महल और किलों की देखभाल के लिए नियुक्त किया जाता है। जसोद की जनता एक सामन्त राजा नन्द परशराम के अत्याचारों से दुखी है। रेलगाड़ी में समीर की मुलाकात एक राजस्थानी लड़की से होती है, लेकिन वह अचानक गायब हो जाती है और समीर दंग रह जाता है। जसोद पहुंचकर समीर जागीर के संग्रहालय के प्रमुख शफ़ी सिद्दिकी की मदद से अपना काम शुरू करता है। महल के टेढ़े-मेढ़े गलियारों में समीर को कई बार वही लड़की दिखाई देती है। उसके मन की उलझन और गहरी हो जाती है। वह लड़की कभी उसे किले के पास खाना पकाते हुए दिखाई देती है और कभी महल के भीतर चलती हुई मिलती है। रेवा नाम की यह लड़की समीर को कई घटनाओं के बारे में बताती है लेकिन अचानक गायब हो जाती है। समीर जयपुर जाता है जहां वह पम्मी से मिलता है और उसके माध्यम से परा-मनोविज्ञान के प्रोफेसर डॉक्टर बी.एन. माथुर से परामर्श करता है। डॉक्टर माथुर के अनुसार ये लड़की एक आत्मा हो सकती है जो समय चक्र में फंस गई है और अब 'मुक्त' होना चाहती है। कई कठिनाइयों के बाद समीर रेवा को 'मुक्ति' दिलाने में सहायता करता है।

LEKIN

Hindi/colour/170 mts.

Producer: Hridayanath Mangeshkar **Director:** Gulzar **Leading Actor:** Vinod Khanna **Leading Actress:** Dimple Kapadia **Supporting Actor:** Amjad Khan **Supporting Actress:** Hema Malini **Cinematographer:** Man Mohan Singh **Audiographer:** Narinder Singh **Editor::** Subhash Sehgal **Art Director:** Nitish Roy **Lyricist:** Gulzar **Music Director:** Hridayanath Mangeshkar **Male Playback Singer:** Suresh Wadkar **Female Playback Singer:** Lata Mangeshkar **Costume Designer:** Bhanu Athaiya

Samir, a curator of the National Museum is sent to Jasod, a small jagirdari terrorised by a feudal chieftain, Rajanand Parsram. While on his way to take charge of the palaces and forts, Samir encounters a Rajasthani girl in the train who again surfaces in the interior of the palace. She keeps disappearing mysteriously even as she narrates a series of incidents. Exhausted, Samir finally meets a Para-psychology professor, who believes that the girl's atma (soul) has got entangled in the time-cycle and wants to be free.

मरुपक्कम

तमिल/रंगीन/85 मिनट

निर्माण: राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि. और दूरदर्शन **निर्देशन/पटकथा:** के.एस. सेतुमाधवन **मुख्य अभिनेता:** शिव कुमार **मुख्य अभिनेत्री:** जया भारती **सह-अभिनेता:** शेखर **सह-अभिनेत्री:** राधा **छायांकन:** डी. वसन्त कुमार **ध्वनि आलेखन:** ए. स्वामीनाथन **सम्पादन:** जी. वेंकटरामन **कला निर्देशन:** बी. चलम **वेशभूषा:** कुप्पूराज **संगीत निर्देशन:** एल. वैद्यनाथन

यह फिल्म एक बाप और बेटे के बारे में है, जिनके जीवन में इतिहास दोहराया जाता है। अम्बी दिल्ली से अपने बीमार पिता वेम्बू अय्यर को देखने कुम्बकोनम पहुंचता है। वेम्बू अय्यर अपनी विद्वता और कठोरता के लिए प्रसिद्ध है। अम्बी अपने पिता को चुपचाप शान्त लेटे हुए देखता है तो उसे बहुत दुख होता है। अम्बी ने जब एक ईसाई लड़की से शादी की तो अय्यर ने उसे बहुत बुरा-भला कहा लेकिन जब उसे पता चला कि वे अलग हो गये हैं तो वह चुप हो गया। अम्बी अपने पिता के मुख से अपनी उस सौतेली माँ का नाम सुनता है जिसे इसलिए अय्यर को छोड़कर जाना पड़ा क्योंकि उसके संगीत प्रेम के कारण अय्यर की माँ परेशान होती थीं। जब उसने अदालत में अपने गुजारा खर्च के लिए मुकदमा दायर किया तो अपने माँ की सलाह पर उसने उसके खिलाफ बदचलनी का आरोप लगाया। अय्यर का अतीत उसके मन में घूमने लगता है। क्या पति-पत्नी के अलग होने का अभिशाप उनके परिवार में अभी जारी है? अम्बी की मुलाकात एक बंगाली ईसाई लड़की स्वीटी से हुई और दोनों की शादी हो गई। हालांकि अय्यर ने ईसाई लड़की को स्वीकार करने के इंकार कर दिया लेकिन स्वीटी अम्बी के माता-पिता से मिलने की इच्छुक थी। अम्बी अपने माँ-बाप से सम्बन्ध तोड़ने को तैयार नहीं हुआ, जिससे उनमें अनबन रहने लगी और स्वीटी ने उसे तलाक दे देने की धमकी दी। अम्बी का अतीत वापस लौटता है। जब अम्बी अपनी सौतेली माँ को बुलाने की बात करता है तो उसकी मौजूदा माँ गुस्सा होने लगती है। अम्बी को स्वीटी और अपनी इस माँ के दृष्टिकोण में कोई अन्तर नज़र नहीं आता। अन्त में अम्बी का मित्र मूर्ति उसकी समस्यायें हल कर देता है।

MARUPAKKAM

Tamil/colour/85 mts.

Producer: NFDC-Doordarshan **Director/Screenplay—Writer:** K.S. Sethu Madhavan **Leading Actor:** Siva Kumar **Leading Actress:** Jaya Bharathi **Supporting Actor:** Sekhar **Cinematographer:** D. Vasanth Kumar **Audiographer:** A. Swaminathan **Editor:** G. Venkataraman **Art Director:** B. Chalam **Music Director:** L. Vaidyanathan **Costume Designer:** Kuppuraj

The story is about a father and a son in whose life history repeats itself. Ambi, arrives in Kumbakonam from Delhi to see his ailing father, Vembu Iyer, an uncompromising man known for his scholarship and dogmatism. Ambi is shocked to see him lying silent. When Ambi got married to a Christian girl Iyer told him off, and fell silent when he came to know about their separation. A puzzled Ambi overhears his father uttering the name of his step-mother who had to leave him as her love for music posed problems for Iyer's mother upon whose advise he accused her of "infidelity" when she filed a suit against him for maintainenance. Iyer's past unfolds itself in his mind. Is the curse of "separation" running in the family? Ambi met "Sweetie", a Bengali Christian under romantic conditions, and married her. Though his father refused to accept her she insisted on seeing his parents. Ambi refused to cut off relations with his parents and this led to constant fights with Sweetie threatening that she would not give him divorce. Ambi's past comes back. When Ambi suggests to invite his step-mother the present mother becomes furious. Ambi finds no difference between her attitude and Sweetie's. Finally, his friend Murthy, a self styled "prophet" finds answers to Ambi's problems and set things right.

माटी मनुशुलु

तेलुगु/रंगीन/87 मिनट

निर्माण: के. मुखर्जी, वेद कुमार **निर्देशन/पटकथा/संगीत निर्देशन:** बी. नरसिंग राव **मुख्य अभिनेता:** मोइन अली बेग **मुख्य अभिनेत्री:** अर्चना **सह-अभिनेता:** भानु प्रकाश **सह-अभिनेत्री:** नीना गुप्ता **बाल कलाकार:** बसन्त कुमार **छायांकन:** ए.के. बीर **ध्वनि आलेखन:** मनोज सिक्का, एम.आर. राजन **सम्पादन:** डी. राजगोपाल **कला निर्देशन:** टी. वैकुंठम **वेशभूषा:** पी. सुदर्शन

नरसैया और पोचम्मा तेलंगाना के एक सूखा-ग्रस्त गांव से काम की तलाश में शहर आ जाते हैं। वे दोनों एक व्यापारिक इमारत के निर्माण के काम में मजदूरी करने लगते हैं। शहर में पोचम्मा का दिल नहीं लगता और वह गांव जाना चाहती है, लेकिन नरसैया शहरी चमक-दमक का शिकार हो जाता है और उसे शराब की लत लग जाती है। उसकी आमदनी का अधिकतर हिस्सा शराब पर खर्च हो जाता है। पोचम्मा की इच्छा है कि उसकी अपनी झोपड़ी हो। उनके साथ काम करने वाला एक आदमी उसे कुछ सौ रुपये में झोंपड़ी दिलाने का झांसा देता है। वह नरसैया को उधार झोंपड़ी के लिए रुपये देने के लिए राजी कर लेती है, लेकिन उनकी झोंपड़ी कभी नहीं बनती। इस बीच नरसैया एक महिला मजदूर के मोह में फंस जाता है और दोनों कहीं भाग जाते हैं। पोचम्मा पर मुसीबतों का पहाड़ गिर पड़ता है। एक ओर मुख्य मिस्त्री पोचम्मा पर डोरे डालने की कोशिश करता है और दूसरी ओर महाजन उसे परेशान करता है। उसके साथ बलात्कार भी होता है, जिससे वह सारी हिम्मत खो बैठती है। पोचम्मा शहर की सड़कों पर बेसहारा मर जाती है और उसका बच्चा अनाथ होकर गलियों में भटकने के लिए रह जाता है।

MATTI MANUSHULU

Telugu/colour/87 mts.

Producer: K. Mukherjee & Veda Kumar **Director/Screenplay—Writer:** B. Narsing Rao **Leading Actor:** Moin Ali Baig **Leading Actress:** Archana **Supporting Actor:** Bhanu Prakash **Supporting Actress** Neena Gupta **Cinematographer:** A.K. Bir **Audiographer:** Manoj Sikka & M.R. Rajan **Editor:** D. Raj Gopal **Art Director:** T. Vikuntam **Costume Designer:** P. Sudarshan

Narasaiah and Pochamma migrate to the city from a drought stricken Telengana village to keep hunger at bay. Like many migrants to the city, they end up as construction labourers in a commercial complex just coming up. For Pochamma, the city is a riddle. She longs to be back to village. Narasiah, however, succumbs to the charm and gets addicted to toddy and most of his wages are now spent on liquor. Pochamma dreams of her own 'hut' as she lives within the complex campus with only make shift jute hangings to give the "family" privacy. A fellow lures her with the promise of her "dream hut" but for a few hundred rupees. She coaxes Narasiah to part with the money they had borrowed. The hut never materialises. Meanwhile, Narasaiah falls for another woman labourer and elopes with her. Pochamma is left to struggle and the cruelty of the city takes over. The chief mason's advances on the one hand, the money-lender's harassement on the other, and the sexual assault of Munaiah shatters her. Pochamma dies a destitute on the streets of the city, leaving her child an orphan.

मुथिना हारा

कन्नड़/रंगीन/140 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा: एस.वी. राजेन्द्र सिंह (बाबू) **मुख्य अभिनेता:** विष्णुवर्धन **मुख्य अभिनेत्री:** सुहासिनी **सह-अभिनेता:** के.एस. अश्वत्थ **छायांकन:** डी.वी. राजाराम **ध्वनि आलेखन:** के.एम. बोस **सम्पादन:** गौतम राजू **कला निर्देशन:** नज़ीर **वेशभूषा:** वाणी गणपति, जय राम **संगीत निर्देशन:** हंसलेखा **पार्श्व गायक:** बाल मुरली कृष्ण, एस.पी. बालासुब्रह्मण्यम् **पार्श्व गायिका:** छाया

इस फिल्म में बहादुर सिपाही अचप्पा की कहानी चित्रित की गई है, जिसने दूसरे महायुद्ध में बर्मा सीमा पर हुई लड़ाई से लेकर 1962 के चीनी आक्रमण तक चार लड़ाईयों में हिस्सा लिया है। वह अपना जीवन देश की रक्षा के लिए कुर्बान कर देता है और उसकी पत्नी छोटे से सुखी विवाहित जीवन के बाद युद्ध के दुखों को झेलती रहती है। उसकी पत्नी, अन्नपूर्णा ने सेना में कुछ समय के लिए नर्स के रूप में भी काम किया है और घायलों की सेवा के लिए सीमा पर भी गई। जब वह अपने पति से मिलने जा रही होती है तो बम विस्फोट में उसका बेटा मारा जाता है। अचप्पा भारतीय सेना की वीरतापूर्ण परम्परा के अनुसार विपरीत परिस्थितियों में भी बहादुरी से लड़ता है। वह अपने साथी जवानों को बचाने की कोशिश में शहीद हो जाता है। गहरी मानसिक पीड़ा से गुजरती हुई अन्नपूर्णा अन्त में युद्ध न करने और शान्ति से रहने का आह्वान करती है।

MUTHINA HAARA

Kannada/colour/140 mts.

Producer/Director/Screenplay—Writer: S.V. Rajendra Singh **Leading Actor:** Vishnuvardhan **Leading Actress:** Suhasini **Supporting Actor:** K.S. Aswath **Cinematographer:** D.V. Rajaram **Audiographer:** K.M. Bose **Editor:** Gautam Raju **Art Director:** Nazir **Lyricist/Music Director:** Hamsalekha **Male Playback Singer:** Balamurali Krishna **Female Playback Singer:** Chhaya **Costume Designer:** Vani Ganapathi & Jayaram

A poignant story of a brave soldier Achappa, who fights four wars starting with the action in Burma front world war II to the Chinese action in 1962. He lays down his life for the sake of the country and his wife Annapurna goes through the traumatic experience of the war after a brief period of happy married life. She has also put in a stint of service in the army as a nurse daring to go the front to nurse the wounded. She loses her only son in the bombing when she is on her way to join her husband. Achappa fights bravely upholding the tradition of the Indian army under the most adverse conditions. He is killed by treachery of the enemy when he succeeds in saving his fellow soldiers. Annapurna is reduced to a mental wreck. Through a series of incidents and the ultimate tragedy and trauma of the heroine the film pleads against war and begs for peace.

ओरु वीडु इरु वासल

तमिल/रंगीन/165 मिनट

निर्माण: कवितालया प्रॉडक्शन लि. **निर्देशन/पटकथा:** बालाचन्दर **मुख्य अभिनेता:** गणेश, कुमरेश **मुख्य अभिनेत्री:** वैष्णवी **सह-अभिनेता:** विवेक **सह-अभिनेत्री:** सूर्या यामिनी **छायांकन:** आर. रघुनाथ रेड्डी **ध्वनि आलेखन:** श्रीधर **सम्पादन:** गणेश कुमार **कला निर्देशन:** मोहनम् **वेशभूषा:** एस.के. बालन **संगीत निर्देशन:** वी.एस. नरसिम्हन

यह फिल्म दो भागों में है। **पहला भाग:** एक शराबी बाप की बेटी शेनबगम दूध बेचकर गुजारा करती है। वह सुकुमार नाम के क्वालिटी कंट्रोल इंजीनियर को भी दूध बेचती है। वह सुकुमार के घर का काम करने आती है तो वह उसे अपनी वासना का शिकार बनाता है और शेनबगम गर्भवती हो जाती है। सुकुमार की शादी तय हो जाने पर वह उसे चले जाने को कहता है। सुकुमार की पत्नी यमुना अपने पति के रवैये से असंतुष्ट रहती है और एक दिन चली जाती है। सुकुमार फिर से शेनबगम को घर ले आता है, जो नौकरों की तरह काम करती हुई उसकी कामेच्छा की पूर्ति करती है। अचानक यमुना फिर लौट आती है तो शेनबगम जाने लगती है। लेकिन यमुना गर्भवती है, इसलिए वह उसे रोक लेती है। बाद में शेनबगम उसे सारी बात बता देती है और खुदकशी कर लेती है। यमुना अपना गर्भपात कराकर शेनबगम के बच्चे को अपना लेती है और सुकुमार को छोड़ देती है।

दूसरा भाग:
विनोधा मद्रास के फिल्म जगत में जूनियर आर्टिस्ट है। वह एक फिल्म की शूटिंग के दौरान एक वकील की भूमिका करती है, जो एक महिला पर दया की अपील करती है। इसके बाद की घटनाएं फ़्लैशबैक में दिखाई गई हैं। जवाहर नामक एक पत्रकार से घटनाओं का पर्दाफाश करने को कहा जाता है तो वह विनोधा से मिलता है। वह विनोधा से शादी का प्रस्ताव करता है जो उसके लिए एक नया 'सपना' है। किन्तु विवाह के बाद जवाहर का असली रूप सामने आता है और वह उस पर शक करने लगता है। तलाक के बाद विनोधा बच्चे को लेकर चली जाती है, लेकिन बाद में पत्रकार बच्चे को प्राप्त कर लेता है। विनोधा की हिम्मत और बढ़ जाती है और वह वकील बन जाती है। वह एक अनाथ बच्चे को गोद लेकर सम्मानित जीवन बिताने लगती है।

ORU VEEDU IRU VAASAL

Tamil/colour/165 mts.

Producer: Kavithalayaa Productions **Director/Screenplay–Writer:** K. Balachander **Leading Actors:** Ganesh & Kumaresh **Leading actress:** Vaishnavi **Supporting Actors:** Vivek, Surya **Cinematographer:** R. Raghunatha Reddy **Audiographer:** Sridhar **Editor:** Ganesh Kumar **Art Director:** Mohanam **Music Director:** V.S. Narasimhan **Costume Designer:** S.K. Balan

A Film in Two Episodes. 1. Shenbagam, daughter of an alcoholic, lives by selling milk and sells it to Sukumar, the new quality control engineer. When she comes to do household work Sukumar seduces her and she becomes pregnant. But when his marraige to his niece Yamuna is fixed he asks her to leave. Yamuna arrives. Soon the incompatibility is evident because of Sukumar's attitude and carnal desires. One day she quits. Sukumar now wooes back Shenbagam who works like a slave and meets his carnal demands. She has to go again when one day Yamuna storms back but she asks her to stay as she

announces her pregnancy. When she comes upon tell-tale evidence she asks Shenbagam who confesses and later commits suicide. Yamuna aborts Sukumar's child, adopts Shenbagam's and bombards Sukumar who is out. 2. Vinodha belongs to erstwhile "extras" and now junior artistes of Madras's tinsel world. She plays a lawyer advocating for the mercy of a woman in a film shooting and subsequent events come in a flashback. Jawahar, a journalist, is asked to do a expose and he meets Vinodha. Later, when he proposes, it comes as a different kind of "dream" for her. Marraige, however, reveals the real Jawahar, who now suspects and shuns her. The divorce comes and she leaves with the child but he finally has his custody. Problems now make her courageous. She becomes a lawyer, adopts a destitute child and leads a respectable life.

पेरुमथच्चन

मलयालम/रंगीन/125 मिनट

निर्माण:जी. जय कुमार **निर्देशन**: अजयन **पटकथा**: एम.टी. वासुदेवन नायर **मुख्य अभिनेता**: तिलकन **मुख्य अभिनेत्री**: मोनीषा **सह-अभिनेता**: प्रशान्त, नेडुमुडि वेणु **सह-अभिनेत्री**: विनय प्रसाद **छायांकन**: संतोष सिवन **ध्वनि आलेखन**: सम्पत **सम्पादन**: एम.एस. मणि **कला निर्देशन**: पी. कृष्णमूर्ति **संगीत निर्देशन**: जॉनसन

पेरुमथच्चन केरल का एक जाना-माना परम्परागत पात्र है, जिसका अर्थ है महान शिल्पकार। प्रचलित मान्यता के अनुसार अनेक शानदार और अद्भुत मूर्तियाँ उसी की बनाई हुई हैं। वह एक विद्वान ब्राह्मण का बेटा था जिसे माँ-बाप ने छोड़ दिया था। संयोगवश उसे 'पराया' वर्ग की एक महिला से शादी करनी पड़ी। बताया जाता है कि पेरुमथच्चन का इकलौता बेटा बहुत बड़ा शिल्पकार और वास्तुकार बना, जिससे बाप की प्रतिष्ठा गिरने लगी। कथा के अनुसार ईर्ष्यावश पेरुमथच्चन ने अपने बेटे की मौत का प्रबन्ध कर दिया। किन्तु इस फिल्म में यह बताया गया है कि पेरुमथच्चन ने केवल व्यावसायिक ईर्ष्या से प्रेरित होकर अपने बेटे को नहीं मारा अपितु उसका बेटा जाति आधारित समाज के कड़े नियमों को चुनौती देने लगा था, जिसे पेरुमथच्चन पवित्र मानता था।

PERUMTHACHAN

Malayalam/colour/125 mts.

Producer: G. Jaikumar **Director:** Ajayan **Screenplay—Writer:** M.T. Vasudevan Nair **Leading Actor:** Thilakan **Leading Actress:** Monisha **Supporting Actor:** Prasanth, Nedumudi Venu **Supporting Actress:** Vinaya Prasad **Cinematographer:** Santosh Sivan **Audiogrpher:** Sampath **Editor:** M. S. Money **Art Director:** P. Krishnamoorthy **Music Director:** Johnson

Perumthachan which literally means The Great Carpenter, was a legendary character of Kerala. Many illustrous and unique idols are said to be made by him. He was the abandoned child of a scholarly brahmin who had to marry a Paraya woman by accident. According to legend, Perumthachan's only son became an excellent Architect and Sculptor and the old man's reputation began to fade in comparison. Out of jealousy Perumthachan manipulated the death of his son by dropping a chisel on his neck in a work site, says the legend. The film reveals that the motive was not professional jealousy alone. The son was a threat to the rigid laws of the castiest society, which the father considered sacred.

वस्तुहारा

मलयालम/रंगीन/102 मिनट

निर्माण: रवीन्द्रनाथ **निर्देशन/पटकथा:** जी अरविन्दन **मुख्य अभिनेता:** मोहन लाल **मुख्य अभिनेत्री:** नीलांजना मित्रा **सह-अभिनेता:** विक्रमन नायर **सह-अभिनेत्री:** नीना गुप्ता **बाल कलाकार:** विनीत **छायांकन:** सन्नी जोसेफ **ध्वनि आलेखन:** कृष्णन उन्नी **सम्पादन:** के.आर. बोस **कला निर्देशन:** पद्म कुमार **वेशभूषा:** लीला अरविन्दन **संगीत निर्देशन:** सलील चौधरी **पार्श्व गायक:** अभिजीत बोस

यह फिल्म उन उपेक्षित लोगों की कहानी है जो अपनी भूमि सम्पत्ति और यहाँ तक कि पहचान से भी वंचित कर दिये गये हैं। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में पुनर्वास मंत्रालय का अधिकारी वेणु ड्यूटी पर कलकत्ता आया हुआ है। शरणार्थियों का चयन करते हुए उसकी मुलाकात उसके स्वर्गीय चाचा की बंगाली पत्नी आरती पणिक्कर से होती है, जिसे उसके घरवालों ने छोड़ दिया है। एक तरह से वह भी उपेक्षित औरत है जो कलकत्ता में शरणार्थी के रूप में रह रही है। इस महिला व उसके बच्चों से मिलने के बाद, जिसे वेणु ने पहले कभी नहीं देखा था, उसे वास्तव में पता चलता है कि अपनी पहचान खोने और मानसिक तथा भावात्मक रूप से जड़विहीन बनने की पीड़ा क्या होती है। वेणु को यह भी महसूस होता है कि यह पीड़ा भौतिक वस्तुओं से वंचित होने की पीड़ा से कितनी अधिक गहरी है। फिल्म में लोगों के बिना किसी कसूर के विस्थापित होने तथा अपनों से बिछुड़ने की पीड़ा को चित्रित किया गया है और यह चित्रण 1947 और 1971 में पूर्व बंगाल से पश्चिम बंगाल में बड़ी संख्या में शरणार्थियों के आगमन पर आधारित है।

VASTHUHARA

Malayalam/colour/102 mts.

Producer: Ravindranath **Director/ Screenplay Writer:** G. Aravindan. **Leading Actor:** Mohan Lal **Leading Actress:** Nilanjona Mitra **Supporting Actor:** Vikraman Nair **Supporting Actress:** Neena Gupta **Cinematographer:** Sunny Joseph **Audiographer:** Krishnan Unni **Editor:** K. R. Bose **Art Director:** Padma Kumar **Music Director:** Salil Chaudhary **Male Playback Singer:** Abhijit Bose **Costume Designer:** Leela Aravindan

A story of those dispossessed of their land, wealth and identity. While selecting refugees to be taken to Andaman Islands from Calcutta, Venu, a Ministry official, meets Arati Panicker, his late uncle's Bengali wife now abandoned by his family. The contact makes Venu acutely aware of people being uprooted and forced to seek refuge in alien lands. The Prologue concerns the postpartition exodus from East to West Bengal with the Epilogue showing the exodus from Bangladesh to West Bengal.

कथासार: Synopses:
ग़ैर-कथाचित्र Non-Feature Films

आधी हकीकत आधा फसाना

हिन्दी/90 मिनट

निर्माण: राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि. **निर्देशन:** दिलीप घोष **पटकथा:** जिल मिस्किटा **छायांकन:** के.यू. मोहनन् **ध्वनि आलेखन:** विजय भोपे **सम्पादन:** शिवानी गांगुली

इस फिल्म में तीन पीढ़ियों के कलाकारों के साथ भेंटवार्ताओं के माध्यम से बाल कलाकारों की दुनिया की भावनात्मक यात्रा की गई है। जिनसे यह बातचीत की गई है, उनमें बेबी नाज़, बेबी तबस्सुम, रोमी, हनी ईरानी, डेजी ईरानी, राजू, अलंकार, सत्यजीत और महमूद (जूनियर) शामिल हैं। ये कलाकार पिछले दस वर्षों से बचपन की देहरी को लांघ कर आगे बढ़े हैं, लेकिन अभी तक फिल्म जगत में प्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर पाये हैं। वरिष्ठ कलाकारों ने अपने खोये हुए बचपन, बीच में छूट गई शिक्षा, माँ-बाप के साथ उनके शोषणजनित सम्बन्धों तथा नई आकांक्षाओं पर भी पानी फिरने की पीड़ा को व्यक्त किया है।

AADHI HAQEEQAT AADHA FASANA

Hindi/90 minutes

Producer: National Film Development Corpn. Ltd. **Director:** Dilip Ghosh **Screenplay-writer:** Jill Misquita **Cinematographer:** K.U. Mohanan **Audiographer:** Vijay Bhope **Editor:** Shibani Ganguly.

An emotional journey into the world of child artistes based on interviews with three generations- Baby Naaz, Baby Tabassum, Master Romi, Honey & Daisy Irani, Master Raju, Alankar, Satyajit, Mehmood jr. the second generation outgrew their childhood in the last decade and a half and are still awaiting to make a comeback as adults. The senior artistes speak of their lost childhood, ruined education and exploitative relationships with parents with the newer aspirants succumbing to the same pitfalls.

आमुख

हिन्दी/21 मिनट

निर्माण: निदेशक, भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान **निर्देशन:** राजकुमार **मुख्य अभिनेता:** समीर **मुख्य अभिनेत्री:** असमन **छायांकन:** प्रशान्तनु, नारायण, मृणाल, रथ **ध्वनि आलेखन:** राम टेके, चन्डीदास, मिश्र, मधु **सम्पादन:** रीना सेन **संगीत निर्देशन:** चन्द्रकान्त श्रीदेशमुख

इस फिल्म में यह दिखाया गया है कि जीवन कठोर नियमों और सिद्धान्तों, यहाँ तक कि सत्य बोलने के आदर्श से भी अधिक महत्वपूर्ण है। कभी-कभी यह नियम ऐसी स्थिति में पहुँच जाते हैं कि उनका भावनाओं अथवा जीवन से ही संघर्ष होने लगता है।

AAMUKH

Hindi/21 minutes

Producer/Director: Film & TV Institute of India **Director:** Raj Kumar **Leading Actor:** Sameer **Leading Actress:** Asman **Cinematographer:** Prashantanu, Narayan Mrinal, Rath **Audiographer:** Ram Teke, Chandidas, Mishra, Madhu **Editor:** Reena Sen **Music Director:** Chandrakant Sirdeshmukh

Life is more important than any hard and fast rules even telling truth and these reach a state of affairs where they clash with emotions or life as such.

बाबा

अंग्रेजी/42 मिनट

निर्माण: मैसर्स मीडियार्ट फिल्म्स प्रा. लि. **निर्देशन/छायांकन:** राजीव मेहरोत्रा **पटकथा:** इंदिरा राणा, राजीव मेहरोत्रा **ध्वनि आलेखन:** पी.डी. वालसन **सम्पादन:** समीरा जैन

यह फिल्म टैम्पलटन पुरस्कार और मैगा साई साई पुरस्कार से सम्मानित जाने-माने समाजसेवक बाबा आमटे के जीवन पर आधारित है। इस में कुष्ठ रोगियों के उपचार के लिए बनाये गये संस्थान आनन्दवन के काम-काज को चित्रित किया गया है। फिल्म में बाबा आमटे की कुछ अन्य उपलब्धियों की जानकारी भी दी गई है, जिनमें भारत जोड़ो आन्दोलन तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रयास शामिल हैं। जीवनी से भी बढ़ कर यह फिल्म उन लोगों की कहानी है, जिन्होंने विकलांगता से ऊपर उठकर अपने जीवन को समाज की मुख्य धारा से जोड़ लिया है।

BABA

English/42 minutes

Producer: Mediart Films Pvt. Ltd. **Director:** Rajiv Mehrotra **Screenplay-writer:** Indira Rana & Rajiv Mehrotra **Cinematographer:** Rajiv Mehrotra **Audiographer:** P.D. Valson **Editor:** Sameera Jain.

A portrait of Baba Amte honoured with Templeton Award (1990) and earlier, Magsaysay award. The film takes a look at his work in Anandavan-a community founded to look after the victims of leprosy but today also reaches out to other handicapped and shows how Baba empowered them to reject the labels. It also looks at some of his other initiatives, the knit India campaign and his commitment to environment. But it is more than a portrait as it tells the story of those who have transcended their handicaps.

बायोटैक्नोलाजी: सम पोसीबिल्टीज

अंग्रेजी/20 मिनट

निर्माण: गुलबहार सिंह (फिल्म प्रभाग के लिए) **निर्देशन/पटकथा:** निशीथ बनर्जी **छायांकन:** दुरैस्वामी **ध्वनि आलेखन:** अनूप मुखर्जी **सम्पादन:** अतीश नन्दी

प्रकृति ने सभी प्राणियों में कोशिका (सेल) की रचना की है, जो जीवविज्ञान के सहज नियम के अनुसार काम करती है। आधुनिक जीवविज्ञान अथवा जैव टेक्नोलाजी का इतिहास केवल 30-40 वर्ष पुराना है। इस विज्ञान का आरम्भ तब हुआ, जब वाट्सन और क्रिक ने आनुवांशिकी सामग्री के आधारभूत रसायन डी.एन.ए. की खोज की।

BIOTECHNOLOGY: SOME POSSIBILITIES

English/20 minutes

Producer: Gul Bahar Singh (for Film Division) **Director-Screenplay-Writer:** Nishith Banerjee **Cinematographer:** Doreswamy **Audiographer:** Anup Mukherjee **Editor:** Atis Nandy

For all living organisms, simple or complex, nature has created a building block-the cell, governed by the natural law of biology. Modern Biology or Biotechnology actually goes back to only 30/40 years the time when the structure of the genetic material the basic chemical DNA was discovered by Watson and Grick.

कैक्टस एंड रोजिस

अंग्रेजी/53 मिनट

निर्माण/निर्देशन: सिद्धार्थ काक **पटकथा:** सतीश आलेकर **छायांकन:** पंकज प्रकाशन **ध्वनि आलेखन:** अरुण शर्मा **सम्पादन:** संजीव सूद, सुधांशु चक्रवर्ती **कला निर्देशन:** लुई बैंक्स

इस फिल्म में औद्योगिक युग की तीव्र गति के संदर्भ में एक अनोखे व्यक्ति और उसके परिवार का चित्रण किया गया है, जिन्होंने भारत में स्वदेशी आधार पर कृषि इंजीनियरी के क्षेत्र में क्रान्ति का सूत्रपात किया और उसे आगे बढ़ाया।

CACTUS AND ROSES

English/53 minutes

Producer/Director: Siddarth Kak **Screenplay-writer:** Satish Alekar **Cinematographer:** Pankaj Prakash **Audiographer:** Arun Sharma **Editors:** Sanjiv Sood & Sudanshu Chakraborty **Art Director:** Jaywant Bhende **Music Director:** Louis Banks

A picture is built of a pioneering industrial age and a unique man and his family that have guided the genesis and growth of the indigenous agricultural engineering revolution in India.

डक्स आउट ऑफ वाटर

अंग्रेजी/17 मिनट

निर्माण: डी. गौतमन (फिल्म प्रभाग के लिए) **निर्देशन:** राजगोपाल राव **छायांकन:** राम खापेकर, राजगोपाल राव **ध्वनि आलेखन:** वी. यल्लप्पा **सम्पादन:** फूलचंद

इस वृत्तचित्र में बत्तख की एक नई नस्ल की जानकारी दी गई है, जिसे तालाब या झील की बजाए किसी सामान्य स्थान पर पाला जा सकता है। इस नस्ल की एक बत्तख एक साल में 300 तक अंडे दे सकती है। खाकी कैम्पबैल नाम की इस बत्तख के लिए केवल इतना गहरा पानी आवश्यक है जिसमें पक्षी अपना सिर डाल सके।

DUCKS OUT OF WATER

English/17 minutes

Producer: D. Gautaman **Director:** Raj Gopal Rao **Cinematographer:** Ram Khapekar **Audiographer:** V. Yallappa **Editor:** Phool Chand

Producer: D. Gautaman (for Films Division) **Director:** Raj Gopal Rao **Cinematographer:** Ram Khapekar **Audiographer:** V. Yallappa **Editor:** Phool Chand

A new breed of duck which can be reared indoor and is capable of yielding more than 300 eggs per bird per annum is the Khaki Campbell. They don't need any lake or pond to swim about and require only that much water in a drinker which is deep enough just to dip their heads.

फिगर्स ऑफ थाट

अंग्रेजी/33 मिनट

निर्माण/निर्देशन: अरुण खोपकर **छायांकन:** पीयूष शाह **ध्वनि आलेखन:** दिलीप सुब्रह्मण्यम, रजत ढोलकिया **सम्पादन:** राजेश परमार

इस फिल्म में तीन कलाकारों की कृतियों का परिचय दिया गया है। ये कलाकार हैं भूपेन खकर, नलिनी मलानी और विवयन सुन्दरम। इन रचनाओं में समुद्र, रात के समय का दृश्य और कांच के भित्ति-चित्रों के सुन्दर मनभावन दृश्य उपलब्ध हैं।

गोल्डन अर्थ

अंग्रेजी/21 मिनट

निर्माण: मैसर्स बी.ए.आई.एफ. डेवलपमेंट रिसर्च फाऊंडेशन **निर्देशन/पटकथा:** विश्राम रेवंकर **छायांकन:** विजय देशमुख, भरत नेरकर **ध्वनि आलेखन:** राज कमल **सम्पादन:** आनन्द वरनेकर **संगीत निर्देशन:** एस. फनसालकर

इस फिल्म में भूमि कटाव के दुष्परिणामों और इसके कारणों पर प्रकाश डाला गया है। इस में मिट्टी और जल के संरक्षण के उपायों तथा जल-विभाजकों के प्रबन्ध के बारे में भी जानकारी दी गई है।

FIGURES OF THOUGHT

English/33 minutes

Producer/Director: Arun Khopkar **Cinematographer:** Piyush Shah **Editor:** Rajesh Parmar **Audiographers;** Dileep Subramaniam, Rajat Dholakia

Profiles the works of three painters, appearing one after another. The shots are intercut with shots of the sea, or city by night and shots of glass mural as Bhupen Khakar, Nalini Malini and Vivian Sundaram's paintings come in view.

GOLDEN EARTH

English/21 minutes

Producer: Baif Development Research Foundation **Director/ Screenplay writer:** Vishram Revankar **Cinematographer:** Vijay Deshmukh **Audiographer:** Rajkamal Kala Mandir **Editor:** Anand Vernekar **Music Director:** P.P. Vaidyanathan

The film captures the devastating effects of soil erosion, factors leading to it and provides information on methods to conserve soil and water, and the concept of watershed management.

ग्रेवन इमेज

अंग्रेजी/30 मिनट

निर्माण: सुमितेन्द्र नाथ टैगोर, श्यामाश्री टैगोर **निर्देशन:** अभिजीत चट्टोपाध्याय **छायांकन:** सौमेन्दु राय **सम्पादन:** अरुण दत्ता **संगीत निर्देशन:** ध्यानेन खान

इस फिल्म में जाने-माने मूर्तिकार चिन्तामणि कार के सक्रिय जीवन पर प्रकाश डाला गया है। उन्होंने उड़ीसा में मंदिर-मूर्तियाँ उत्कीर्ण करने वाले एक कलाकार से काम सीखना शुरु किया और बाद में अविनीन्द्रनाथ टैगौर के विद्यालय में मूर्ति-कला सीखने लगे। इसके पश्चात वे फ्रांस और लंदन गए। भारतीय परम्परा की उनकी जीवंतमूर्ति कला में उत्कीर्ण प्रतिमाओं का स्तर विद्यमान है।

GRAVEN IMAGE

English/30 minutes

Producer: Sumitendra Nath Tagore & Shyamasree Tagore **Director:** Abhijit Chattopadhyay **Cinematographer:** Soumendu Roy **Editor:** Arun Dutta **Music Director:** Dhynesh Khan

Traces the active career of the renowned sculptor Chintamoni Kar, who began as an apprentice to a hereditary temple carver of Orissa and later in Abinindranath Tagore's school and then in France and 12 years in London. Rooted in Indian tradition his terracotta sculptures have the quality of Graven images.

द इंडीजीनियस गेम्स ऑफ मणिपुर

अंग्रेजी/29 मिनट

निर्माण/निर्देशन: अरिबम श्याम शर्मा **छायांकन:** गिरीश पंडियार **सम्पादन:** उज्जल नन्दी

मणिपुर की सदियों पुरानी युद्ध परम्परा के फलस्वरूप वहाँ कई तरह के खेल विकसित हुए हैं। इनमें चेइबी (तलवारबाजी), मुकना, (कुश्ती), मुकना कांगजेत/खोंग कानजेत (गेंद उछालना), हियांग (नौका दौड़), यूबी लापकी (नारियल का खेल), कांग (इंडोर खेल), सगोल कांगजेई (घोड़े से छड़ी का खेल) आदि शामिल हैं। इस फिल्म में इन्हीं खेलों का परिचय दिया गया है।

INDIGENOUS GAMES OF MANIPUR

English/29 minutes

Producer-Director: Aribam Syam Sharma **Cinematographer:** Girish Pandhiar **Editor:** Ujjal Nandi

The Martial tradition of Manipur through the ages prompted the flowering of various forms of games and sports like Cheibi (swordmanship), Mukna (wrestling), Mukna Kangjet/Khong Kanjet (tossing the ball), Hiyang (boat race), Yubi Lapki (coconut snatch), Kang (indoor game), Sagol Kangjei (horse-stick play).

लोलाब

अंग्रेजी/56 मिनट

निर्माण: मैसर्स हिलमैन फिल्म प्रा. लि. **निर्देशन/पटकथा:** मोहि-उद्दीन मिर्ज़ा **छायांकन:** अशोक गुंजल, रविकान्त रेड्डी **ध्वनि आलेखन:** सुभाष अग्रवाल **सम्पादन:** ओम प्रकाश मकड़ **संगीत निर्देशन:** शिव कुमार शर्मा

इस फिल्म में मध्य एशिया की सीमा पर स्थित एक घाटी लोलाब में बसे लोगों के भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की खोज की गई है। ये लोग अलग-अलग जातीय मूल के हैं। इस घाटी में छाती, जोड़ों और कमर के दर्द के लिए अब भी जन-जातीय दवाओं का इस्तेमाल होता है और लोग पैसे से खरीदारी करने के बजाय वस्तुओं का आदान-प्रदान करते हैं। यहाँ का जीवन अत्यन्त कठोर है, और जिस समय सारी घाटी बर्फ से ढक जाती है तो लोग बहादुरी और प्रेम-कहानियां सुनाकर एक-दूसरे की हिम्मत बढ़ाते हैं।

LOLAAB

English/56 minutes

Producer: Hillman Film Pvt. Ltd. **Director:** Mohi-Ud-Din Mirza **Cinematographer:** Ashok Gunjal & Ravikant Reddy **Audiographer:** Subash Agarwal **Editor:** Om Prakash Makkar **Music Director:** Pandit Shiv Kumar Sharma

Explores the physical, social and cultural life of the people of different ethnic origins who have settled in Lolaab, the remote valley bordering on Central Asia known as the Kashmir Himalayas. Tribal medicine (for cure of chest, joints and back pain) is still practised and bartar system still prevails. Life is hard and in snowbound times stories of bravery and love are told.

मोहिनीयाट्टम

अंग्रेजी/20 मिनट

निर्माण/निर्देशन: सन्तोष सिवन **पटकथा:** भारती शिवाजी **छायांकन:** संतोष सिवन **ध्वनि आलेखन:** कृष्णन् उन्नी **सम्पादन:** राजशेखरन **कला निर्देशन:** सुनील सुरेन्द्रन **संगीत निर्देशन:** कवलम पदमनाभन **पार्श्व गायक:** वामनन नम्बूतिरी **पार्श्व गायिका:** सुशीला देवी

मोहिनीयाट्टम एक मन्दिर-नृत्य है जो देवी-देवताओं के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। मोहिनीयाट्टम के साथ-साथ एक अन्य मन्दिर नृत्य दस्सीयट्टम का पतन हो गया, जिन्हें स्वाति तिरुनाल और वल्लतोल नारायण मेनन ने पुनर्जीवित करके फिर से गरिमा प्रदान की। मोहिनीयाट्टम उन कुछ नृत्य शैलियों में से है जिनमें गति की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है और इसमें सुन्दरता की निर्विकार प्रस्तुति की जाती है।

MOHINIYATTAM

English/20 minutes

Producer-Director: Santosh Sivan **Screenplay-writer:** Bharathi Shivaji **Cinematographer:** Santosh Sivan **Audiographer:** Krishnan Unni **Editor:** Rajesekharan **Art Director:** Sunil Surendran **Music Director:** Kavalam Padmanabhan

Like Dassiyattom, Mohiniyattam too is a temple dance offered to the deity. Both the forms deteriorated subsequently but was restored to its glory by Swati Thirunal and later by Vallathol Narayana Menon. Mohiniyattam is one of few styles that expresses movement as perfection, a form without flaw aiming at beauty and not seduction.

मोहर

बंगला/50 मिनट

निर्माण: अमोल घोष, सुखेन्दु गुहा **निर्देशन/छायांकन/पटकथा:** गौतम घोष, अलकनन्दा दत्ता **ध्वनि आलेखन:** सुजीत सरकार **सम्पादन:** मलय बनर्जी

दृश्य और श्रव्य आनन्द की अनुभूति कराने वाली इस फिल्म में रवीन्द्र संगीत को श्रेष्ठता के साथ प्रस्तुत किया गया है। रवीन्द्र की स्मृति को ताजा करने का प्रशंसनीय कार्य गुरुदेव टैगोर द्वारा शिक्षित और दीक्षित गायिका कणिका बंधोपाध्याय ने सम्पन्न किया है।

MOHOR

Bengali/50 minutes

Producer: Amol Ghosh & Sukhendu Guha **Director & Cinematographer:** Gautam Ghosh **Screenplay-writers:** Gautam Ghosh & Alakananda Dutt **Audiographer:** Sujit Sarkar **Editor:** Malay Banerjee

An audio-visual delight but there is more of audio in that it transports the listner through the years in the flowering of Rabindrasangeet as rendered by the inimitable exponent Kanika Bandopadhyay who was groomed into the style by Gurudev Tagore himself.

नतुन आशा

असमिया/20 मिनट

निर्माण/सह-अभिनेत्री/वेशभूषाकार: ब्यूटी सभापंडित **निर्देशन/पटकथा:** अरूप बोरठाकुर **मुख्य अभिनेता:** अविनाश शर्मा **मुख्य अभिनेत्री:** हीरा नियोग **सह-अभिनेता:** रबीन नियोग **बाल कलाकार:** उप मनियोग **छायांकन:** निर्मल डेका (टीटू) **ध्वनि आलेखन:** हिरण्य भट्टाचार्य **सम्पादन:** ए. श्रीकर प्रसाद **कला निर्देशन:** नूरुद्दीन अहमद **संगीत निर्देशन:** गुण सिंह

इस फिल्म में गाय की संकर नस्लें तैयार करने की जानकारी देने के साथ-साथ यह बताया गया है कि अधिक मात्रा में और बढ़िया किस्म का दूध प्राप्त करने के लिए पशु फार्म बनाने की जरूरत है।

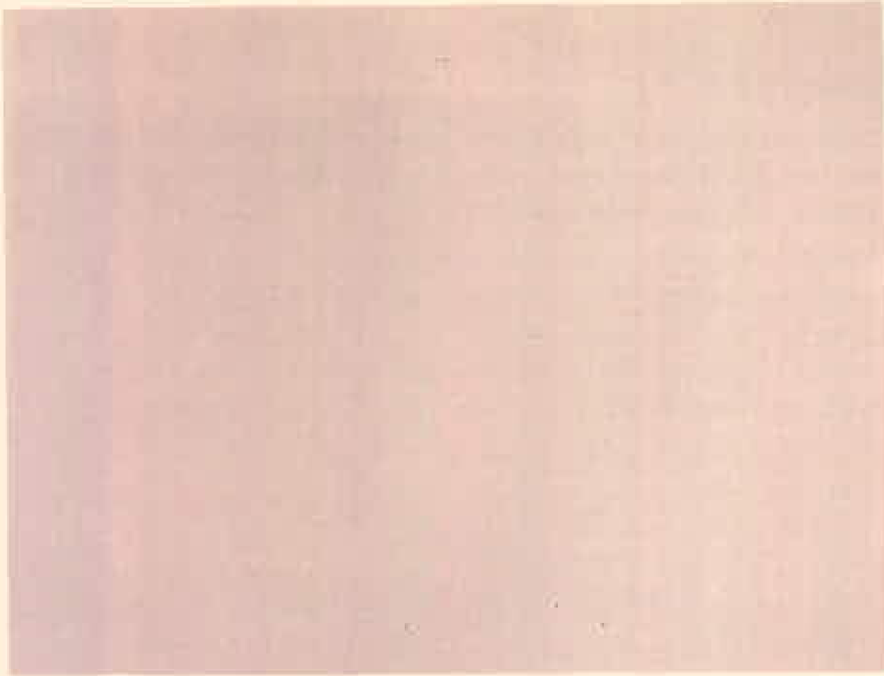

NATUN ASHA

Producer: Beauty Sabhapandit **Director/Screenplay writer:** Arup Borthakur **Leading Actor:** Hira Neog **Supporting Actor:** Robin Neog **Supporting Actress:** Beauty Sabhapandit **Cinematographer:** Nirmal Deka **Audiographer:** Hiranya Bhattacharya **Editor:** Srikar Prasad **Art Director:** Beauty Sabhapandit **Music Director:** Guna Singh

Attempts to instruct on the cross-breeding of cows and the need for cattle farm in order to ensure better quality and larger quantity of milk yield.

प्रतिक्रिया

देसिया/33 मिनट

निर्माण/निर्देशन: राहत यूसुफी **पटकथा:** संध्याराव **छायांकन:** शशिकान्त **ध्वनि आलेखन:** शैलेश कुमार **सम्पादन:** उमेश गुप्ता

उड़ीसा में एक जनजातीय गांव में एक वन-संरक्षक पौधशाला लगाने का प्रयास करता है। वहाँ के लोग यह चाहते हैं कि ऐसा करते हुए उनके पर्यावरण को अवश्य बचाया जाए। इस तरह दोनों के बीच परस्पर संबंध मज़बूत हो जाता है।

PRATIKRIYA

Desia/33 minutes

Producer-Director: Rahat Yusufi **Screenplay-Writer:** Sandhya Rao **Cinematographer:** Sashikant **Audiographer:** Sailesh Kumar **Editor:** Umesh Gupta

When a Forest Guard tries to set up a nursery in tribal village in Orissa the community resolves that their environment must be protected and nurtured as the inter-relationships crytallises.

सेफ ड्रिंकिंग वाटर फॉर आल

अंग्रेजी/21 मिनट

निर्माण: आर. कृष्ण मोहन (फिल्म प्रभाग के लिए) **निर्देशन:** महेश पी. सिन्हा **छायांकन:** महेश पी. सिन्हा, एन. स्टेनली, प्रदीप राव **ध्वनि आलेखन:** सुभाषीश चौधरी, वी.एस. भट्ट **सम्पादन:** प्रभाकर शिंदे **संगीत निर्देशन:** के. नारायणन **कार्टूनकार:** अरुण गोंगड़े, विष्णु सोनावाने

इस फिल्म में पीने के स्वच्छ पानी की बुनियादी समस्या का चित्रण करते हुए लोगों को स्वच्छ पेय जल उपलब्ध कराने के लिए किये जा रहे उपायों की जानकारी दी गई है।

SAFE DRINKING WATER FOR ALL

English/21 minutes

Producer: R. Krishna Mohan **Director:** Mahesh P. Sinha **Cinematographer:** Mahesh P. Sinha, N. Stanley & Pradeep B. Rao **Audiographer:** Subhasis Chowdhury & V.S. Bhatt **Editor:** Prabhakar Shinde **Music Director:** K. Narayanan

Highlights the fundamental problem of getting potable water and steps being taken to provide safe drinking water for all.

संबंध

हिन्दी/18 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा: नरेश सक्सैना **मुख्य अभिनेता:** विनय **मुख्य अभिनेत्री:** संध्या रस्तोगी **सह-अभिनेता:** अनिल रस्तोगी **बाल कलाकार:** शरीक **छायांकन:** के.के. पम्मी **सम्पादन:** वी. प्रभाकर **संगीत निर्देशन:** रघुनाथ सेठ **गीतकार:** नरेश सक्सैना

इस फिल्म में मनुष्य और प्रकृति के गहरे सम्बन्ध को चित्रित किया गया है। एक परिवार में नीम का पेड़ बड़ी उपयोगी भूमिका निभा रहा है। पेड़ को पहले तो बेच दिया जाता है, लेकिन जब उसकी कटाई शुरू होती है तो परिवार के लोग उसका विरोध करते हैं और ठेकेदार को वापिस जाना पड़ता है।

SAMBANDH

Hindi/18 minutes

Producer-Director-Screenplay-Writer: Naresh Saxena **Leading Actor:** Vinay **Leading Actress:** Sandhya Rastogi **Supporting Actor:** Anil Rastogi **Child artist:** Master Shariq **Cinematographer:** K.K. Pammi **Editor:** V Prabhakar **Music Director:** Raghunath Seth **Lyricist:** Naresh Saxena

A Neem Tree which plays a crucial role in the life of a family is first sold and as the felling begins the family resist and then the contractor retreat.

टैक्नीक ऑफ सीड प्रॉडक्शन इन व्हीट एंड पैडी

अंग्रेजी/17 मिनट

निर्माण: डी. गौतमन् (फिल्म प्रभाग के लिए) **निर्देशन:** राज गोपाल राव **छायांकन:** राज गोपाल राव, इफ़्तेख़ार अहमद **ध्वनि आलेखन:** के.ए. पदमानाभन् **सम्पादन:** राजिन्द्र कुमार

इस फिल्म में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार वैज्ञानिक तकनीकों का इस्तेमाल करके गेहूँ और धान के उन्नत बीज विकसित किये जा सकते हैं। इन दोनों अनाजों के बीजों का उत्पादन लगभग एक जैसा है।

TECHNIQUE OF SEED PRODUCTION IN WHEAT & PADDY

English/17 minutes

Producer: D. Gautaman (for Films Division)
Director: Raj Gopal Rao **Cinematographer:** Raj Gopal Rao & Iftahar Ahmed **Audiographer:** K.A. Padmanabhan **Editor:** Rajendra Kumar

The film shows how quality seeds can be produced in wheat and paddy by employing scientific techniques, the seed production in both being more or less similar.

उनां मित्रां दी याद प्यारी

हिन्दी/पंजाबी/अंग्रेजी/63 मिनट

निर्माण/निर्देशन/छायांकन/सम्पादन: आनन्द पटवर्धन **ध्वनि आलेखन:** परवेज मेरवानजी **गीतकार:** जयमाल सिंह पड्डा **पार्श्वगायिका:** नवनिर्मल

पंजाब में हिंसा और आतंक के मौजूदा वातावरण के बारे में बनाये गये इस वृत्तचित्र में अमर शहीद भगतसिंह को लोक नायक के रूप में चित्रित किया गया है। शान्ति और साम्प्रदायिक एकता का भगत सिंह का संदेश लेकर एक गांव से दूसरे गांव की ओर जाते हुए लोग आतंकवादियों के हमलों का शिकार बनते हैं। विडम्बना यह है कि राज्य की जनता भगत सिंह को देशभक्त के रूप में सम्मानित करती है जबकि खालिस्तान समर्थक तत्व उन्हें सिख उग्रवादी के रूप में पेश करते हैं और यह भूल जाते हैं कि भगत सिंह का सपना धार्मिक और प्रादेशिक बन्धनों से मुक्त था।

UNA MITRAN DI YAAD PIYAARI

Hindi/Punjabi/English/63 minutes

Producer-director-cinematographer-editor: Anand Patwardhan **Audiographer:** Parvez Merwanji **Lyricist:** Jaimal Singh Padda

A documentary about violence and terror in Punjab with Bhagat Singh superimposed as the folk hero. As people travel from village to village carrying Bhagat Singh's message of communal and class solidarity, have also become the target of terrorist attacks. The contradiction is that the state eulogizes him as a patriot while Khalistanis portray him as a Sikh militant forgetting that Bhagat Singh's dream went beyond religious and national boundaries.

उस्ताद अमज़द अली खान

हिन्दी/62 मिनट

निर्माण/निर्देशन: गुलज़ार (फिल्म प्रभाग के लिए) **छायांकन:** मनमोहन सिंह **ध्वनि आलेखन:** नरेन्द्र सिंह **सम्पादन:** सुभाष सहगल

संगीतकारों के जीवन को चित्रित करना बहुत कठिन काम है। किन्तु इस वृत्तचित्र में उस्ताद अमज़द अली खान की सृजनात्मक कला को अत्यन्त सुन्दरता के साथ उद्घाटित किया गया है। फिल्म में दर्शक उस्ताद अमज़द अली खान के आत्मा की गहराई को छू लेने वाले मधुर संगीत का आनन्द उठा सकेंगे।

USTAD AMJAD ALI KHAN

Hindi/62 minutes

Producer: Films Division **Director:** Gulzar **Cinematographer:** Man Mohan Singh **Editor:** Subhash Sehgal **Audiographer:** Narendra Singh

Profiling musical celebrities can be a tough job. But this documentary unfolds the creativity of Ustad Amjad Ali Khan aesthetically as one sees the musician in a variety of hues and hear his music soulfully coming out.

वास्तु माराबु

अंग्रेजी/54 मिनट

निर्माण: मिन बिम्बंगल **निर्देशन/सम्पादन**: बाला कैलाशम **पटकथा:** शशिकला अनन्त **छायांकन:** रामजी दामोदरन **ध्वनि आलेखन:** इलागों **संगीत निर्देशन:** मदुरई, जी.एस. मणि

इस फिल्म में परम्परागत "शिल्पी" के दर्शन को आधार बना कर भारतीय मूर्तिकारों की मानसिकता का चित्रण किया गया है। इसमें मूर्ति-कला के बाहरी रूप की बजाए उसके आन्तरिक पक्ष पर बल दिया गया है।

VAASTU MARABU

Producer: Min Bimbangal **Director:** Bala Kailasam **Screenplay writer:** Sashikala Ananth **Cinematographer:** Ramji Damodaran **Audiographer:** Ilango **Editor:** Bala Kailasam **Music Director:** Madurai G.S. Mani

An exploration into the psyche of the Indian sculptors underlining the philosophy of the traditional "shilpi" transcending the physical form of sculpturing.

व्हेअर नो जर्नीज एंड

अंग्रेजी/52 मिनट

निर्माण/निर्देशन/पटकथा/छायांकन: विक्टर बनर्जी **ध्वनि आलेखन:** कुलदीप सूद, अनूप देव, एम.एल. जुल्का **सम्पादन:** राज कुमार हिरानी **संगीत निर्देशन:** लुई बैंक्स

इस फिल्म में एक रेल अधिकारी की यात्रा और स्मृतियों के माध्यम से देश के विभिन्न भागों के इतिहास और संस्कृति के दर्शन कराये गये हैं। इसमें ब्रह्मपुत्र नदी, शिमला की मौज-मस्ती और महातीर्थ वाराणसी का चित्रण उपलब्ध है। समूची फिल्म में प्रेम और वीरता के भाव छाये रहते हैं।

WHERE NO JOURNEY'S END

English/52 minutes

Producer-director-screenplay-writer: Victor Banerjee **Cinematographer:** Victor Banerjee **Editor:** Rajkumar Hirani **Audiographer:** Kuldeep Sood & M.L. Julka **Music Director:** Louis Banks

A senior railway official reminisces and travels through the history and culture of a land he has loved, taking the viewer across the swirling Brahmaputra into Assam and North, plus joys of Shimla or the eerie Varanasi where people come to die; the spirit of love and valour are all engulfed in the documentary.